

केनरा बैंक की
द्विमासिक गृह पत्रिका
अप्रैल 2025 – मई 2025 | 300



श्रेयस
Shreyas

Canara Bank's
Bimonthly House Magazine
April 2025 - May 2025 | 300

श्रेयस प्रतियोगिता – विशेषांक **Shreyas Contest - Special Edition**



Internal



प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री सत्यनारायण राजु, इंदौर में आयोजित बोर्ड कार्यनीति बैठक में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बैठक का विषय था – “भविष्य की राह-जहां नवोन्मेष को मिले आकार”।

MD and CEO Sri. Satyanarayana Raju addressing the participants at the Board Strategy Meet held at Indore. The core theme of the meeting was “Future Unleashed- Where Innovation Meets Execution”.



दिनांक 09.05.2025 को लखनऊ अंचल कार्यालय के अधीन सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, ईएलबी, वीएलबी, एमसीबी, एआरएम, आरएएच और एमएसएमई सुलभ की समीक्षा-सह-कारोबार कार्यनीति बैठक में कार्यपालक निदेशक, श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया। चित्र में अंचल कार्यालय लखनऊ के प्रमुख श्री अजीत कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक एवं अन्य कार्यपालकगण दिखाई दे रहे हैं।

ED, Sri Hardeep Singh Ahluwalia at the Review-cum-Business Strategy Meet of Regional Offices, ELB, VLBs, MCBs, ARM, RAHs and MSME Sulabhs of Lucknow Circle, on 09.05.2025. Sri. Ajit Kumar Mishra, Circle Head and General Manager of Lucknow Circle and other Executives are seen in the picture.

Internal

श्रेयस - SHREYAS

SINCE 1974

केनरा बैंक की द्विमासिक गृह-पत्रिका
Bimonthly House Magazine of Canara Bank
अप्रैल 2025 - मई 2025 | 300 / April 2025 - May 2025 | 300

ADVISORY COMMITTEE

K Satyanarayana Raju
Hardeep Singh Ahluwalia
Amit Mittal
B P Jatav
Amitabh Chatterjee
Sreekala Sreekumar
Someshwara Rao Yamajala
Priyadarshini R
Manish Abhimaniyu Chaurasia

EDITOR
Priyadarshini R

सह संपादक (हिंदी)
मनीष अभिमन्यू चौरसिया

Edited & Published by
Priyadarshini R
Senior Manager
House Magazine & Library Section
HR Wing, HO, Bengaluru - 560 002.
Ph : 080-2223 3480
E-mail : hohml@canarabank.com
for and on behalf of Canara Bank

Design & Print by
Blustream Printing India (P). Ltd.
#1, 2nd Cross, CKC Gardens,
Lalbagh Road Cross, Bangalore - 560 008.
Ph : 080-2223 0070 / 2223 0006.

The views and opinions expressed herein are not necessarily those of the Bank. Reproduction of the matter in any manner with the permission of the editor only. For private circulation only. Not for Sale.



श्रेयस प्रेयस मनुष्यमेत स्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः//

(कठोपनिषद् II - 2)

Both good and pleasant approach us:

The wise on examining choose the good. (Kathopanishad II - 2)

CONTENTS

2	प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश / MD & CEO's Message
4	संपादकीय / Editorial
5	Farewell message of Executive
6	Ease Reforms - How Ease Reforms in banking can strengthen Financial Stability and Enhance Customer Experience - Sivasankarachi K
10	ईज सुधार - बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार कैसे वित्तीय स्थिरता को मजबूत करते हुए ग्राहक अनुभव को संवर्धित कर सकता है - शशि कान्त पाण्डेय
13	Ease Reforms : A Blueprint for Strengthening Financial Stability & Redefining Customer Experience. - Nishbat Mansoori
17	ईज सुधार - बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार कैसे वित्तीय स्थिति को मजबूत करते हुए ग्राहक अनुभव को संवर्धित कर सकता है - श्वेता श्रीवासला
20	Painting
21	Price of a Gift - D Bharathi
24	गह भटकती चिट्ठी का सफर - रोचक दीक्षित
27	The Power of Thoughtful Service in Professional Life - Mohit Dev Subedi
29	सकारात्मक सोच : जो होता है अच्छे के लिए ही होता है - आशीष रंजन
31	Sketching
32	A Little Devil : Journey to Remember - Shripad Sambumurthy
34	चाय - धीरज जुनेजा
36	The Best Ideas emerge at the Worst Time - Jerbin J R
38	चोबे जी पानी में गए छपाक! - गौरव जोशी
40	New product alert - Canara Aspire
41	Board Strategy Meet 2025-26, Indore
42	Annual Board Strategy meet, Indore
44	New product alert - Canara TruEdge
45	Circle News / अंचल समाचार
52	Little Acts, Big Impacts - Senthil Murugan K
53	छोटा कार्य बड़ा प्रभाव - कैसे छोटा कार्य ग्राहक सेवा में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है - मोनालिसा पंवार
54	"My vision of Viksit Bharat" - Soumya Sucharita
55	छोटा कार्य, बड़ा प्रभाव - कैसे छोटा कार्य ग्राहक सेवा में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है - अभिषेक गर्ग
56	Colour Photography
57	Family Folio
59	Fun corner
60	A Journey to the Mighty WHITE - Harsha K R
63	रामेश्वरम - अबदेश कुमार
66	Gen Z Literature
67	Kaleidoscope of Kuala Lumpur - Where City Lights Meet Cultural Heights - Safin Ahmed S
71	'केरी के महादेव' की रोमांचक यात्रा - पुष्कर पांडे
74	Cartoon
75	Sports Column
77	Health Corner
78	Wisdom capsule
79	Personal Responsibility and Professional Ethics - Kanchan Gupta
82	Recipe Corner - Mango Saffron Kheer
83	Homage
84	Book Review

प्रबंध निदेशक व
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
का संदेश



MD & CEO's Message

प्रिय केनराइट्स,

Dear Canarites,

मुझे आप सभी के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारे मार्च 2025 के वित्तीय आंकड़े केनरा बैंक परिवार के प्रत्येक सदस्य के समर्पण, कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प को दर्शाते हैं। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि हमारे एकल निवल लाभ में वर्षानुवर्ष 33.19% की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जो सराहनीय आंकड़ों तक पहुंच गई। यह संतोषजनक वृद्धि हमारी बड़ी हुई परिचालन दक्षता, सामरिक पहल और आप सभी के प्रयास को रेखांकित करती है।

It gives me immense pleasure to express my deepest gratitude to all of you. Our March 2025 financials reflect the dedication, hard work, and resilience of each and every member of the Canara Bank family. I am delighted to announce that our standalone net profit witnessed a significant surge of 33.19% year-on-year, reaching commendable figures. This substantial growth underscores our enhanced operational efficiency, strategic initiatives and the effort of each one of you.

बैंक का वैश्विक कारोबार मार्च 2025 तक 11.32% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 25,30,215 करोड़ रुपये हो गया, जिसमें वैश्विक जमा राशि 11.01% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 14,56,883 करोड़ रुपये और वैश्विक अग्रिम (सकल) 11.74% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 10,73,332 करोड़ रुपये हो गया है। बैंक की घरेलू जमा राशि मार्च 2025 तक 9.56% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ मार्च 2025 तक 13,31,137 करोड़ रुपये हो गई है। हमारा घरेलू अग्रिम (सकल) मार्च 2025 तक 11.06% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 10,08,671 करोड़ रुपये हो गया है। हमारा आरएएम क्रेडिट 13.23% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 6,10,127 करोड़ रुपये हो गया है। खुदरा ऋण पोर्टफोलियो 42.80% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 2,23,366 करोड़ रुपये हो गया है। आवास ऋण पोर्टफोलियो 13.57% (वर्षानुवर्ष) की वृद्धि के साथ 1,06,167 करोड़ रुपये हो गया है। सकल गैर-निष्पादित आस्तियां (जीएनपीए) अनुपात मार्च 2025 में घटकर 2.94% रहा, जो दिसंबर 2024 तक 3.34% और मार्च 2025 तक 4.23% रहा। निवल गैर-निष्पादित आस्तियां (एनएनपीए) अनुपात मार्च 2025 में घटकर 0.89% रहा, मार्च 2024 तक 1.27% था। प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) मार्च 2025 में 92.70% रहा, जो दिसंबर 2024 में 91.26% था, मार्च 2024 को 89.10% था। मार्च 2025 तक सीआरएआर 16.33% रहा।

Our Global Business increased by 11.32% (YoY) to ₹25,30,215 Cr as at March 2025 with increase of Global Deposits by 11.01% (YoY) to ₹14,56,883 Cr and Global Advance (gross) by 11.74% (YoY) to ₹10,73,332 Cr. The Domestic Deposit of the Bank stood at ₹13,31,137 Cr as at March 2025 with growth of 9.56% (YoY). Our Domestic Advances (gross) stood at ₹10,08,671 Cr as at March 2025 grew by 11.06% (YoY). Our RAM credit increased by 13.23% (YoY) to ₹6,10,127 Cr. The Retail lending Portfolio increased to ₹2,23,366 Cr i.e., grew by 42.80% (YoY). Housing Loan Portfolio increased by 13.57% (YoY) to ₹1,06,167 Cr. The Gross Non-Performing Assets (GNPA) ratio improved at 2.94% as at March 2025 reduced from 3.34% as at December 2024, 4.23% as at March 2024. Net Non-Performing Assets (NNPA) ratio improved to 0.70% as at March 2025 reduced from 0.89% as at December 2024, 1.27% as at March 2024. Provision Coverage Ratio (PCR) stood to 92.70% as at March 2025 against 91.26% as at December 2024, 89.10% as at March 2024. CRAR stood at 16.33% as at March 2025.

हमने मार्च 2025 तक प्राथमिकता प्राप्त वाले क्षेत्र और कृषि ऋण में

We have achieved the Targets in Priority Sector at

एएनबीसी के क्रमशः 40% और 18% के मानदंड की तुलना में बैंक ने प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र में 42.36% और कृषि ऋण में एएनबीसी का 20.05% लक्ष्य हासिल कर लिया है। लघु और सीमांत किसानों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 10% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 13.42% का लक्ष्य हासिल किया। सूक्ष्म उद्यमों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 7.50% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 9.73% का लक्ष्य हासिल किया है। गैर-कॉर्पोरेट किसानों को ऋण प्रदान करने के एएनबीसी के 13.78% के मानदंड की तुलना में बैंक ने 16.25% का लक्ष्य हासिल किया है।

जब हम अपनी उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं, तो हमें उभरते आर्थिक परिदृश्य और भविष्य चुनौतियों को भी स्वीकार करना होगा। हमारा ध्यान आगामी तिमाहियों में कासा को और बेहतर बनाने पर रहेगा। हमें कुशल लागत प्रबंधन और अपने ऋण और जमा मिश्रण को अनुकूलित करके अपने निवल ब्याज मार्जिन को बढ़ाने के लिए सामरिक उपायों को लागू करना होगा। हमें सतर्क निगरानी और वसूली प्रयासों के माध्यम से अपनी आस्तियों की गुणवत्ता को बनाए रखने और उसमें और बेहतर सुधार लाने के लिए अपने सक्रिय दृष्टिकोण को जारी रखना होगा। हमारा लक्ष्य सकल एनपीए को कम करना है और यह सुनिश्चित करना है कि चालू वित्त वर्ष में वसूली आनुपातिक रूप से स्लिपेज से अधिक हो।

मैं आप सभी की अटूट प्रतिबद्धता के लिए तहे दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। आपका समर्पण केनरा बैंक की सफलता की आधारशिला है। आइए हम आने वाले वर्ष में नई ऊँचाइयों को छूने के लिए उसी जोश और दृढ़ संकल्प के साथ मिलकर काम करना जारी रखें। आइए हम पुनः हमारे मूल मंत्र “रहें संग, बढ़ें संग” को दुनिया के समक्ष चरितार्थ करें।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ !!

मंगल कामनाओं सहित,

के. सत्यनारायण राजु

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

42.36% and Agricultural Credit at 20.05% of ANBC as at March 2025, as against the norm of 40% and 18% respectively. Credit to Small and Marginal Farmers stood at 13.42% of ANBC, against the norm of 10.00%. Credit to Weaker Sections stood at 19.25% of ANBC, against the norm of 12.00%. Credit to Micro Enterprises stood at 9.73% of ANBC, against the norm of 7.50%. Credit to Non-Corporate Farmers stood at 16.25% of ANBC, against the norm of 13.78%.

While we celebrate our achievements, we must also acknowledge the evolving economic landscape and the challenges that lie ahead. Our focus will remain on improving CASA in the upcoming quarters. We have to implement strategic measures to enhance our Net Interest Margin through efficient cost management and optimizing our loan and deposit mix. We have to continue our proactive approach to maintain and further improve our asset quality through diligent monitoring and recovery efforts. Our target is to bring down gross NPA and ensure that recoveries are proportionately higher than slippages in the current fiscal year.

I want to express my sincere appreciation to each one of you for your unwavering commitment. Your dedication is the cornerstone of Canara Bank's success. Let us continue to work together with the same zeal and determination to scale new heights in the coming year. Let us continue to prove to the world that “Together we can”!

Wish you all the very best

With warm regards,

K. Satyanarayana Raju

Managing Director & CEO

संपादकीय



Editorial

प्रिय साथियों,

एक और साल बीता, और एक बार फिर प्रतिभा ने बेमिसाल चमक बिखेरी! हमारी वार्षिक रचनात्मक प्रतियोगिता की शानदार सफलता ने एक बार फिर हमें केनरा बैंक परिवार के भीतर जीवंत ऊर्जा और छिपी गहराई की याद दिला दी है। आकर्षक कैनवस से लेकर मार्मिक कविताओं तक, रचनात्मक कहानियों से लेकर संसाधनपूर्ण लेखों तक, इस वर्ष प्रविष्टियों की विशुद्ध विविधता और क्षमता वास्तव में प्रेरणादायक थी। "श्रेयस 300" का यह विशेष संस्करण हमारे कर्मचारियों के असाधारण कार्य को प्रदर्शित करता है, जिसमें प्रथम और द्वितीय पुरस्कार विजेताओं की प्रविष्टियों पर प्रकाश डाला गया है जो उत्कृष्ट प्रतिभा, समर्पण और नवाचार को प्रदर्शित करती हैं।

श्रेयस प्रतियोगिता का उद्देश्य केवल कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करना नहीं है; यह एक सशक्त अनुस्मारक है कि रचनात्मकता हमारे जीवन के सभी पहलुओं में, हमारी शाखाओं, कार्यालयों के भीतर और बाहर, नवीनता को बढ़ावा देती है। यह चुनौतियों को नए नजरिए से देखने, नए समाधान खोजने और अपने अद्वितीय दृष्टिकोण को व्यक्त करने के बारे में है – ये ऐसे गुण हैं जो हमारे दैनिक कार्यों और केनरा बैंक के भविष्य को आकार देने में अमूल्य हैं।

हम सभी विभागों और वर्गों से इतनी उत्साहपूर्ण भागीदारी देखकर रोमांचित थे। अनुभवी दिग्गजों और नए चेहरों ने समान रूप से अपने जुनून और प्रतिभा को साझा करने के अवसर का लाभ उठाया। प्रत्येक प्रविष्टि ने, अपने अनूठे तरीके से, विविध कौशल और रुचियों की एक छवि पेश की जो हमारी टीम को इतना असाधारण बनाती है।

हमेशा की तरह, निर्णायक प्रक्रिया एक सुखद चुनौती थी। प्रत्येक प्रस्तुति में समर्पण और विचार स्पष्ट थे, जिससे विजेताओं का चयन वास्तव में एक पुरस्कृत लेकिन कठिन कार्य बन गया। हम सभी लोगों को हार्दिक बधाई देते हैं, और विशेष रूप से उन विजेताओं को बधाई, जिनकी उत्कृष्ट रचनाएं आगामी वर्षभर सम्मानित और प्रदर्शित की जाएंगी।

प्रशंसा से परे, इस प्रतियोगिता का वास्तविक महत्व उस सामूहिक भावना में निहित है जिसे यह बढ़ावा देती है। यह हमारे लिए एक अलग स्तर पर सहकर्मियों से जुड़ने तथा उन बहुमुखी व्यक्तियों की सराहना करने का अवसर है जो हमारी साझा सफलता में योगदान देते हैं। यह विचारों को जन्म देता है, प्रेरणा को जागृत करता है, और हमें यह एहसास कराता है कि हम केवल कार्यस्थली के सहयोगी नहीं, बल्कि रचनात्मक ऊर्जा से भरा एक जीवंत समुदाय हैं।

जैसे ही हमने पिछले वर्ष की प्रतियोगिता का समापन किया, हमारी नज़रें उत्साहपूर्वक उन कल्पनाशील चमत्कारों पर टिक गईं जो आने वाला वर्ष लेकर आएगा। केनरा बैंक में रचनात्मकता की भावना यही फलती-फूलती रहे। अपनी रुचियों को अपनाइए, अपनी प्रतिभा को निखारें और यह विश्वास रखें कि आपकी विशिष्ट सोच और दृष्टिकोण यहाँ सम्मानित और प्रशंसित किए जाते हैं।

आशा है कि आप इस विशेषांक को पढ़कर प्रसन्नचित्त होंगे। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। कृपया केननेट पर हमारी गृह पत्रिका व पुस्तकालय के वेबपेज पर / या hohml@canarabank.com पर मेल के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी दें अथवा 080 – 22233480 पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

अगाध प्रशंसा तथा कृतज्ञता के साथ

प्रियदर्शिनी आर
संपादक

Dear Colleagues,

Another year, another dazzling display of talent! The resounding success of our annual creative contest once again reminds us of the vibrant energy and hidden depths within the Canara Bank family. From captivating canvases to poignant poems, from creative stories to resourceful articles, the sheer variety and calibre of entries this year were truly inspiring. This special edition of "Shreyas 300" proudly showcases the exceptional work of our staff, highlighting the first and second award winning entries that demonstrate outstanding talent, dedication and innovation.

Shreyas contest isn't just about showcasing artistic flair; it's a powerful reminder that creativity fuels innovation in all aspects of our lives, both within and beyond the walls of our branches and offices. It's about looking at challenges with fresh eyes, finding novel solutions, and expressing our unique perspectives – qualities that are invaluable in our daily work and in shaping the future of Canara Bank.

We were thrilled to see such enthusiastic participation across all departments and levels. Seasoned veterans and fresh faces alike embraced the opportunity to share their passions and talents. Each entry, in its own unique way, painted a picture of the diverse skills and interests that make our team so exceptional.

The judging process, as always, was a delightful challenge. The dedication and thought poured into each submission were evident, making the selection of winners a truly rewarding yet difficult task. We extend our heartfelt congratulations to all those who participated and especially to the winners, whose exceptional creations will be celebrated and showcased throughout the coming year.

Beyond the accolades, the true value of this contest lies in the collective spirit it fosters. It's a chance for us to connect with colleagues on a different level, to appreciate the multifaceted individuals who contribute to our shared success. It sparks conversations, ignites inspiration, and reminds us that we are more than just colleagues; we are a community brimming with creativity.

As we close the chapter on last year's contest, we eagerly anticipate the imaginative wonders that next year will bring. Let the spirit of creativity continue to flourish within Canara Bank. Embrace your passions, explore your talents, and know that your unique voice and vision are valued and celebrated here. After all, it's the collective spark of individual creativity that truly illuminates our path forward.

Hope you enjoy reading this special edition. As we love to hear from you, please drop in your feedback/ comments by visiting our HM&L Webpage in Cannaet / or as mail to hohml@canarabank.com / or you can always call us at 080 – 22233480.

With profound admiration and gratitude

Priyadarshini R
Editor



Dear Canarites,

My journey in this great organization has been remarkable, rewarding and eventful.

Penning my farewell message on the day of my superannuation has become an increasingly daunting task for me and a flood of cherished memories is making it harder to put my thoughts into words. It feels like just yesterday, I stepped into the portals of the Bank as its newest Executive Director.

My journey from February 2018 to May 2025 saw the business of the Bank grow from ₹9.08 trillion to ₹25.30 trillion, a net loss getting converted into a record net profit of ₹17,027 crores. The Bank has made a remarkable transformation and is recognized as a leading tech savvy Bank with introduction of a plethora of novel customer friendly products, and many more.

All this has been possible with the active and collective contribution of all the Canarites. Time

and again, we have proved that “TOGETHER WE CAN” be successful in all our endeavours and accomplish many more accolades.

The diehard spirit of Canara Bank, which has endured the long journey of 119 years has remained unwavering and strong.

I am sure that the Bank will continue to do well under the present visionary leadership and we shall be able to witness many more successes of this great organisation in future.

I take this opportunity to thank all my superiors and my dear colleagues who have made my journey in the Bank a comfortable and meaningful one.

With Best wishes

Debashish Mukherjee
31.05.2025

श्रेयस की टीम आपके सुखद सेवानिवृत्त जीवन की कामना करती है।

Shreyas team wishes him a happy retirement,
“Let the Golden years be bright, happy and fulfilling”.



Shreyas Contest 2024
1st Prize
English Essay

Ease Reforms – How Ease Reforms in banking can strengthen Financial Stability and Enhance Customer Experience

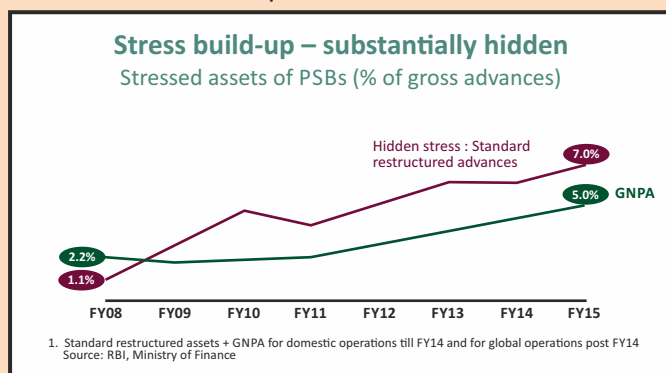
Sivasankarachari K

Divisional Manager
Retail Assets Hub
Ongole



1. INTRODUCTION:

Public Sector Banks (PSBs) and PSB sponsored Regional Rural Banks are the backbone of Indian Economy with market presence constitutes 78% of Scheduled Commercial Banks. The PSBs were undergoing stress from 2009 to 2015 which has led to a deterioration of performance of PSBs.



Courtesy: IIBF project report dated 31.03.2023

This is when the Government of India rolled out 4R's strategy i.e.,

Recognize NPA transparently

Resolution and recovery

Recapitalization of PSBs

Reforms to drive CLEAN & SMART banking

Gyan Sangham held in March 2016 and PSB Manthan in Nov'2017 have laid foundation for initiation of EASE reforms in PSBs. To meet the changing demands & needs of customers and towards digital transformation of Banks, a common PSB Reforms Agenda for Enhanced Access & Service Excellence (EASE) was launched by Ministry of Finance, Govt of India in Jan' 2018, which is

overseen by EASE Steering Committee of Indian Association (IBA) in collaboration with Boston Consulting Group(BCG). The EASE is now made part of Banking Dictionary and integral part of every PSB.

The EASE Reforms are a series of initiatives that have evolved starting from EASE 1.0 in the year 2018 to EASE 7.0 in 2024. EASE reforms aimed to make all PSBs equipped with the internal processes and systems that would help them to achieve the goal of CLEAN and SMART banking i.e., CLEAN (Clean credit, Leveraging data, Ensuring accountability, Action against defaulters and NPA recovery) and SMART (Speedy, Multichannel reach, Accessible & affordable, Responsive and Technologically enhanced).

Following are the EASE series and their details since inception.

SERIES	YEAR	TAGLINE	THEME
EASE 1.0	2018-19	CLEAN & SMART Banking for Aspiring India	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Responsible banking ➤ Customer responsiveness ➤ Credit off-take
EASE 2.0	2019-20	CLEAN & SMART Banking for Aspiring India	<ul style="list-style-type: none"> ➤ UdyamiMitra for micro, small, & medium enterprises (MSME's) ➤ Financial inclusion and digitalization ➤ Governance and human resource (HR)
EASE 3.0	2020-21	Institutionalising Smart, Tech-enabled Banking for Aspiring India	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Smart Lending for Aspiring India ➤ Tech-enabled ease of Banking ➤ Institutionalised Prudent Banking ➤ Governance and Outcome centric HR ➤ Deepening FI and Customer Protection
EASE 4.0	2021-22	Technology-enabled, simplified and collaborative banking	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Smart Lending for Aspiring India ➤ New Age 24x7 banking with resilient technology ➤ Collaborating for Synergistic Outcomes ➤ Tech-enabled Ease of Banking ➤ Institutionalising Prudent Banking ➤ Governance and Outcome-centric HR

SERIES	YEAR	TAGLINE	THEME
EASE 5.0	2022-23	Enhanced digital experience; data-driven, integrated, and inclusive banking	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Digitally – Enabled customer offerings ➤ Big Data and Analytics ➤ Modern Technology Capabilities ➤ Collaborative and Development-focused Banking ➤ Employee Development and Governance
EASE 6.0	2023-24	Enhanced digital experience; data-driven, integrated, and inclusive banking	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Delivering excellence in customer service with digital enablement ➤ Digital and analytics driven business improvement ➤ Tech and data enabled capability building ➤ Developing people and enhancing HR operations
EASE 7.0	2024-25	Economic Development: Customer Delight, Resilient Banking	<ul style="list-style-type: none"> ➤ Banking towards 'Viksit Bharat' ➤ Excellence in customer service ➤ Adoption of new-age technology and other advanced capabilities ➤ Effective risk/fraud management, collections and recovery ➤ Developing employee capabilities for emerging banking priorities

The Govt of India has mandated that all PSBs shall implement reforms agendas and they are awarded in the annual EASE Awards event for their performance under EASE. Canara Bank has been recognised for its exceptional performance in all the EASE series.

2. HOW EASE HAD STRENGTHENED FINANCIAL STABILITY AND ENHANCED CUSTOMER EXPERIENCE?

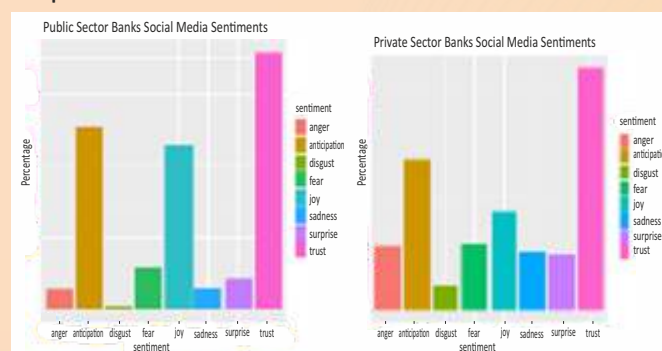
EASE reforms have acted as driving force to PSBs' functions and performance and have brought a transformative shift in various areas of Banking. Each series of EASE has come up with Focus areas and Action points covered in specific themes and there is a uniformity among the PSBs in implementing EASE reforms. A study was conducted by IIBF in 2023 on "Impact of EASE Reforms on Banking" duly comparing the performance of PSBs vis-a-vis Private sector banks before and after implementation of EASE reforms.

The study covers various parameters such as Efficiency Ratio (Operating Expenses/Total Revenue),

- Capital adequacy Ratio
- Asset quality Ratio (Net non-performing assets)
- Management Quality Ratio (Operating Expenses / Total assets)
- Earning Ratio (net profit/ total assets)
- Liquidity Ratio (Credit/Deposit ratio) and
- Sensitivity Ratio (Bank asset/ total scheduled commercial banks assets).

There is significant improvement in performance of PSBs in the CAMELS ratios post implementation of EASE reforms and the result can be attributable to EASE reforms.

Customer Responsiveness: One of the central themes of all the versions of EASE reforms has been to make public sector banks more '**customer responsive**'. The social media response has been taken as the basis for determining the customer response.



Courtesy: IIBF project report dated 31.03.2023

The above shows that anger, disgust, fear and sadness which are all negative sentiments are significantly higher in private than public sector banks. On the contrary, joy and trust which are positive sentiments are higher in the case of public sector banks. Hence, it can be inferred that public sentiment is more positive towards public sector banks.

Non-Performing Assets (NPAs) is one of the focused points of EASE 1.0 Reforms. Following is the progress of scheduled commercial banks under NPAs from 2018 to 2023, which coincides with EASE



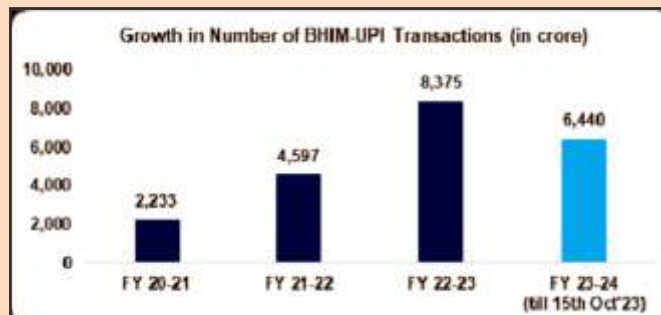
Courtesy: Ministry of Finance Year Ender 2023 dated 27.12.2023

reforms in PSBs.

Ease of Banking : In terms of EASE 3.0, ease of banking is apparent in customer experiences, using technology, Fin-Techs, Credit@click, Tech-enabled agriculture lending etc. A comprehensive agenda for smart, tech-enabled banking has been adopted for FY 2020-21, under which PSBs have initiated eShishu Mudra (instant app-based sanction up to ₹50,000) for loans to micro-enterprises. Doorstep Banking Services are envisaged to provide banking services at their doorstep through Call Centre, Web Portal or Mobile App.

Digital transformation : Digital and mobile banking is one of the most important aspects of EASE. Earlier mobile banking initiative was not very competitive to their private sector peers but over the years the services offered, responsiveness of the application and downloads have increased manifold and again the result is attributed to EASE reforms, which lead PSBs to remarkable improvement in the digital transactions since 2018.

Among the digital payments, BHIM-UPI transactions have grown significantly since FY2020-21 at a CAGR of ~94%. The BHIM-UPI has been the



Courtesy: RBI, Digidhan Portal/Banks Figures in crore

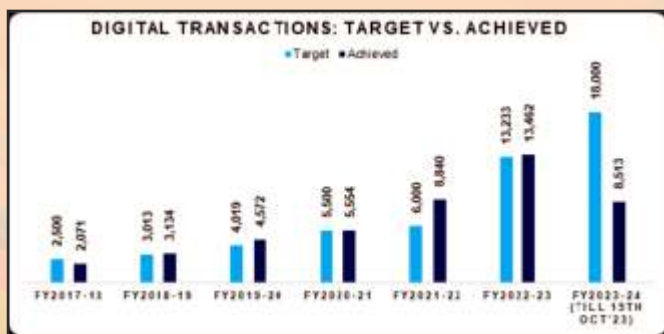
major driving force in the overall growth of digital payment transactions in the country accounting for 62% of digital payment transactions in FY 2022-23.

Few Innovations under UPI are the introduction of UPI AutoPay, e-RUPI, 123Pay, UPI Plug-In, Aadhaar OTP onboarding, RuPay Credit Card on UPI, and UPI Lite in 2021, Credit Line on UPI, Conversational Payments (AI based Hello! UPI & BillPay Connect) and UPI LITE X in 2023.

3. MAJOR ACHIEVEMENTS OF EASE REFORMS:

As per the 'Journal of Research in Humanities and Social Science', some of the Major Achievements in PSBs through EASE Reforms are:

- Twenty three crore basic savings account customers received RuPay credit cards from PSBs.
- There was reduction in complaint redressal average turnaround time. It was reduced from nine days to five days.
- There was reduction in retail loans turnaround time for an average of 10 days from approximately 30 days in the recent past.
- Non-banking financial products were cross-sold by which PSBs are making sure that customers had a greater range of financial products to choose from.
- Call centre services are now available in 13 regional languages.
- There are approximately 4 crore active customers who use internet banking and/or mobile banking.
- Financial transactions increased by 140% through digital mode like mobile and/or internet banking.



Courtesy: RBI, Digidhan Portal/Banks Figures in crore

- Direct banking practices were discouraged and around 50% of the financial transactions were through digital channels.
- Early, time-bound action in stressed accounts have been enabled since most of the PSBs have deployed IT based EWS systems.
- Slippage into NPA has reduced from 3.90 lakh crore in 12-months ending March-18 to 1.45 lakh crore in 11-months ending February-20.
- OTS, e-DRT are some of the online digital platforms adopted by PSBs.
- Dedicated IT systems are now used to track 88% of One-Time Settlement (OTS) cases.
- Sourcing of MSME and retail loans has increased nearly 5 times to 8.3 lakhs from 1.5 lakhs. The marketing tie-ups and dedicated salesforce has contributed to this rise.
- Board committee systems were made stronger
- Executive Director posts has been increased in the larger PSBs.
- In larger PSBs, Boards are empowered to introduce CGM level for increased business.
- Selection of top bank management through Banks Board Bureau
- Non-executive Chairpersons were introduced.
- Gross NPAs reduced to ₹6.78 lakh crore in March-2020 from ₹8.96 lakh crore in March-2018
- NPA ratio reduced to 3.75% (Mar, 2020) from 7.97% (Mar, 2018).
- Provision coverage ratio is at 80.9%, highest in 8 years.
- Number of PSBs under PCA down to three.
- In FY19-28, the recovery stood at ₹2.27 lakh crore. It was mainly driven by stressed account management verticals in PSBs.

Courtesy: Journal of Research in 'Humanities and Social Science' Volume 10 ~ Issue 2 (2022)pp: 49-54

4. PROACTIVE STEPS TAKEN BY CANARA BANK - MOVING FORWARD UNDER EASE:

BD360: Our Bank introduced digital dashboard for tracking performance of key roles such as Branch Manager, RO Head, CO Head for capturing their

progress against assigned action points under EASE pertaining to their respective area of operation.

Data Analytics: The recently introduced Data Analytics in our Bank is meant for in-depth analysis to know the needs of customers and needs to be utilised for new customer acquisition and product formulation etc. This will help bank in decision making and improve their efficiency and earning.

Comprehensive Employee Specific Feedback Mechanism: It is to be noted that technology development alone may not yield desirable results especially if continuous improvement is not brought upon. Even employees need training and push for adopting 'digital mindset' so that they may serve/guide customers confidently and resolve their complaints. QR code /SMS link based customer feedback systems is essential. In these lines, our Bank has introduced Comprehensive Employee Specific Feedback Mechanism.

Human Resource : Human Resource is key for development of any organization. Our Bank has given enough importance for recruitment and retention of talents in all the verticals of Banking. More than 100 HR features are digitalised and few staff benefits are automated for the benefit of staff, which will act as morale booster for employees.

5. CONCLUSION:

The EASE reforms have shown significant results in various areas of PSBs including asset quality, digital transactions, better customer experience, digital lending, turnaround time etc., which placed PSBs in competitive position with private banks. Though the available data depicts the overall performance of all PSBs since inception of EASE reforms, a comprehensive study is essential with inputs on the impact of EASE on a specific bank's business model and banking sector. In long term perspective, the impact of various themes under each EASE series needs to be comprehensively analysed after a decade or so with changing dynamics of PSBs.

NOT TO FORGET, EASE REFORMS IS A CONTINUOUS JOURNEY.....



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Hindi Essay

ईज सुधार – बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार कैसे वित्तीय स्थिरता को मजबूत करते हुए ग्राहक अनुभव को संवर्धित कर सकता है



शशि कांत पाण्डेय

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

परिचय

बैंक अर्थव्यवस्था में कई महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, खासकर भारत जैसे बैंक-प्रधान वित्तीय प्रणालियों में। दुनिया भर में बैंकिंग उद्योग में बदलाव हो रहा है और भारत भी इस घटना का अपवाद नहीं है। बदलाव की कुछ वैश्विक ताकतों में तकनीकी नवाचार, ग्राहक प्राथमिकताओं में बदलाव, बढ़ती मध्यस्थता और शेयरधारक मूल्य पर बढ़ा हुआ जोर आदि शामिल हैं।

यदि हम इतिहास को देखें तो सरकार और आरबीआई द्वारा बैंकिंग क्षेत्र, विशेषकर पीएसबी में सुधार के लिए कई उपाय किए गए हैं। बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन में सुधार के लिए बेसल मानदंडों की शुरुआत आरबीआई द्वारा की गई एक महत्वपूर्ण पहल रही है।

सरकार द्वारा शुरू किए गए सुधारों को मुख्य रूप से नरसिम्हम समिति की दो रिपोर्टों में की गई सिफारिशों से अपनाया गया। इन सिफारिशों में एक तरफ बैंकिंग प्रणाली की उत्पादकता, दक्षता और लाभप्रदता में सुधार से लेकर दूसरी तरफ निर्णय लेने में अधिक परिचालन लचीलापन और कार्यात्मक स्वायत्तता प्रदान करने तक के व्यापक क्षेत्र शामिल थे।

हालाँकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने पिछले कुछ वर्षों में सुधारों को जारी रखा है लेकिन लगातार दबाव वाली संपत्तियों, बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी और नए और पुराने निजी बैंकों से प्रतिस्पर्धा के कारण इस समय आक्रामक सुधार की आवश्यकता महसूस की गई। इस लगातार समस्या और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अन्य प्रणालीगत,

अभिशासन और प्रक्रिया संबंधी मुद्दों को संबोधित करने के लिए, नियामक ने दबाव वाली संपत्तियों की पहचान पर जोर दिया और सरकार ने मार्च 2015 में व्यापक 4R रणनीति लागू की जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ 4 व्यापक पैरामीटर शामिल थे। इसी के साथ ईज सुधार एजेंडा की शुरुआत हुई।

ईज सुधार एजेंडे की पृष्ठभूमि:

मार्च 2016 में पुणे में प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में आयोजित ज्ञान संगम, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार शुरू करने के लिए प्रेरक शक्ति था और बाद में वित्तीय सेवाएँ विभाग (डीएफएस) के मार्गदर्शन में, नवंबर 2017 में पीएसबी मंथन कार्यक्रम में पीएसबी के पूर्णकालिक निदेशकों (डब्ल्यूटीडी) और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा की गई सिफारिशों से ईज रिफॉर्म एजेंडा का जन्म हुआ।

ईज की संकल्पना जोखिम आकलन, एनपीए प्रबंधन, वित्तीय समावेशन को गहरा करने, ग्राहक सेवा को बढ़ाने, डिजिटल परिवर्तन, खुदरा और एमएसएमई ऋण ऑफ-टेक शुरू करने, विश्लेषणात्मक क्षमताओं, मानव संसाधन परिवर्तन और अभिशासन आदि को बेहतर बनाने के लिए की गई थी। ईज सुधारों को भारतीय बैंक संघ की ईज संचालन समिति द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसका उद्देश्य बैंकिंग परिदृश्य की बदलती मांगों को पूरा करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक की क्षमताओं को व्यापक और सर्व-समावेशी रूप से नया रूप देना और बढ़ाना है। यह चैंपियन बैंकों और बाजार विशेषज्ञों द्वारा आयोजित नियमित ज्ञान श्रृंखला और सर्वोत्तम अभ्यास कार्यशालाओं के माध्यम से सभी

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के लिए सहयोगी विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।

पिछले दो वित्तीय वर्षों के दौरान ईज सुधार एजेंडा

ईज 6.0 (वित्त वर्ष 24) की संकल्पना 4 थीमों के अंतर्गत 22 कार्य बिंदुओं के साथ की गई है, जो इस पर केंद्रित हैं:

डिजिटल सक्षमता के साथ ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता प्रदान करना:

पेशानी मुक्त शाखा बैंकिंग अनुभव, निर्बाध कॉल-सेंटर अनुभव, सहज मोबाइल/इंटरनेट बैंकिंग, शिकायत निवारण, ग्राहक अधिग्रहण, प्रतिधारण और संबंध प्रगाढ़ करना तथा समावेशी द्वारस्थ बैंकिंग सेवा वितरण।

डिजिटल और एनालिटिक्स-संचालित व्यवसाय सुधार:

एमएसएमई के लिए व्यापक डिजिटल बैंकिंग, कृषि मूल्य श्रृंखला के लिए बैंकिंग समाधान, बेहतर ग्राहक जुड़ाव के लिए डिजिटल मार्केटिंग, कासा जमा आधार और साझेदारी बैंकिंग की डिजिटल रूप से सक्षम सोर्सिंग और सर्विसिंग।

टेक्नोलॉजी और डेटा सक्षम क्षमता निर्माण:

विशेष एनालिटिक्स फ़ंक्शन को मजबूत करना, क्लाउड तकनीकों को अपनाना, डिजिटल और एनालिटिक्स संचालित जोखिम प्रबंधन, संग्रह और वसूली, साइबर सुरक्षा को मजबूत करना और साइबर धोखाधड़ी को रोकना।

मानव संसाधन का विकास और मानव संसाधन परिचालन क्षमता को बढ़ाना:

कर्मचारी उत्पादकता के लिए चालकों का विश्लेषण करना, लिंग विविधता को बढ़ावा देना, विशेषज्ञता को मजबूत करना, उत्तराधिकार योजना और नेतृत्व विकास, डेटा-संचालित जनशक्ति योजना, भूमिका स्पष्टता और लक्ष्य निर्धारण।

वर्तमान सुधार, ईज 7.0 सुधार एजेंडा

यह बैंकों को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने, मजबूत ग्राहक सेवा अभिविन्यास बनाए रखने, परिचालन जोखिमों

को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और नए युग की क्षमता निर्माण को उत्प्रेरित करने पर जोर देने के साथ शुरू किया गया है। यह निम्नलिखित पर जोर देता है-

ग्राहकों के बैंकिंग अनुभव को ग्राहक केंद्रित अनुभव के रूप में तैयार करना :

बैंकिंग चैनलों में ग्राहक अनुभव में सुधार करें, कर्मचारी पुरस्कार पूल के निर्माण के माध्यम से ग्राहक अनुकूल व्यवहार के लिए इनाम और प्रेरणा कार्यक्रमों का डिज़ाइन, कार्यान्वयन और ट्रेकिंग, एटीएम, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग और चैटबॉट जैसे स्वयं-सेवा चैनलों की निरंतर उपलब्धता, विश्वसनीयता, प्रतिक्रिया और प्रदर्शन सुनिश्चित करना।

ग्राहक-सेवा की उत्कृष्टता के लिए एकीकृत ग्राहक दृष्टिकोण, एकल स्पर्श बिंदु में सेवा अनुरोधों को पूरा करने या बार-बार आने और बातचीत को कम करने में सक्षम बनाने के लिए, सभी चैनलों पर फीडबैक संग्रह की सीमा में सुधार करना, सोशल मीडिया पर फीडबैक और ग्राहक शिकायतों की निगरानी करना और त्वरित सुधारात्मक कदम उठाना, एक सार्वभौमिक आईडी के साथ एक समेकित फीडबैक/शिकायत प्रबंधन पोर्टल/सिस्टम बनाना; शिकायत निवारण प्रक्रिया के लिए प्रतिक्रिया और ग्राहक संतुष्टि के लिए समाधान समय को मापना और उसमें सुधार करना।

मजबूत ग्राहक संबंध :

ग्राहक संबंधों को समझें। उच्च मूल्य वाले ग्राहकों को विशेष कर्मचारियों से जोड़ें तथा शाखा कर्मचारियों और अन्य चैनलों को सीआरएम प्रणालियों और पोर्टलों के माध्यम से व्यक्तिगत बातचीत करने में सक्षम बनाया जाए। मौजूदा ग्राहकों के बीच बैंकिंग उत्पाद की पहुंच को सुनिश्चित करें (उदाहरण के लिए, पूर्व-स्वीकृत ऋण, क्रेडिट कार्ड, एफडी/आरडी, लॉकर, लॉयल्टी कार्यक्रम, आदि)। उत्पादों और सेवाओं के 'प्राथमिकता वाले प्रस्तावों' के स्पष्ट सीमांकन के साथ विश्लेषण-संचालित व्यक्तिगत ग्राहक प्रस्ताव बनाया जाए। मोबाइल/इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम/डेबिट कार्ड पर जुड़ाव बढ़ाएं और यूपीआई

भुगतानों के लिए बैंक खाते को जोड़ें।

ग्राहक सुविधा के लिए कुशल प्रक्रिया:

उच्च फुटफॉल वाली शाखाओं में केंद्रीय रूप से निगरानी वाले डिजिटल कतार प्रबंधन को लागू करें। ग्राहकों की सहायता करते हुए उनकी डिजिटल यात्राओं को बेहतर बनाएं उदाहरण के लिए, डिजिटल रूप से सहायता प्राप्त ऋण करना, जमा खाता खोलना, बैंकिंग उत्पादों की क्रॉस/अपसेल। नॉन-होम शाखाओं में ग्राहकों को सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाएं। सामान्यतः कम प्राप्त होने वाली जटिल ग्राहक सेवाओं, जैसे मृत्यु दावे, खाता खोलना या बंद करना, खातों का स्थानांतरण और अपग्रेड, आदि के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को सरल बनाएं, उसे डिजिटाइज़ करें और ग्राहकों तक उसकी पहुंच बढ़ाएं। शाखा में जाने की आवश्यकता को युक्तिसंगत बनाने के लिए सर्व-चैनल प्रक्रियाएँ प्रदान करें।

एमएसएमई बैंकिंग उत्पादों को व्यापक और डिजिटल बनाना :

एमएसएमई – अधिग्रहण, प्रतिधारण और व्यापक डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक आधार को व्यापक बनाएं। नवीन एमएसएमई ग्राहक अधिग्रहण को मजबूत करें। उनके साथ बैंकिंग संबंधों को प्रगाढ़ करें और एमएसएमई की बढ़ती जरूरतों और व्यावसायिक प्रोफाइल के अनुकूल उत्पाद पेश करते हुए ग्राहकों को 'बैंकिंग सुविधा से जोड़े'। पूर्णतया आटोमेटिक और बेहतर जोखिम प्रबंधन के लिए एमएसएमई डिजिटल ऋण प्रक्रियाओं में सुधार करें और एनालिटिक्स-संचालित स्कोरकार्ड की शुरुआत करें। क्षेत्र-विशिष्ट उत्पाद पेशकशों का विकास करें और उसकी शुरुआत करें। बैंकों को न केवल पारंपरिक बल्कि गैर-पारंपरिक क्षेत्रों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए जहां बैंकिंग क्षेत्र की क्षमताएं अभी परिपक्व नहीं हुई हैं।

समावेशी बैंकिंग सुविधा की शुरुआत व ग्राहकों तक उसकी पहुंच:

महिलाओं की सुविधानुसार बैंकिंग पहुंच को तैयार करें,

आर्थिक विकास और महिला उद्यमिता को समर्थन दें। महिला केंद्रित सरकारी कार्यक्रमों के लाभार्थियों के लिए बैंकिंग समाधानों की पहुंच को व्यापक बनाएं। एसएचजी, एमएफआई ऋण पोर्टफोलियो में तेजी लाएं, एसएचजी ग्रेड में सुधार को सक्षम करें और उद्यमी व्यक्तिगत सदस्यों को व्यापक बैंकिंग उत्पाद प्रदान करें। महिलाओं के लिए अनुकूलित वित्तीय उत्पाद लॉन्च करें, जैसे महिला-उन्मुख बचत खाते, महिला उद्यमियों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में ऋण योजनाएं। बीसी सखी नेटवर्क का विस्तार करें, सक्रियता और लेनदेन की तीव्रता बढ़ाएं।

कृषि क्षेत्र के ग्राहकों के लिए बैंकिंग सुविधा को आसान बनाना:

कृषि – केसीसी से परे विविध कृषि और ग्रामीण ऋण देने में तेजी लाएं। लीड जनरेट करने में विविधता लाने के लिए साझेदारों के साथ संबंध और साझेदारी बढ़ाएं: एसएचजी, जेएलजी, पीएसीओईएम, एफपीओ, तकनीक और खुदरा प्लेटफॉर्म। संबद्ध कृषि, कृषि प्रसंस्करण, कृषि अवसंरचना, कृषि निर्यात, कृषि उपकरण, कृषि मूल्य श्रृंखला से संबंधित व्यवसाय पोर्टफोलियो पर जोर देते हुए छोटे मूल्य केसीसी से परे कृषि ऋण पोर्टफोलियो में विविधता लाएं। तत्काल वित्तीय जरूरतों के लिए उत्पाद-विशिष्ट छोटे-टिकट ऋण के लिए अनुरूप उत्पाद डिजाइन करें।

निष्कर्ष

2009 से 2015 तक पीएसबी को संचित तनाव के कारण प्रदर्शन में गिरावट का सामना करना पड़ा, जिससे ग्राहक जवाबदेही, अभिशासन, मानव संसाधन और डिजिटलीकरण जैसे क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता हुई। सरकार ने इन मुद्दों को हल करने और पीएसबी में समग्र सुधार को बढ़ावा देने के लिए ईज सुधार एजेंडा शुरू किया। ईज सुधार सूचकांक ने विभिन्न मेट्रिक्स में महत्वपूर्ण प्रगति दिखाई है। इसका प्रमुख उद्देश्य पीएसबी को डिजिटल और डेटा-संचालित, तकनीक-सक्षम नेक्स्टजेन बैंकों में बदलना है। जिसे इन सुधारों को लागू करके अवश्य ही प्राप्त किया जा सकता है।



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Essay English

Ease Reforms : A Blueprint for Strengthening Financial Stability & Redefining Customer Experience.



Nishbat Mansoori

Manager
RAH, Vadodara

The Indian banking sector serves as the backbone of the nation's economic progress, with Public Sector Banks (PSBs) playing a pivotal role in fostering growth and ensuring stability. Over the years, however, PSBs have grappled with a myriad of challenges, including inefficiencies in operations and a high burden of Non-Performing Assets (NPAs). Recognizing the urgency to transform PSBs into customer-centric, technologically advanced and resilient institutions, the Government of India introduced the Enhanced Access and Service Excellence (EASE) reforms in 2018. This initiative has since redefined the banking landscape, focusing on financial stability, governance, and customer experience.

THE GENESIS AND EVOLUTION OF EASE REFORMS

The inception of EASE reforms began with the rollout of EASE 1.0 in 2018. This phase focused on establishing a foundation by improving governance, enhancing accountability, recapitalizing PSBs, and addressing operational inefficiencies. Key elements included responsive banking, governance reforms, and the adoption of clean and smart banking practices.

Building on this groundwork, EASE 2.0 emphasized systemic improvements, particularly in credit monitoring, resolution of NPAs, and the overall financial health of PSBs. These reforms laid the groundwork for a sector-wide transformation.

The introduction of EASE 3.0 marked a technological leap, ushering in the era of data analytics, Artificial

Intelligence (AI), and digital banking. These tools streamlined operations, enhanced customer service, and modernized PSBs into NextGen banks.

Subsequent iterations, EASE 4.0 and EASE 5.0, emphasized inclusivity and technological resilience. The focus shifted to extending financial services to rural and underserved populations, aligning banking operations with national priorities.

EASE 6.0, launched in 2022, tackled emerging challenges in cybersecurity, data governance, and customer service innovations. It also set the stage for operational risk management and advanced customer engagement.

The latest iteration, EASE 7.0 (2023-24), builds on this legacy with the theme "Banking Towards Viksit Bharat". It aligns PSBs with India's aspirations for inclusive growth, digital transformation, and climate resilience. This phase prioritizes advanced technologies, financial inclusion, and a customer-first approach to redefine the banking experience.

STRENGTHENING FINANCIAL STABILITY THROUGH EASE REFORMS

Financial stability is a cornerstone of economic resilience, and EASE reforms have significantly contributed to this objective. A notable impact has been the dramatic reduction in gross NPAs, which peaked at 14.6% in 2018 and dropped to 3.12% by September 2024. This remarkable improvement is attributed to better credit monitoring, analytics-driven underwriting, and targeted recovery efforts.

The reforms have also bolstered the capital base of

PSBs. By September 2024, the Capital to Risk-Weighted Assets Ratio (CRAR) stood at 15.43%, comfortably exceeding the regulatory requirement of 11.5%. A stronger capital foundation ensures resilience against economic shocks and boosts investor confidence.

Profitability metrics underline the success of EASE initiatives. After incurring significant losses in FY 2017-18, PSBs reported a collective net profit of over ₹141,000 crore in FY 2023-24. This turnaround reflects improved asset quality, cost optimization, and diversification of income streams.

Technological advancements have further stabilized PSBs. AI and Machine Learning (ML) are employed for fraud detection, predictive analytics, and automated recovery systems. Cybersecurity frameworks and Risk Adjusted Return on Capital models (RAROC) enhance operational resilience, ensuring long-term stability.

ENHANCING CUSTOMER EXPERIENCE THROUGH EASE REFORMS

Customer satisfaction lies at the heart of modern banking, and EASE reforms have revolutionized the way PSBs interact with their clientele. The shift to omnichannel banking allows customers to seamlessly transition between physical and digital platforms. Enhanced mobile and internet banking services now offer real-time transactions, user-friendly interfaces, and top-tier security features.

Personalization has emerged as a hallmark of customer-centric reforms. Leveraging AI-powered CRM tools, PSBs offer tailored financial products, including pre-approved loans, customized deposit schemes, and lifestyle-specific credit cards. This approach has deepened customer relationships and boosted satisfaction levels.

Grievance redressal systems have also undergone significant transformation. Unified complaint

management platforms enable real-time issue tracking and quicker resolutions, fostering trust and loyalty. Feedback mechanisms and social media monitoring further ensure responsiveness to customer concerns.

EASE reforms have driven financial inclusion, bridging the gap between urban and rural banking services. Initiatives like the Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana (PMJDY) and PM SVANIDHI have extended banking access to underserved areas. By March 2024, over 480 million Jan Dhan accounts facilitated direct benefit transfers, reducing financial leakages. Digital penetration in rural areas increased by 25%, reflecting the success of inclusive banking efforts.

DATA INSIGHTS SUPPORTING EASE REFORMS

The transformative impact of EASE reforms is supported by compelling data. Gross NPAs declined from 14.6% in 2018 to 3.12% in 2024, highlighting the success of credit monitoring and recovery mechanisms. Digital transactions now constitute over 70% of PSB transactions, a significant leap from 29% in 2018, showcasing the growing preference for digital banking.

Advancements in AI and analytics have reduced loan turnaround times, making credit more accessible to key sectors like MSMEs, agriculture, and infrastructure. The growth in CASA deposits further underscores improved liquidity and operational efficiency.

OVERCOMING CHALLENGES AND CHARTING THE FUTURE

Despite remarkable progress, challenges remain. The digital divide continues to hinder adoption in rural areas with limited internet penetration and digital literacy. Cybersecurity risks demand ongoing upgrades to protective frameworks. Additionally, a cultural shift is needed for employees to fully

embrace digital and customer-centric practices.

Future strategies must focus on integrating emerging technologies like blockchain for transparency and AI for advanced decision-making. Expanding green banking initiatives and promoting financial literacy will bridge the digital divide, while public-private partnerships can enhance infrastructure in underserved areas.

EASE 7.0: CANARA BANK'S STRATEGIC VISION

Canara Bank, committed to being among the top three PSBs under EASE 7.0, has charted a comprehensive reform strategy.

A. Customer Service

- Extend prompt and courteous service to reduce customer complaints.
- Ensure all complaints are captured in CPGRS and resolved within the prescribed TAT by the Corporate Office
- Popularize the online death claim settlement portal and ensure timely disposal of claims.
- Collect feedback from the customers to improve service quality.

B. Deposit growth

- Improve CASA account opening and deposit mobilization.
- Focus on new customer retention and deepening relationship with both our existing & new customers to decrease the customer attrition and improve product per customer.
- Broaden CASA penetration beyond basic accounts i.e High end CASA and improve on boarding of new female customers.
- Improve the percentage of green deposits.
- Popularize Customer Relationship Officials (CROs) and extend best banking services to HNI customers.

C. Credit Delivery

- Ensure sanction and disbursement of loans within the prescribed Turnaround Time (TAT) as per the scheme guidelines.

- Increase cross selling of products to Retail & MSME Borrowers to maximize number of products per customer.
- Promote our End to End Digital Journey for RAM segment lending.
- Focus on acquiring & retaining MSME customers
- Enhance access to financial product for women and young customers across retail and MSME banking.
- Increase the proportion of green financing in total portfolio.
- Improve our share (%) of business generated through analytics-based models.
- Ensure achievement of targeted growth under RAM segment.

D. Financial Inclusion & Social Security

- Increase cross selling of non-banking products viz., Life insurance, General insurance, Retail health insurance, Mutual Fund, Gold Bond, PPF, APY, Sukanya Samridhi etc.
- Motivate BCs and monitor their performance to increase number of transactions through BC channel.
- Focus on enhancing the value of women customer portfolio and Agriculture segment lending in government schemes and service.

E. Digital Banking

- Popularize Digital Channels like Mobile Banking, Internet Banking, IMPS, UPI etc.
- Encourage customers to adopt our technology products for both Financial & Non-Financial Transactions.
- Promote the use of Self Service machines viz., ATM, BNA, pass book printing, Tab etc. provided at branches.
- Increase digital transactions by ensuring uptime of Self Service machines.
- Encourage opening of new SB & TD accounts digitally. Popularize the available digital banking features for MSME/Corporate customers.

- Expand the reach and boost the adoption of our messaging apps.

F. NPA and Slippage Management

- Contain fresh slippages by effective monitoring of SMA accounts. Improve the collections in SMA accounts.
- Focus on the recovery in NPA Accounts and ensure timely action under SARFAESI, DRT etc
- Popularise the e-OTS portal and ensure to capture all OTS proposals on the platform.
- Ensure adequate monitoring of DRT proceedings and reduce NPA & SMA cases compared to last year.

By aligning its initiatives with EASE 7.0 objectives, Canara Bank aims to set new benchmarks in operational excellence and customer delight.

CONCLUSION

EASE reforms have transformed Indian PSBs into resilient, innovative, and customer-focused institutions. By addressing inefficiencies, embracing technology, and fostering inclusivity, these reforms have elevated financial stability and redefined customer experience.

As EASE 7.0 unfolds, sustained efforts toward financial inclusion, digital innovation, and operational resilience will ensure that PSBs continue to play a vital role in India's economic narrative. The journey ahead promises a banking ecosystem aligned with global best practices, contributing to the vision of a developed, inclusive India. Through EASE, PSBs are not just meeting challenges but exceeding expectations, heralding a brighter future for the Indian banking sector.





Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Hindi Article

ईज़ सुधार – बैंकिंग क्षेत्र में ईज़ सुधार कैसे वित्तीय स्थिति को मजबूत करते हुए ग्राहक अनुभव को संवर्धित कर सकता है



श्वेता श्रीवास्तवा

प्रबंधक

वैश्विक व्यापार प्रसंस्करण केंद्र, मणिपाल

प्रस्तावना

बैंको का अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, विशेष रूप से भारत जैसे बैंक प्रभुत्व वाली वित्तीय प्रणालियों में। दिन प्रतिदिन दुनिया भर में बैंकिंग उद्योग रूपांतरित होते जा रहे हैं जिसका प्रमाण भारत में भी देखने को मिलता है। परिवर्तन के लिए कुछ वैश्विक ताकतों में तकनीकी नवाचार, ग्राहक प्राथमिकताओं में बदलाव, बढ़ती मध्यस्थता और श्रेयधारक मूल्य पर बढ़ा हुआ जोर आदि शामिल हैं। "भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएँ विभाग (डीएफएस) ने प्रक्रियाओं और प्रणालियों को मजबूत करने की दिशा में सुधारों के समन्वित कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी पीएसबी (सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक) के लिए "बेहतर पहुँच और सेवा उत्कृष्टता (ईज़)" के नाम से एक सुधार एजेंडा पेश किया है। भारतीय बैंक संघ की ईज़ संचालन समिति द्वारा संचालित ईज़ सुधार सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में गहराई से स्थापित हो गए हैं। ईज़ 1.0 से लेकर वर्तमान ईज़ 7.0 तक की यात्रा में एक परिवर्तनकारी बदलाव देखा गया है, जिसमें डिजिटल ग्राहक अनुभव, एनालिटिक्स-संचालित व्यवसाय सुधार, तकनीक और डेटा-सक्षम क्षमता निर्माण और मानव संसाधन संचालन वृद्धि पर जोर दिया गया है।

ईज़, जनवरी 2018 में पीएसबी के लिए वित्तीय सेवाएँ विभाग (डीएफएस), भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए सुधारों का एक सेट है और इसमें विशिष्ट विषयों में शामिल एक्शन पॉइंट (एपी) शामिल हैं। इसे नवंबर 2017 में पीएसबी मंथन में पीएसबी के पूर्णकालिक निदेशकों (डब्ल्यूटीडी) और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा की गई सिफारिशों के आधार पर लॉन्च किया गया था। ये सुधार पीएसबी में प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित करते हैं, जैसे, शासन, विवेकपूर्ण ऋण, जोखिम प्रबंधन, प्रौद्योगिकी संचालित चेक और व्यापक वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में

नियंत्रण के साथ-साथ पारदर्शिता और जवाबदेही। जब इसे 2018 में शुरू किया गया था, तब इसे ईज़ 1.0 नाम दिया गया था, जो वित्त वर्ष 2018-19 की अवधि को कवर करता है, इसने वित्त वर्ष 2019-20 के लिए ईज़ 2.0, वित्त वर्ष 2020-21 के लिए ईज़ 3.0, वित्त वर्ष 2021-22 के लिए ईज़ 4.0, वित्त वर्ष 2022-23 के लिए ईज़ 5.0, वित्त वर्ष 2023-24 के लिए ईज़ 6.0 और वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ईज़ 7.0 के माध्यम से अपनी यात्रा तय की है।

परिचय

"ईज़" एक शब्द है जो पिछले कुछ सालों में बैंकिंग शब्दावली में शामिल हो गया है। ईज़ 'उन्नत पहुँच और सेवा उत्कृष्टता' का संक्षिप्त रूप है और यह पीएसबी बोर्डरूम और उच्च नेतृत्व में गहन चर्चा का विषय है। वित्तीय सेवाएँ विभाग (डीएफएस) ने ईज़ सुधार एजेंडा जैसी पिछली पहलों द्वारा रखी गई नींव पर सुधारों की गति को जारी रखा – जोखिम मूल्यांकन, एनपीए प्रबंधन, वित्तीय समावेशन, ग्राहक सेवा, डिजिटल परिवर्तन और बहुत कुछ पर ध्यान केंद्रित किया। ईज़, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के लिए डिज़ाइन किया गया एक सुधार एजेंडा है। इसे जनवरी 2018 में लॉन्च किया गया है, जिसका उद्देश्य पीएसबी की पहुँच, जवाबदेही और सेवा की गुणवत्ता में सुधार करना है। इस एजेंडे में छह विषयों पर तीस कार्य बिंदु शामिल हैं।

उत्पत्ति और प्रमुख पड़ाव

ईज़ की नींव ज्ञान संगम और पीएसबी मंथन बैठकों से जुड़ी है। ज्ञान संगम पहली बार जनवरी 2015 में पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित किया गया था। इसने सरकारी अधिकारियों, बैंक अधिकारियों और अन्य हितधारकों के बीच संवाद को बढ़ावा दिया, जिससे पीएसबी में व्यापक सुधारों की आवश्यकता पर

बल मिला। नवंबर 2017 में पीएसबी मंथन कार्यक्रम में 250 वरिष्ठ अधिकारियों और सरकारी प्रतिनिधियों ने भाग लिया और पीएसबी सुधार एजेंडा तैयार किया। ईज़ के प्रत्येक संस्करण ने पिछले संस्करणों को आगे बढ़ाया है, जिसमें नई पहल और तकनीकें पेश की गई हैं:

- ❖ **ईज़ 1.0 (2018–2019):** ईज़ 1.0 में स्वच्छ और स्मार्ट बैंकिंग पर ध्यान केंद्रित किया गया। शीर्ष प्रदर्शनकर्ता: पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा और भारतीय स्टेट बैंक। ईज़ 1.0 के 6 विषय थे:
 - i. जिम्मेदार बैंकिंग;
 - ii. ग्राहक जवाबदेही;
 - iii. ऋण वसूली;
 - iv. एमएसएमई के लिए उद्यम मित्र के रूप में पीएसबी;
 - v. वित्तीय समावेशन और डिजिटलीकरण;
 - vi. अभिशासन व मानव संसाधन।
- ❖ **ईज़ 2.0 (2019–2020):** ईज़ 2.0 में स्मार्ट तकनीक-सक्षम बैंकिंग पर जोर दिया गया। शीर्ष प्रदर्शनकर्ता: बैंक ऑफ बड़ौदा, भारतीय स्टेट बैंक और ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स। ईज़ 2.0 का विषय भी ईज़ 1.0 जैसा ही था।
- ❖ **ईज़ 3.0 (2020–2021):** ईज़ 3.0 में प्रौद्योगिकी-सक्षम सरलीकृत और सहयोगी बैंकिंग पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जिसमें लोन 59 मिनट, डायल-ए-लोन और क्रेडिट@क्लिक जैसी पहल शामिल थे। शीर्ष प्रदर्शनकर्ता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया। ईज़ 3.0 के प्रमुख 5 विषय थे:
 - i. आकांक्षी भारत के लिए स्मार्ट लेंडिंग;
 - ii. तकनीक-सक्षम बैंकिंग में आसानी;
 - iii. संस्थागत विवेकपूर्ण बैंकिंग;

iv. अभिशासन और परिणाम केंद्रित मानव संसाधन बनाम वित्तीय समावेशन;

v. ग्राहक सुरक्षा को गहरा करना।

- ❖ **ईज़ 4.0 (2021–2022):** ईज़ 4.0 तकनीक-सक्षम, सहयोगी और सरलीकृत बैंकिंग के लिए प्रतिबद्ध था। शीर्ष प्रदर्शनकर्ता: बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और केनरा बैंक। ईज़ 4.0 के प्रमुख 6 थीम थे:
 - i. आकांक्षी भारत के लिए स्मार्ट लेंडिंग;
 - ii. लचीली तकनीक के साथ नए युग की 24x7 बैंकिंग;
 - iii. तालमेलपूर्ण परिणामों के लिए सहयोग करना;
 - iv. बैंकिंग की तकनीक-सक्षम ईज़;
 - v. विवेकपूर्ण बैंकिंग को संस्थागत बनाना;
 - vi. अभिशासन और परिणाम केंद्रित मानव संसाधन।
- ❖ **ईज़ 5.0 (2022–2023):** ईज़ 5.0 का उद्देश्य डिजिटल अनुभव, डेटा-संचालित, एकीकृत और समावेशी बैंकिंग को बढ़ाना था। इसमें सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों और कृषि पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पाँच थीम के तहत 24 कार्य बिंदु शामिल हैं। शीर्ष प्रदर्शन करने वालों में भारतीय स्टेट बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा शामिल थे। 'कॉमन रिफॉर्म्स एजेंडा' ने बेहतर डिजिटल ग्राहक अनुभव और डेटा-संचालित, एकीकृत बैंकिंग पर जोर दिया। 2022 में, नई दिल्ली में ईज़ की अगली बैठक ने इस एजेंडे को और मजबूत किया, जिसमें तीन प्रमुख स्तंभों की अवधारणा बनाई गई:
 - i. कॉमन रिफॉर्म्स एजेंडा;
 - ii. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए 3 साल का कार्यनीति रोडमैप;
 - iii. पीएसबी सहयोग।
- ❖ **ईज़ 6.0 (2023–2024):** वित्त वर्ष 2023–24 में ईज़ 6.0, चार विषयों के अंतर्गत 22 कार्य बिंदुओं के

साथ आधुनिक क्षमताओं द्वारा सक्षम ग्राहक-अनुकूल बैंकिंग पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

- ग्राहक सेवा में डिजिटल सक्षमता के साथ उत्कृष्टता प्रदान करना;
- एनालिटिक्स का उपयोग करके व्यवसाय में सुधार;
- स्वचालन और नए ऑपरेटिंग मॉडल के माध्यम से क्षमता निर्माण को बढ़ाना, क्लाउड प्रौद्योगिकियों को अपनाना और जलवायु जोखिम प्रबंधन और साइबर सुरक्षा को मजबूत करना;
- कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि।

बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार: प्रौद्योगिकी-संचालित सुधार

प्रौद्योगिकी ईज सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीएसटी एकीकरण, psbloansin59minute.com प्लेटफॉर्म और बिल डिस्काउंटिंग के लिए ट्रेड्स प्लेटफॉर्म जैसी पहल विभिन्न स्रोतों से डेटा का लाभ उठाती हैं ताकि त्वरित ऋण मंजूरी प्रदान की जा सके और डिजिटल ऋण देने की सुविधा मिल सके।

बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार: ग्राहक सेवा और वित्तीय समावेशन:

ग्राहक सेवा में सुधार और वित्तीय समावेशन को गहरा करना ईज के प्रमुख पहलू हैं। पीएसबी ने अपनी पहुँच का विस्तार किया है, जिससे हर गाँव के 5 किलोमीटर के भीतर बैंकिंग सेवाएँ सुनिश्चित हुई हैं। प्रधानमंत्री जन-धन योजना जैसी पहलों ने लगभग सार्वभौमिक वित्तीय समावेशन हासिल किया है, जिसमें लाखों नए बैंक खाते विभिन्न वित्तीय सेवाओं से जुड़े हैं।

❖ **ईज 7.0 (2024-25):** ईज 7.0 सुधार एजेंडा वित्त वर्ष 2024-25 के लिए बहुत ही व्यापक है। सामान्य तौर पर ईज 7.0, ग्राहक सेवा में सुधार करने, उन्नत प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने, जलवायु संबंधी जोखिमों का प्रबंधन करना और बैंकिंग प्रथाओं को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली को आधुनिक बनाना

है। इस सुधार के माध्यम से सृजन का लक्ष्य है एक अधिक लचीला, ग्राहक केंद्रित और भविष्य के लिए तैयार बैंकिंग क्षेत्र, जो देश को विकसित भारत की ओर अग्रसारित करता है।

निष्कर्ष:

ईज सुधारों का यह व्यापक अवलोकन, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए प्रमुख पहलों, उनके प्रभाव और भविष्य की रूपरेखा की स्पष्ट समझ प्रदान करता है।

बैंकिंग क्षेत्र में ईज सुधार इस प्रकार वित्तीय स्थिति को मजबूत करते हुए ग्राहक अनुभव को संवर्धित कर सकता है:

इसके लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास और निवेश की आवश्यकता है। ईज सुधार प्रक्रिया के अंतर्गत ग्राहक सेवा पर बल दिया गया है, जिसमें निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

- इस दिशा में बैंकों के आंतरिक और बाहरी शाखा परिवेश में सुधार होना;
- ग्राहकों को त्वरित और विनम्र सेवा प्रदान किया जाना जिससे शिकायतों की संख्या में कमी आ सके;;
- ग्राहकों के साथ प्रभावी संचार एक अन्य प्रमुख क्षेत्र है जहां बैंकों को आवश्यकता है ग्राहकों को कई चैनलों के माध्यम से जैसे व्हाट्सएप, एसएमएस और इंटरनेट बैंकिंग के रूप में उनके निर्दिष्ट रिलेशनशिप मैनेजर्स के बारे में सूचित करें। ये चैनल सुनिश्चित करते हैं कि ग्राहकों को यह जानकारी हो कि व्यक्तिगत सहायता के लिए किससे संपर्क करना है, जिससे ग्राहक सेवा में सुधार हो।
- ग्राहकों के सभी शिकायतों को दर्ज किया जाना;
- ऑनलाइन मृत्यु दावा निपटान पोर्टल को लोकप्रिय बनाना और कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा निर्धारित टीएटी के भीतर उनका निपटान सुनिश्चित करना;
- ग्राहकों से फीडबैक प्राप्त किया जाना सुनिश्चित करना, ग्राहकों को शिक्षित करके डोर स्टेप बैंकिंग के अंतर्गत पंजीकरण की संख्या बढ़ाया जाना।



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Painting



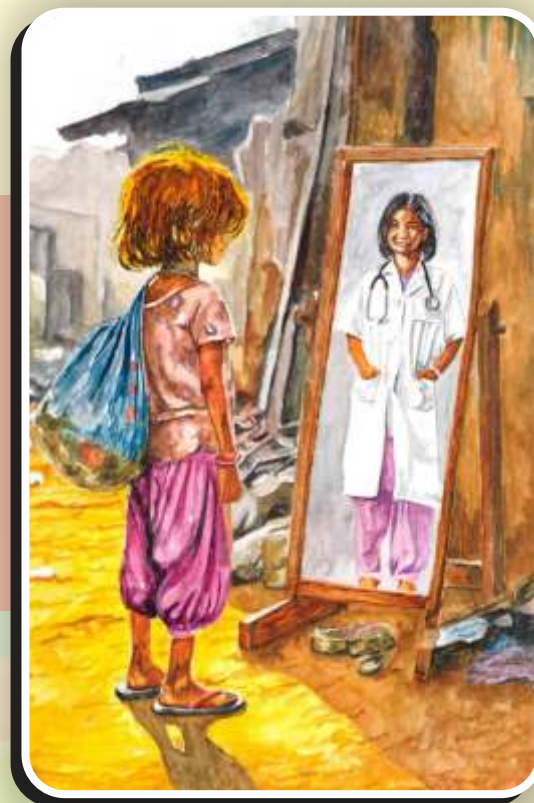
Antu Singh
CSA
Sriganganagar



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Painting



Ankit Mishra
CSA
Ranchi Harmu





Shreyas Contest 2024
1st Prize
Short Story English

PRICE OF A GIFT



D Bharathi
CSA
Zonal Inspectorate
Bengaluru

It was his first day at this reputed software company. Continuous twitching of fingers that held a file and tiny sweat drops on brows indicated that he was fraught with tension. Today was pivotal, he had to prove himself to that one person whom he owed everything, including his presence at this prestigious company. The bewildered gazes that followed him, though uncomfortable were not unfamiliar. Ignoring everything, he scanned the various name boards on transparent cubicles, searching for the name 'Ganesh'. Upon finding, he approached the glass door, knocked on it gently, stepped inside and introduced himself in a voice barely above a whisper. Ganesh's welcoming smile eased his nerves, though the keen observer in Ganesh remained perceptive of the young man's humble appearance. Karthik then handed over a sheet of paper from his file. Ganesh's eyes widened in wonderment on noticing it was Karthik's appointment letter. Karthik noticed this reaction, but remained silent, fully aware of the incongruence between his appearance and his achievements. Ganesh then called for his resume and was astonished to learn that Karthik had graduated in Electronics Engineering from one of the most prestigious Institutions in the country, renowned for its academic excellence. Congratulating, he introduced Karthik to his team and assigned him a cubicle right opposite his. He also provided him books in programming and allowed him two days to acclimatize to the new environment.

During break, when all team members left for tea, Karthik stayed glued to his chair. Later during lunch hour too, he stuck there. Ganesh noticed this pattern and concerned about the new recruit's

isolation, invited him for lunch. He struck a conversation enquiring about his academic interests and strengths. Karthik mumbled, stammered and with extreme difficulty wove a reply in fragmented English. Ganesh's perceptive recognized the young man's low confidence. It was his third day in office and Karthik had failed to make any acquaintance. However, it was time to allocate him work. Ganesh assigned a programming task expecting him to cut a sorry figure. To his amazement, Karthik completed the work well before time showcasing exceptional analytical skills. This achievement ignited hope in Ganesh who gradually increased the complexity of assignment and this was consistently met by Karthik, several times exceeding expectations and gradually winning his boss's confidence. Ganesh's only regret was while this core member of his team was extremely efficient, he lacked communication skills and dynamism. So, one day over lunch, Ganesh enquired him about his family, mainly to analyze his background and understand the reason for lack of confidence. Karthik by now had developed sufficient confidence in his boss to open up.

He narrated that he hailed from a Kuggramam (meaning remote village in local language) with a population of about 120 people in 20 households. The village lacked public transport, medical or educational resources. Children desirous of education had to walk 6 kilometres each way to a Government school in neighbouring village. Karthik's family comprised of his parents, a brother, brother's wife and their son. His two elder sisters were married and they lived with their spouse in nearby villages. His father, basically an agriculturist owned a small inherited agricultural land. He grew

few vegetables which were sold by Karthik's elder brother in neighbouring villages. Apart from this, the family reared livestock in small numbers. Karthik walked 12 kms everyday to this school in the neighbouring village and on returning home assisted his father with live stock. Despite these challenges, he excelled academically, becoming the first student in his entire village to get through tenth board exams successfully. The school had never seen a successful candidate in board exams since its inception and Karthik created glimmer in its history. Even with poor infrastructure and education facilities, he could secure a distinction. But unfortunately poverty prevented him from continuing his education. Forced to contribute to family's agricultural work, Karthik's dream of further education seemed lost. A student who was so passionate about studies, felt disappointed. But luck had other plans for him. When Karthik's father fell seriously ill, a visiting doctor noticed Karthik's adeptness at repairing a broken agricultural tool and was impressed. On learning about Karthik's academic achievement, the doctor aspired to sponsor his education. When Karthik had thought all doors for his education was closed, he realized that God had kept one window open. With this his second innings in education started. With college in nearest town (60 kms away) offering courses in diploma, Karthik took up Diploma in Electronics. Doctor suggested that he stay in college hostel to save on travelling time and shouldered the responsibility of paying hostel fees. This helped Karthik immensely. With renewed focus and determination, he excelled in diploma, securing second rank in State. It was a moment of pride for his family and the doctor. Rule of the land was that first two rank holders in diploma got direct admission to Second year Engineering in their respective courses at the most renowned Educational Institution of their State. By merit of his second rank, Karthik was eligible for admission into second year engineering in Electronics stream in this renowned institution situated in a metropolitan city. But he had other plans, he wanted to find a job befitting his diploma

qualification and start earning. This way he could support his family and also avoid being a burden on the Doctor. But the Doctor would not listen and insisted that he join engineering. He offered to shoulder hostel, mess and college fees. Karthik felt too delicate to accept such huge favour, but fuelled by passion for studies and the doctor's insistence, he found himself in this city to pursue engineering.

It was his first exposure to city life and he was overwhelmed by the contrast between his rustic upbringing and city's sophistication. Most of his classmates came from affluent backgrounds, wore branded clothes and spoke fluent English. Having studied in local language throughout, Karthik struggled even with basic English. Being high on ethics, he stood strong by the principle of utilizing doctor's financial help only for studies and not even for clothes. He was admonished, belittled and ridiculed several times for his dresses and vocabulary. Though his heart cried out each time, he had always maintained his composure. However inferiority seeped in and he preferred to remain mum and secluded. In addition to this, he now had to switch over to English medium of instruction. A very tough phase in life, Karthik had to stand up to challenges, both internal and external. But his determination remained undeterred. With logic and rational thinking, he adjudged that he was amongst the blessed few to get a new break in life. Expenses borne by the doctor in terms of college, hostel and mess fees acted as a catalyst for him to overcome trivial, shallow and self-limiting thoughts. Through relentless efforts and focus on studies, he whopped distinction in all semesters and while in fourth year of engineering, he was selected by a reputed software company in campus selection, marking the beginning of his professional journey. And now he was here, in this company working for a team led by Mr. Ganesh.

As Karthik completed his story, Ganesh was deeply moved. He suggested Karthik join English speaking courses to build up confidence.

Karthik then visited the doctor with fruits, flowers, a heart overflowing with gratitude, and with an intent to repay all expenses. The doctor asked, **“DO YOU WANT TO REPAY WHAT I CONSIDER A GIFT TO YOU. WELL THEN, I SHALL FIX A SUITABLE PRICE FOR IT. BUT PROMISE THAT YOU WILL PAY IT, NO MATTER WHAT”**.

When Karthik promised, the doctor went on **“FIND A FINANCIALLY DISADVANTAGED STUDENT WITH A PASSION FOR LEARNING. TAKE UP THE ENTIRE RESPONSIBILITY OF EDUCATING HIM AND ENSURE THAT HE FINDS A FOOTING IN LIFE. THIS IS THE PRICE YOU SHALL PAY FOR MY GIFT”**.

Karthik stood there, rendered speechless by the doctor's profound gesture. The doctor had made an extraordinary request that spoke volumes about his character. Here was a man who had invested in the future of a child totally unrelated to him, demonstrating an unparalleled commitment to

nurturing talent and focusing growth. And when he asked for something in return, it was not monetary but fostering another's potential. His request was not merely a transaction, but profound expression of belief in education as a transformative power. His approach was not towards personal gain but about creating lasting impact through betterment of others.

Unwavering determination of Karthik though undoubtedly deserves all appreciation, the true hero in this narrative is the doctor who exemplifies highest virtues of humanity. His magnanimity sends a powerful message to society that true welfare lies in mutual help and support.

“PRICE OF MY GIFT” had a surpassing influence on Karthik. Through his actions and principles, Karthik continues to honour the doctor's legacy. He's now married and father of two kids, a son and an adopted daughter.





Shreyas Contest 2024
1st Prize
Short Story Hindi

राह भटकती चिट्ठी का सफर

रोचक दीक्षित

प्रबंधक

मर्चेंट प्रबंधन अनुभाग,
डिजिटल बैंकिंग सेवाएं विभाग
प्रधान कार्यालय बेंगलूरु



आज फिर मयंक दफ्तर से थका हुआ घर लौटा और घर के बाहर रखे लेटर बॉक्स को खोला। ऐसा करना उसकी रोज़ की दिनचर्या थी। आज उसे उसमें बिजली का बिल और एक पुराना-सा लिफ़ाफ़ा मिला। उसने उन्हें उठाया और घर के अंदर चला गया। अंदर आकर मयंक ने पहले अपने कपड़े बदले, हाथ-मुँह धोए और झट से लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें एक नाज़ुक सी चिट्ठी में लिपटे हुए कुछ रुपये रखे हुए थे। किसी ने कभी भी उसे इस तरह से पैसे नहीं भेजे थे और आस-पास ऐसा कोई अवसर भी नहीं था।

मयंक ने पढ़ना शुरू किया और पढ़ता चला गया और तभी अचानक कुछ महसूस हुआ। वह चिट्ठी किसी और के लिए थी। चिट्ठी किसी विक्रम नामक व्यक्ति ने अपनी माँ को लिखी थी। मयंक ने बीच चिट्ठी में लिफ़ाफ़े के ऊपर लिखा हुआ पता देखा और चौंक गया। पता उस शहर का ही था, जो उसके घर से काफी दूर था। तारीख भी छह साल पुरानी थी। मयंक ने खुद को मूर्ख महसूस किया कि वह बिना पता देखे चिट्ठी पढ़ रहा था, लेकिन यह बहुत स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। यद्यपि किसी को किसी दूसरे का पत्र नहीं पढ़ना चाहिए, लेकिन उसने उस पर एक बार फिर से नजर डाली और महसूस किया कि वह महज कागज का टुकड़ा नहीं था, बल्कि उसमें सच्ची भावनाएँ छिपी थीं। उन्होंने सोचा कि पत्र और पैसे को उसके असली हकदार तक वापस पहुंचा दिया जाना चाहिए।

अगले दिन, मयंक ने डाकघर जाने का फैसला किया, ताकि वह चिट्ठी और पैसों को सही पते पर भेज सके। लेकिन जब उसने डाकघर में जाकर पूरी बात बताई, तो वहाँ के कर्मचारियों ने उसकी बात में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। एक कर्मचारी ने कहा – यह पुरानी चिट्ठी है और इसके बारे में हम कुछ नहीं कर सकते। आज का ही बहुत सारा काम पूरा करना है। मयंक

ने उनके सामने अपनी बात रखी लेकिन कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने कहा, “साहब, यह पुरानी चिट्ठी है और लिफ़ाफ़ा खुल भी चुका है। आप इसे फेंक दीजिए और पैसे भी रख लीजिए।”

मयंक ने फिर भी हार नहीं मानी और विक्रम के घर तक जाने का फैसला किया। वह उसी पते पर गया जो चिट्ठी पर लिखा हुआ था। वह उत्साह से उस स्थान पर पहुंचा और दरवाजे की घंटी बजाई। एक आदमी ने दरवाजा खोला लेकिन वह विक्रम नहीं था। उस घर में चार लोगों का एक परिवार रहता था, जिन्होंने उसकी बात विनम्रता से सुनी लेकिन वे असहाय थे। वे विक्रम के बारे में कुछ नहीं जानते थे। उन्होंने बताया कि यह सरकारी आवास था और नियमों के मुताबिक, यह घर हर कुछ साल बाद किसी दूसरे कर्मचारी को दे दिया जाता है।

“क्या आप जानते हैं कि आपसे पहले यहाँ कौन रहता था?” उसने उस सज्जन व्यक्ति से पूछा।

“हम उनसे कभी नहीं मिले लेकिन हमने सुना है कि प्रवीण नामक एक नौसेना अधिकारी यहाँ रहता था। पिछले दो वर्षों से हम यहाँ हैं। हो सकता है जिन्हें आप ढूँढ़ रहे हैं उनका तबादला किसी दूसरे शहर में हो गया हो।” उन्होंने उत्तर दिया।

मयंक ने उन्हें अपना समय देने के लिए धन्यवाद दिया और वहाँ से चले गए। यदि विक्रम अब किसी दूसरे शहर में चला गया है, तो उसे ढूँढ़कर उसका पत्र लौटाना निश्चित रूप से संभव नहीं था। जब वह अपने घर वापसी के लिए निकलने वाला था, उसने सोचा कि एक बार पास की दुकान से पूँछ लेना चाहिए। दुकानें आमतौर पर स्थिर होती हैं और शायद उसे विक्रम का संपर्क मिल जाए। पहले दुकानदार को तो कुछ पता नहीं था, लेकिन दूसरे ने पुष्टि कर दी कि कुछ साल पहले विक्रम नाम का व्यक्ति यहाँ रहता था।

दुकानदार ने कुछ सोचते हुए कहा – "मेरे पास उसका नंबर नहीं है साहब, मगर मैंने सुना था कि वह यहाँ से विदेश चला गया था।"

अब असंभव और भी असंभव हो गया। चाहे उनकी कितनी भी सद्भावना क्यों न हो, पत्र दूसरे देश नहीं भेजा जा सकता था। वह निराश था, क्योंकि उसे बेहतर समापन की उम्मीद थी लेकिन उसने पहले ही अपनी पूरी कोशिश कर ली थी। अब वापस जाने का समय आ गया था। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था।

"उसकी माँ यहाँ से लगभग सौ किलोमीटर दूर एक शहर में रहती है। मुझे याद है, वहाँ उनका पैतृक घर था। अगर आप चाहते हैं, तो मैं आपको रास्ता बता सकता हूँ।" – दुकानदार ने उसे पीछे से पुकारा।

यह मयंक के लिए आशा की किरण थी। जानकारी वर्णनात्मक नहीं थी, लेकिन एक प्रयास करने के लिए पर्याप्त थी। दुकानदार ने उसे उस घर के स्थान के बारे में कुछ जानकारी दी। मयंक ने उसे धन्यवाद दिया और आगामी रविवार को वहाँ जाने का फैसला किया। वह घर लौटा और अपनी पत्नी को उस दिन की सारी बातें बताईं। वह बेसब्री से उसका इंतजार कर रही थी और उसके अभियान में उसका पूरा साथ दे रही थी।

रविवार की सुबह उन दोनों ने अपनी खोज यात्रा फिर से शुरू की। वे लगभग ढाई घंटे में अपने गंतव्य तक पहुँच गए और कुछ संघर्ष और इधर-उधर पृच्छताछ के बाद घर ढूँढ़ निकाला। आखिर आज पत्र इच्छित प्राप्तकर्ता तक पहुँचने वाला था। विक्रम को भी यह खुशखबरी स्वतः ही मिल जाएगी, उन्होंने सोचा। उन्होंने दो बार दरवाजे की घंटी बजाई लेकिन एक मिनट तक किसी ने दरवाजा नहीं खोला। फिर एक वृद्ध महिला ने दरवाजा खोला और सौम्य मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया।

"माँ जी, हम आपके बेटे का पत्र लाए हैं, जो शायद विदेश चले गए हैं।" – मयंक ने कहा।

"पत्र? विदेश!" महिला सचमुच हैरान थी।

"हाँ। आप विक्रम की माँ हैं ना?" उसने फिर संदेह से पूछा।

"हाँ, विक्रम मेरा बड़ा बेटा है मगर...." उन्होंने काँपती आवाज़ में कहा और बीच में ही रुक गईं।

मयंक ने बिना ज़्यादा सवाल किए उन्हें पत्र और पैसे थमा दिए। उनकी आँखों में आँसू थे और पत्र को देखते ही वह भावुक हो गईं। उसने पत्र खोला और मन ही मन पढ़ना शुरू किया। जितना वह पढ़ती जा रही थी, उतना ही वह रोती जा रही थी। पत्र के अंत में वह पूरी तरह से फूट फूटकर रो पड़ी और पत्र को अपने गले से लगा लिया। हालांकि वह एक साहसी महिला थीं और कुछ मिनटों में उन्होंने खुद को शांत कर लिया। दंपति ने धैर्यपूर्वक इंतजार किया और इस बीच चुप रहे।

"विक्रम तो अब इस दुनिया में नहीं है। मेरा बड़ा बेटा, जो छह साल पहले फ़ौज में शहीद हो गया था", उन्होंने बताया और उस पत्र को वहाँ लाने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए अपना आभार व्यक्त किया। यह शायद उसकी माँ के लिए उसका आखिरी पत्र था। केवल माँ ही जानती थी कि वह कागज़ कितना कीमती था। उन्हें विक्रम पर बहुत गर्व था और उसकी शहादत पर भी।

"हमें माफ़ कर दीजिए माँ जी, हमें आपके पुराने पते के आस-पास किसी ने बताया कि आपका बेटा विदेश चला गया है।" – मयंक ने कहा।

"वह उसका छोटा भाई है। वह विक्रम की मौत के तुरंत बाद पढ़ाई के लिए विदेश चला गया और कभी वापस नहीं आया।" – माँ ने उन्हें बताया।

"वह आपको साथ ले जाने नहीं आया? क्या वह आपसे बात भी करता है?", मयंक ने घबराते हुए पूछा, कि कहीं वह ज़्यादा व्यक्तिगत तो नहीं हो रहा था।

"उससे बात किए हुए कई साल हो गए हैं। मैंने शुरू में उसके नंबर पर कॉल करने की बहुत कोशिश की लेकिन वह हमेशा बंद मिलता था। बाद में मुझे एहसास हुआ कि उसे शायद अब मेरी ज़रूरत नहीं है। मुझे हाल ही में पता चला कि उसने शादी

कर ली है और वहीं बस गया है, हालांकि उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।" उन्होंने बताया।

महिला की आंखों में आंसू थे, लेकिन उसने समय के साथ वास्तविकता को स्वीकार कर लिया था। लेकिन स्वार्थ, अज्ञानता और क्रूरता का यह चेहरा मयंक को हजम नहीं हो रहा था। एक बेटा अपनी माँ को ऐसे कैसे अकेला छोड़ सकता है? वह रात को चैन से कैसे सो पाता होगा?

मयंक ने उस वृद्ध महिला से कहा, "आप हमारे साथ चलिए, हमारे साथ ही रहिए। हम बहुत भाग्यशाली होंगे यदि आप हमारे यहां आकर रहेंगी।"

महिला पहले तो कुछ हिचकिचाई लेकिन फिर उन्होंने कहा, "आप दोनों का बहुत-बहुत धन्यवाद लेकिन मैं किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती। मैं और विक्रम की यादें यहाँ आराम से रहती हैं।"

"ऐसा मत कहिए! यह महज संयोग नहीं हो सकता कि इस बड़ी दुनिया में से इसी शहर में हमें ही इतने सालों के बाद यह पत्र मिला। यह तो किस्मत ही थी कि हम आपको ढूँढ पाए और

यहाँ आ पहुँचे। यह नियति नहीं तो और क्या है!" मयंक ने आश्चर्य होकर कहा। लेकिन वह अभी भी पूरी तरह से तैयार नहीं थी। वह उनके प्रति बहुत आभारी थी लेकिन यह एक बड़ा निर्णय था।

"मेरे पति ने कभी अपनी माँ को नहीं देखा है। हमें माँ की ज़रूरत उससे कहीं ज़्यादा है जितना आपको एक बेटे की है। कृपया हमारे साथ आइए और हमें माँ का प्यार पाने का मौका दीजिए। आप चिंता न करें, हम कभी-कभी यहाँ आते रहेंगे।" उसकी पत्नी नंदिता ने कहा।

उनकी आँखें नम हो गईं और उन्होंने प्रेम से पति-पत्नी को गले लगा लिया। वह हमेशा के लिए उनके साथ आने को तैयार हो गई और सामान बाँधने तथा कुछ पड़ोसियों से मिलने के लिए एक सप्ताह का समय मांगा। मयंक ने संपर्क विवरण का आदान-प्रदान किया और अभी के लिए अलविदा कहा। दोनों ने माँ के पैर छुए और खुद को धन्य महसूस किया। घर से बाहर निकलते समय, उनकी नज़र विक्रम की तस्वीर पर पड़ी और उन्हें एक पल के लिए लगा मानो वह मुस्कुरा रहा था। शायद वह उनकी आँखों का धोखा था, या शायद नहीं।

Off Beat Courses

Digital Marketing

This course focuses on promoting products or services using digital channels and technologies. It covers various aspects like Search Engine Optimization (SEO), Social Media Marketing (SMM), Content Marketing, Email Marketing, Pay-Per-Click (PPC) advertising (Google Ads), and analytics. It's a rapidly growing field with high demand.

Who is it for?

Creative individuals, those interested in online trends, business, and communication.

Career Prospects:

Digital Marketing Executive, SEO Specialist, Social Media Manager, Content Writer, PPC Specialist, Digital Marketing Analyst.





Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Short Story English

The Power of Thoughtful Service in Professional Life



Mohit Dev Subedi
Manager
MSME Sulabh, Dibrugarh

The year was 2014, and it was one of the most transformative times of my career. Having been recently promoted from the clerical cadre to an officer's role in the bank, I was still learning the ropes of my new responsibilities. My posting had taken me to Dibrugarh, a small yet vibrant town in Assam, known for its tea gardens and as the easternmost airport of India. The winter months in Dibrugarh were particularly harsh, with darkness setting in by 4:30 p.m., and by 5:00 p.m., it felt like the night had fully arrived.

One such cold winter evening, the entire branch was immersed in the usual end-of-day hustle. The counters were closed, cash was being tallied, and we were finalizing the day's transactions. For me, it was a routine day at work. The chatter of my colleagues, the shuffling of papers, and the clinking sound of cash being counted filled the air as we inched closer to closing time. Like everyone else, I was eager to wrap up and head home to escape the biting chill outside.

Suddenly, the monotony of the evening was interrupted by the sound of someone rattling the branch's locked grill. Looking up, I noticed an elderly man standing outside, trying to get the attention of the attender, who was busy arranging the day's slips behind the counter. The old man, dressed in a worn-out woollen coat, looked desperate as he shook the grill and pleaded, "Please, I have some urgent work. Let me in."

The attender, visibly irritated, dismissed his request with a loud and dismissive reply: "The bank is closed for the day. Come back tomorrow!"

The old man, however, did not leave. He continued to plead, his voice growing softer with every attempt. Watching this unfold, I felt a pang of sympathy. Something about his demeanour suggested this wasn't a man trying to cause trouble; he genuinely needed help.

I walked over to the attender and said, "Let's not send him away like this. Unlock the grill and let him in. Let's hear what he has to say."

The attender looked at me, clearly reluctant. "Sir, we're already late. If we let him in, it will delay everything!"

"I understand," I replied, "but let's help him. It won't take long."

Reluctantly, the attender unlocked the grill, and the elderly gentleman stepped inside. His face, weathered yet dignified, lit up with relief. He introduced himself as a longtime customer of the branch and explained his predicament. He had come to deposit some cash and renew a couple of fixed deposits. However, due to his tight schedule, he hadn't been able to visit the bank earlier in the day. "This has been pending for five days now," he said, "but I always seem to arrive too late."

I assured him we would help. Turning to the cashier, I inquired if the cash counter was still operational. Being a high-cash-inflow branch, it was common for us to handle cash transactions until 6:00 p.m. The cashier confirmed this, and I personally attended to the old man's requests.

As I worked on his transactions, I couldn't help but notice the details on his account. His family had

multiple accounts with us, including several high-value fixed deposits. This wasn't just an ordinary customer; he and his family were deeply invested in our bank.

After completing his transactions and renewing his fixed deposits, I updated his passbook and handed it back to him. He looked at me and smiled warmly, saying, "Thank you, young man. I've been carrying this cash for days now, and today must truly be my lucky day."

Feeling a sense of accomplishment, I smiled back and asked if there was anything else he needed help with. That's when he dropped an unexpected piece of information: "I should tell you - I'm a lawyer, and I'm currently fighting a case against your bank."

For a moment, I was stunned. Here I was, going out of my way to assist someone who was legally challenging the institution I represented. But then I quickly composed myself and replied, "Sir, that is your professional life, and this is your personal life. This passbook, your wife's fixed deposits, and your savings account represent the trust you have placed in us. I'm pleased to assist you, regardless of the case."

The old man chuckled at my response. "You're wise for someone so young," he said. "Thank you for understanding."

I walked him to the gate, thanked him for being a valued customer, and wished him a pleasant evening.

A month and a half later, an official summon from the district court arrived at our branch. The case the old lawyer had mentioned was now a reality, and my branch manager informed me that I was required to appear as a witness.

Although I had done nothing wrong, the idea of standing in a courtroom filled me with dread. I had never been inside a court before, and the thought of testifying in a legal case against my own bank was nerve-racking.

In preparation, I contacted the bank's legal counsel. A few days before the hearing, he visited the branch and sat down with me to review the case. He patiently explained the details, reassured me, and outlined what I needed to do when called to testify.

By the time the court date arrived, I felt better prepared but still nervous. On the morning of the hearing, I reached the court premises early, my palms sweaty and my heart racing.

As I entered the courtroom, my eyes scanned the room, and there he was - the same old lawyer I had assisted that winter evening. Our eyes met, and he smiled at me. Recognizing him brought a sense of calm, and I smiled back.

When the proceedings began, I braced myself for what was to come. But then, something unexpected happened. The judge announced that the counterparty had withdrawn the case against the bank. I was stunned.

Afterward, I learned that the old lawyer had convinced his client to drop the case. I couldn't say for sure what had prompted him to take such a step, but I couldn't help but think back to that evening at the branch. Perhaps my small act of kindness had left a lasting impression.

As I reflect on that experience, I realize how powerful even the smallest gestures of empathy can be. That day, I could have easily ignored the old man's pleas and focused on wrapping up my work. Instead, I chose to listen, to help, and to connect.

What I learned is that professionalism doesn't mean merely adhering to rules and processes; it also means treating people with respect and compassion. In doing so, we not only fulfil our duties but also build trust and goodwill that can have far-reaching effects.

That old lawyer's smile in the courtroom is a memory I will cherish forever. It reminds me that our actions, no matter how small, can make a difference in ways we may never fully understand.



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Short Story Hindi

सकारात्मक सोच : जो होता है अच्छे के लिए ही होता है



आशीष रंजन

वरिष्ठ प्रबंधक
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान

एक बार छेदीलाल नाम का एक युवक दिल्ली के लक्ष्मी विहार में निवास करता था, जो आई ए एस परीक्षा की तैयारी करने दिल्ली आया था। छेदीलाल बिहार के दरभंगा शहर का रहने वाला था और बचपन से ही सकारात्मक सोच वाला था। उसके घर वाले, मित्र और परिजन भी उसके सकारात्मक सोच से काफी खिन्न रहते थे। छेदीलाल बुरी से बुरी परिस्थिति में भी सकारात्मक अर्थ निकाल ही लेता था। उसका ये मानना था कि जीवन में जो होता है अच्छे के लिए ही होता है। दो बार आई ए एस की परीक्षा में असफलता मिलने के बावजूद भी उसका ये मानना था कि जो होता है अच्छे के लिए ही होता है, मुझे इस विषय को एक और वर्ष पढ़ने का अवसर मिला है। उसके इस सकारात्मक सोच से दिल्ली के उसके मित्रजन भी परेशान होने लग गए।

दिल्ली आने से पहले छेदीलाल अपने बचपन के मित्र भयानक सिंह के साथ हर सुबह अपने गाँव के सीमा के बाहर तक टहलने और दौड़ने का अभ्यास करने के लिए जाया करता था, उन दिनों दोनों मित्र दसग की परीक्षा की तैयारी किया करते थे।

एक बार की बात है, छेदीलाल अपने बचपन के मित्र भयानक सिंह के साथ हर सुबह की भांति टहलने और दौड़ने के अभ्यास के लिए अपने गाँव के सीमा के बाहर तक चले गए और वापस लौटते समय भयानक सिंह का पांव एक पत्थर से टकरा गया और वो नीचे गिर पड़ा। जमीन पर गिरते ही उसका हाथ एक टूटे हुए शीशे के टुकड़े से लग गया और उसके दाहिने हाथ की कानी उंगली कट कर लटक गई। भयानक सिंह पीड़ा के मारे वही बैठ कर रोने लगा। उसको रोता हुआ देखकर छेदीलाल ने उसको सकारात्मक रूप से समझाते और दिलासा देते हुए कहा कि जो होता है अच्छे के लिए ही होता है। बस फिर क्या था, इतना सुनते ही भयानक सिंह की पीड़ा गुस्से में

बदल गई और उसने छेदीलाल को जोर का धक्का देकर अलग गिरा दिया। वो छेदीलाल को अकेले रास्ते पर छोड़कर वहां से अपने घर की ओर भाग आया। अपने गाँव आकर उसने पुलिस से शिकायत की कि उसके मित्र छेदीलाल ने रास्ते में उसके साथ मारपीट की और उसपर जानलेवा हमला कर उसके हाथ की उंगली काट दी। एफआईआर दर्ज होते ही पुलिस ने अपनी कार्रवाई शुरू कर दी। इधर जैसे ही छेदीलाल घर वापस आया वैसे ही पुलिस ने उसको भयानक सिंह की शिकायत के आधार पर गिरफ्तार कर लिया और जेल में बंद कर दिया।

छेदीलाल को जेल में बंद देख कर भयानक सिंह के घाव भी अब भर आये थे। तीन दिन बाद भयानक सिंह ने रात में सोते समय ये सोचा कि छेदीलाल तो जेल में बंद है फिर क्यों न अकेले ही टहलने और दौड़ने का अभ्यास करने चला जाए। ये सोच कर भयानक सिंह सुबह-सुबह अकेले ही टहलने और दौड़ने का अभ्यास करने चल पड़ा। चलते और दौड़ते उसको ये अंदाजा नहीं लग पाया कि वो अपने गाँव की सीमा से बहुत आगे कहीं दूर जंगल की तरफ बढ़ गया है। दूर-दूर तक किसी भी इंसान को ना देख उसको अब डर लगने लगा और वो वापस जाने के बारे में सोचने लगा।

अचानक उसको ये आभास हुआ कि वो वापस जाने का रास्ता भूल चुका है। फिर भी उसने वापस आने के लिए विपरीत दिशा के किसी भी रास्ते की ओर जाना शुरू कर दिया। वापस आते-आते उसने देखा कि थोड़ी दूर पर एक इंसान का समूह आग जलाकर उसके चारों तरफ घेरकर कुछ सम्मेलन कर रहे हैं। जब वो थोड़ा और करीब आया तो उसने देखा कि ये इंसान जैसे हैं, लेकिन इंसान ना होकर एक जंगल में छिपी हुई अमानवीय जनजातियां हैं, जो नरभक्षी होते हैं और उनकी भाषा भी अलग होती है। अभी भयानक सिंह ये सब सोच-

विचार ही कर रहा था कि तभी उन जनजातियों के समूह में से किसी एक ने उसको देख लिया और खुशी से पागल हो गया। डरकर भयानक सिंह ने आव देखा ना ताव और वहां से और तेजी से भागने लगा, जैसे मानो वो आज दरोगा के शारीरिक परीक्षा में दौड़ रहा हो।

उन जनजातियों में से कुछ लोगों ने भयानक सिंह का पीछा करना शुरू कर दिया। आखिरकार भयानक सिंह उन जनजातियों के हाथों पकड़ा गया और वे लोग उसको लेकर वहां हो रहे सम्मेलन में पहुँचे। वहां पहुँचने के बाद भयानक सिंह ने यह महसूस किया कि ये जनजाति वाले लोग अपनी कुल देवी की पूजा कर रहे हैं और उस पूजा को सफल बनाने और उनकी कुल देवी को खुश करने के लिए एक नर की बलि की जरूरत थी। भयानक सिंह अब भयानक मुश्किल में फँस गया था और अपने होशियार मित्र छेदीलाल को याद करने लगा। उन लोगों को भयानक सिंह के रूप में बड़ी आसानी से एक नर मिल गया था जिसकी बलि देने की तैयारी शुरू हो गई थी।

अब भयानक सिंह को नहला-धुलाकर उसके शरीर पर घी और चंदन का लेप लगाना शुरू कर दिया गया और भयानक सिंह का सिर ओखली में रख कर वहां के पंडितों ने उसका सिर काटने से पहले मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। अचानक से उन पंडितों में से एक पंडित की नज़र भयानक सिंह के हाथ के उंगली पर पड़ी और वो चिल्ला कर अपनी भाषा में बोला कि ये बलि रोक दो। उस पंडित ने सभी को बताया कि इस नर के हाथ की एक उंगली कटी हुई है, इस प्रकार ये पूर्ण नर नहीं है। पूर्ण नर की बलि न देने से उनकी कुल देवी नाराज हो जाएंगी और उनके कुल का नाश हो जाएगा, उन सभी को नर बलि के लिए एक पूर्ण नर की खोज करनी ही पड़ेगी। उन सभी लोगों ने भयानक सिंह से अपनी ही भाषा में माफ़ी मांगी और सम्मानपूर्वक उसके गांव की सीमा तक छोड़ दिया।

गाँव में प्रवेश करते ही भयानक सिंह फूट-फूट कर रोने लगा और गाँव वालों को सारी कहानी बताने लगा कि कैसे वो मौत के मुँह से बचकर जिंदा वापस आया है। उसने अपने मित्र छेदीलाल की बात याद रखी कि जो होता है अच्छे के लिए ही

होता है। यदि आज उसके हाथ की एक उंगली नहीं कटी होती तो उसका सिर कट गया होता। ये सोचकर उसको आत्मग्लानि हुई और वो अपनी शिकायत वापस लेने के लिए पुलिस स्टेशन गया।

पुलिस स्टेशन पहुँचकर भयानक सिंह ने अपनी शिकायत वापस ले ली और पुलिस से अनुरोध किया कि छेदीलाल निर्दोष है, उसको रिहा कर दिया जाए। पुलिस ने भयानक सिंह के अनुरोध पर छेदीलाल को रिहा कर दिया। छेदीलाल को जेल से बाहर आते देखकर भयानक सिंह रोते हुए अपने गुनाह कबूल करने लगा। उसने छेदीलाल के पैरों में गिरकर माफ़ी मांगते हुए जंगल की सारी कहानी सुना दी। ये सब सुनते ही छेदीलाल ने भयानक सिंह को गले से लगा लिया और फिर बोला कि तुमने मुझे जेल में बंद करवा दिया था, फिर भी मैं तुमसे बिल्कुल नाराज नहीं हूँ। क्योंकि जो होता है अच्छे के लिए ही होता है।

ये सुनते ही मित्र भयानक सिंह को फिर से गुस्सा आया और वो आगबबूला हो गया। उसने गुर्गकर छेदीलाल से पूछा कि अब इसमें क्या ही अच्छा है – जो मैंने तुम्हें जेल में बंद करवा दिया था। तभी छेदीलाल ने मुस्कराते हुए भयानक सिंह को समझाया कि अगर तुम मुझे जेल में बंद नहीं करवाते तो मैं रोजाना सुबह की तरह उस दिन भी तुम्हारे साथ टहलने और दौड़ने का अभ्यास करने जाता और तुम्हारे साथ नर बलि के लिए पकड़ा जाता। तुम बलि से बच गए क्योंकि तुम एक अपूर्ण नर थे, लेकिन मैं पकड़ा जाता और बलि चढ़ा दिया जाता क्योंकि मैं एक पूर्ण नर था। इसलिए जीवन में जो होता है अच्छे के लिए ही होता है।

इस प्रकार, अपने सकारात्मक सोच के लिए छेदीलाल को दूर-दूर तक के गांवों में भी जाना जाने लगा और दिल्ली तक उसकी प्रसिद्धि फैल गई।

सारांश:

इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि जीवन में किसी भी परिस्थिति में हमेशा सकारात्मक सोच के साथ संयम रखना चाहिए, इससे हमें परेशानियों से लड़ने और सफलता पाने में बल मिलता है। इसलिए जो होता है अच्छे के लिए ही होता है।



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Sketching



Seema Sharma

Officer
RAH, Kolkata- III



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Sketching



Antu Singh
CSA
Sriganganagar





Shreyas Contest 2024
1st Prize
Humourous Article

A Little Devil: Journey to Remember

**Shripad Sambmurthy
Gramopadhye**

Customer Service Associate
Bangadi Branch



"This can't be happening for real!". This was me regretting the decision of engaging in a conversation with a little boy who made my journey miserable with his not so innocent talks. "Now it's time for some revenge!", I thought. This may seem little overstated but let me narrate the happenings which landed me in that situation.

I used to travel by train from my hometown i.e. Dharwad (Karnataka) to Agra (Uttar Pradesh) where I was posted during my initial years of military service. This happened during one of these journeys in 2006. I was travelling in Goa Express which passes through many stations in Maharashtra and the tourists visiting Saibaba Mandir in Shirdi get on this train at Kopargaon Station. I was relaxing in my Side Lower berth when the train reached Kopargaon. Due to festive season, the train was packed and no berth was vacant. Many passengers boarded the train and some of them were travelling on waiting list also. One lady in her mid thirties entered our compartment along with her two sons and requested the fellow passengers in our compartment to provide some space to sit until their berths were confirmed and we all agreed. The elder son was polite but the younger one (not more than six-year-old) seemed mischievous as his eyes lit up upon entering the train as if he was looking at a playground.

I felt like talking to the little boy as he instantly became the center of attention with his playful nature and adorable appearance. I too wanted to impress the fellow passengers with my humour. Little did I know that it was a bad idea. I called him, "Chhotu, come here" (come here little boy), to

which he firmly replied with a big "NO!". His mother convinced him to talk to me and behave like a good boy like he always was. The little boy came towards me and slowly I started my conversation with him. I asked him his name, school, his hometown etc. and he replied all my questions politely. Then he asked me to tell him a story. I started making up a random story and told him that there was a little boy who was very mischievous. He jumped from the seat, stood in front of me and said, "Mein bhi bahut badmash hun, aap ko pata hai? Mummy ne mujhe Mandir mein daal ne ke liye coin diya tha, Mein daal ne ka naatak kiya lekin coin abhi bhi mere paas hai. Mujh se bada badmash koi nahi hai" (I am also very mischievous; you know? Mummy gave me few coins for offering for the temple hundi but I deceived her and the coins are still in my pocket. Hence, I am the naughtiest of all)." I felt defeated and I had to leave that story halfway.

Further, I asked him what he wanted to listen and he told me to tell ten stories. By that time, I became little cautious and started telling him little jokes and some moral stories. He kept irritating me by telling "Theek hai, theek hai, aage sunao" (alright, alright, tell further) in an annoying tone after every sentence. In the meantime, the train stopped due to some engine trouble and I was also running out of stories. The boy insisted me to think of some other stories. Then I went to washroom and came back after few minutes. He asked "Uncle kaha gaye the? Kuch sochne gaye the kya?" (Uncle, where have you been, did you go somewhere to think of stories), to which I promptly replied, "Washroom gaya tha, susu karne" (I went to washroom to pass the urine). Then

to my utter disbelief, he jumped right in middle of the compartment and shouted with his pinky finger in the air, "Uncle SuSu karne gaye the, Uncle SuSu karne gaye the" (Uncle had gone for urination). Everyone was trying to suppress their laughter. I was embarrassed and did not know what to do. I called him and asked in little angry tone, "Aisa kyon bola, tum jaate nahi ho kya?" (Why did you say that, don't you go?) to which he replied "Mein bhi jaata hun, lekin sab ko batata nahi" (I too go but I do not tell everybody). By that time, other passengers could not control themselves and burst into laughter. I felt digging my own grave if I continued to talk to that little devil any further.

"Now it's time for some revenge!", I thought. I decided to tell him a never-ending story inspired by one of the stories my uncle used to tell me when I was kid. I told the boy that I would tell him a story only if he did not interrupt in the middle. He said OK. I started, "Ek Jungle tha, usme ek sher rehata tha, uske do kaan the, do aankh the, ek muh tha aur chaar pair the" (There was a lion in a jungle, it has two ears, two eyes, one mouth and four legs). To my surprise, he was quiet and did not say any word. I felt good and continued the story by telling there was another lion in the same jungle and it also had two ears. He interrupted and said, "Haan, ek aur sher

tha, uske bhi do kaan, do aankh, ek muh aur chaar pair the, aage suano" (Yes, there was another lion and it also has two ears, two eyes, one mouth and four legs, tell further) in rather frustrated voice. I scolded him lightheartedly for interrupting me in the middle of the story and told him that he made me forget the rest of the story. He agreed for no further disruption. I continued and started the whole story again with a lion in a jungle and repeated the same story. He was listening quietly until I started telling him about an elephant in the same jungle and describing its body parts. He said, rather shouted, "Haan uske bhi char pair the, do aankh the etc..." (Yes, it also has four legs, two eyes etc...). "You are making the same mistake, you should not interrupt me while telling you a story", I said and prepared to start the story again. He could not take it any further and said with folding hands "Mere se galti ho gayi Uncle, mujhe maaf kardo. Mujhe aur koi kahani nahi sun ni hai" (Please forgive me Uncle, I made a mistake. I do not want to listen any story) and went back to his mother.

Even though other passengers did not seem to like the way I dealt with the little boy, I felt triumphant. Then I went to sleep in my berth relieved and thinking about the sweet revenge I just took.

ETHICS AND BUSINESS CONDUCT CELL	<p>ईमानदारी का अर्थ है अपने विचारों और कार्यों को मूल्यों और नैतिकता के आधार पर चुनना, न कि व्यक्तिगत लाभ के आधार पर।</p> <hr/> <p>Integrity is to choose your thoughts and actions based on values and ethics and not personal gains.</p>	नैतिकता और व्यवसाय आचरण कक्ष
<p>मानव संसाधन व जनसंपर्क विभाग प्रधान कार्यालय बेंगलूरु HR AND PUBLIC RELATIONS WING HEAD OFFICE BENGALURU</p>		



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Humorous article - Hindi

चाय



धीरज जुनेजा

अधिकारी

सूत क्षेत्रीय कार्यालय

चाय को भले ही अंतर्राष्ट्रीय पेय की मान्यता नहीं मिली हो, लेकिन एक आम भारतीय सुबह उठकर भगवान का नाम भले ही न ले, परन्तु वह चाय को इतनी शिद्दत से याद करता है कि सारी कायनात उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए परिवार सहित जुट जाती है। परिवार के सदस्य भी चाय पीने के लिए लालायित होने लगते हैं। इसी वजह से भारत में चाय को भारतीयों ने अघोषित रूप से राष्ट्रीय पेय का दर्जा दे रखा है। हम सुबह उठने से लेकर रात को सोने के समय तक कभी भी चाय पी सकते हैं, चाय पीना हमारा सबसे बड़ा शौक है, फैशन है। उसकी गरिमा कम ना हो जाये, इसलिए जैसे पेट्रोल के दाम यदा-कदा बढ़ जाते हैं, उसी प्रकार सरकारी और गैर-सरकारी दूध बेचने वाले भी दूध के दाम अक्सर बढ़ा देते हैं। अगर नहीं बढ़ाएँ तो लगता है कि चाय की प्रतिष्ठा कम होने लगी है। अतः दूसरे ही महीने फटाक से दूध या चायपत्ती अथवा शक्कर में से किसी-न-किसी का दाम बढ़ ही जाता है। तभी हमें छाती में ठंडक नहीं गर्मी का एहसास होने लगता है। वैसे अब आवश्यक वस्तुओं का भाव बढ़ने से कोई आश्चर्य नहीं होता है, क्योंकि इससे हमारी क्रय शक्ति और बढ़ने का सरकार को पता चलता रहता है, जिससे उसे टैक्स बढ़ाने में सुविधा हो जाती है। अगर दाम नहीं बढ़े तब ज़रूर ऐसा लगता है कि आम आदमी की किरकिरी हो रही हो कि वह चाय का खर्च भी वहन करने की कुव्वत नहीं रखता है। दूध के दाम बढ़ गए तो ऐसा लगा जैसे अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल का दाम बढ़ गया हो। चाय पत्ती पहले ही पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा हाल हमारा जाने की तरह हो गई है। शक्कर की मिठास किसान को गन्ने पर मिलने वाली सब्सिडी पर निर्भर है। मतलब यह है कि भारतीय अपना राष्ट्रीय पेय पीने पर गर्व की अनुभूति कर सकते हैं। कुछ तो चाय की ज़्यादा तारीफ़ करके हमने ही

उसकी आदतें खराब की कि वह स्पेशल हो गई है, क्योंकि पहले होती थी चाह वाली चालू चाय और अब वह बन गई है चाऊ... या जब वह वाकई में चालू हुआ करती थी, तब उसकी जो इज़्जत थी वह इस कारण थी कि चाय तब ही चाय मानी जाती थी, जब वह लबसोज हो, लबदोज हो और लबरेज हो यानी चाय इतनी गरम हो कि होंठ जल जाए, इतनी मीठी हो कि होंठ चिपक जाए और प्याले में इतनी भरी हो कि प्लेट में डालकर सुड़कते हुए पी जाए।

एक जमाना था जब चाय पीते हुए एक से बढ़कर एक चर्चाएँ होती थीं, उसके बाद एक दौर आया कि चाय पीते हुए चर्चा नहीं, बल्कि खुद चाय पर चर्चा होने लगी। इस चक्कर में आजकल चाय पीने वालों का अवमूल्यन होने लगा है। किसी से चाय पीने को पूछो, तो कोई कहेगा, "नहीं मैं चाय नहीं पीता हूँ।" दूसरा-तीसरा कहेगा, "बस थोड़ी सी देना," चौथा कहेगा, "मैं तो कॉफी पीता हूँ।" पाँचवा कहेगा, "मैं तो कुछ और पीता हूँ जी" यह तो सरासर अपमान है अंग्रेज़ों की दी गई नेमत का। हालाँकि उसमें भारतीय किचन के जितने मसाले हैं, उसे डालकर हम उसे अमृत बना चुके हैं। चाय पत्ती की महँगाई दूध के दाम शक्कर की कमी यह सब फालतू बातें होने लगीं। पुराने लोगों से पूछिए तो वे कहेंगे, साहब चाय तो हमारे जमाने में पी जाती थी। ये नए लोग क्या जाने एक प्याली में दो घूँट भी बड़ी मुश्किल से पी पाते हैं। हमारे जमाने में तो थाली में डालकर चाय पीते थे, थाली में, उसके बाद गिलास भरकर पीने लगे। फिर कप-प्लेट का ज़माना आ गया, तो उसमें भी हमने कोई कमी नहीं की थी। दो कप चाय से कम नहीं पीते थे, वरना तौहीन मानी जाती थी चाय और पीने वाले दोनों की।

चाय का जीवन में पिछली शताब्दी में इतना महत्व था कि

जब भी किसी जवान हुई कन्या की माँ को उसकी शादी का ख्याल आता था, तब वह होने वाले दामाद को चाय पर बुला लेती थी। तब वह कन्या भी फट से समझ जाती थी और अपने प्रेमी से गा-गाकर कहती थी – शायद मेरी शादी का ख्याल दिल में आया है। इसीलिए मम्मी ने मेरी तुम्हें चाय पे बुलाया है।

सगाई कराने में चाय का इससे बड़ा सामाजिक योगदान क्या हो सकता है? सत्तर-अस्सी के दशक में तो कन्या के हायर सेकेंडरी करने के बाद होम साइंस से ग्रेजुएट करने को शादी से पूर्व का वेटिंग-इन-पीरियड' माना जाता था। तब वह चाहे और कुछ सीखती, किन्तु टीकोजी बनाना ज़रूर सीखती थी। आज की पीढ़ी अगर सुन ले, तो उसे कोई बिस्कुट समझ ले, जबकि यह भी अंग्रेजों की देन थी। उस समय टीकोजी का एक ही बार इस्तेमाल होता था, जब लड़का उस कन्या को देखने आता था, तब कन्या सिर को पल्लू से ढककर आहिस्ता और सधे हुए कदमों से चलकर आती थी और घरवाले कहते थे, "बेटी मेहमानों को चाय पिलाओ।" तब वह छोटी बहन या भाभी द्वारा पहले से लाई गई घर के एकमात्र टीसेट, जिसका काम भी एक ही बार पड़ता था, उसकी केटली से टीकोजी ऐसे उठाती थी, जैसे किसी का घूँघट उठाया जा रहा हो। तब एक हाथ से केटली के हैंडल को और दूसरे हाथ को ढक्कन पर रखकर कप में चाय भरकर मेहमानों को देती थी। इस सारी प्रक्रिया को लड़के के साथ आने वाली महिलाएँ इतनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखती थी, जैसे होम साइंस प्रैक्टिकल का परीक्षक देख रहा हो। बिना आवाज़ किए, बिना चाय गिरे, अगर लड़की ने चाय को पेश कर दी, तो समझो प्रैक्टिकल में पूरे नंबर मिल गए, आगे तो संबंध पक्का होना ही समझो। इसी प्रकार कोई भी धार्मिक कर्मकांड बिना चाय का दौर चले पूरा नहीं माना जाता है। उसमें पूजा सामग्री के साथ चाय का भी प्रावधान करना पड़ता है।

सरकारी ऑफिस में चाय के बिना तो एक काम नहीं हो सकता। किसी बाबू से काम कराना हो, तो उसको खुला

ऑफर देना होता था कि चलिए साहब चाय पीकर आते हैं। बाबू ने अगर हाँ कर दी तो समझो आधा काम हो गया। बेचारा सरकारी बाबू दिन भर में पच्चीस-तीस चाय पीकर कम-से-कम इतने लोगों के काम तो कर ही देता था, भले ही ज्यादा चाय पीने से उसका स्वास्थ्य बाद में खराब हो जाए, लेकिन वह जनसेवा से पीछे नहीं हटता था। एक बार मैं अपने काम से सरकारी दफ्तर में गया, मैंने चाय पीने का ऑफर बाबू को दिया। बाबू ने हाँ कर दी। अब आप ध्यान दीजिए। उस समय चाय अकेले नहीं पी जाती थी, चार-पाँच सहकर्मी भी चाय पीने में साथ देने चल देते थे। चाय की होटल पर आसपास के दफ्तर के अन्य बाबू भी इसी प्रकार चाय उत्सव मनाने के लिए गुटों में चाय पीने होटल में पहुँच जाते थे। चाय से पहले मुँह का स्वाद बदलने के लिए हल्का-फुल्का नाश्ता मंगाया जाता है। इस काम में मेज़बान का कोई रोल नहीं होता था, उसका काम केवल बिल देना होता है। नाश्ता करने के बाद चाय पीने और मतलब की बातें करने का दौर एक साथ चलता और चाय की चुस्कियों के बीच डील फाइनल हो जाती। उन सब बाबुओं में एकाध बाबू ज़रूर अपवाद या बड़ा सयाना होता है। वह कभी भी चाय नहीं पीता, वह अपने लिए दूध मंगवाता है। दूध पीते-पीते वह अपने आप को कौओं के बीच हंस समझता है और सब को हिकारत की नज़र से देखता है। लेकिन बाकी उसे उपेक्षा से देखते हैं कि देखो बाबू होते हुए भी उसे चाय हजम नहीं हो रही है। मैंने दूध पीने वाले बाबू से धीरे से पूछा, "बड़े बाबू आप चाय क्यों नहीं पीते?" तब वे हँसकर कहने लगे, "मैं कोई मूर्ख हूँ, जो पैसे भी खर्च करूँ और स्वास्थ्य भी खराब करूँ? आप जानते नहीं चाय कितना नुकसान करती है, चैनल में और व्हाट्सएप पर आयुर्वेद के जानकार बता तो रहे हैं।"

लो साहब। जब मेरी ढीली हो रही थी, स्वास्थ्य सुधार में वे लगे थे। इस प्रकार चाय पीने-पिलाने के किस्सों के साथ-साथ भारत में सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियाँ ज़ोर पकड़ी हुई हैं।



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Humorous Article

The Best Ideas emerge at the Worst Time



Jerbin J R
Probationary Officer
Mogaru Branch

Have you ever noticed how your brain seems to have its own twisted sense of humour? When you sit down to focus, your mind goes blank. But when you're somewhere completely inconvenient-like the toilet, the dinner table, mid-shower or while driving-it transforms into a genius workshop. This isn't just a theory; it's an universal experience, and let me tell you, the irony is, it is both frustrating and hilarious too.

So let me share some stories of mine, having this superpower of doing appropriate things in a completely inappropriate place.

RESTROOM EPIPHANIES

Let's start with the king of all idea factories: the restroom, when I sit down to study for hours, it feels like my brain is on strike. Even simple things refuse to register in my mind. But, as soon as I get into the restroom for natural causes? Bam! The mysteries of the universe start unravelling. That impossible math problem from class? Solved. Random facts from years ago? Recalled perfectly. My brain decides that now is the perfect time to be a genius.

Maybe the silence in there resembles the silence in a library so that my brain could have misunderstood it as a library. But still I'm confused about it.

MATHEMATICAL MIRACLES

Another place where my brain loves to shine? The dinner table. Picture this: hours earlier in school, I stared at a math problem like it was written in a foreign language. Nothing made sense. But as soon as I sit down with a plate of white rice with sambhar-which is the most often cooked dish in my house, I

suddenly become a human calculator. Algebra, trigonometry-you name it, it will be solved but put me in a class room with a math problem then math feels like decoding an alien language. Is it the food that unlocks my hidden potential?

I don't know whether it is because of the ambience of my dining room or because of rice and sambhar. What's even funnier is how inappropriate the timing is. I'm supposed to be enjoying a peaceful meal, and here I am, scribbling equations in my mind. My family thinks I've gone mad, but hey, genius people do not need a special place for their mind to work, it works whenever it feels to work.

THE COMEBACK THAT COMES TOO LATE

Now, let's talk about arguments. We've all had that moment when someone insults or shouts at us, we just freeze. For me, it usually happens in traffic. A guy cuts me off, almost causes an accident, and then yells at me like it's my fault. And what do I do? Nothing. Absolutely nothing. I just sit there, stunned and speechless.

But give it a day or two. Out of nowhere-maybe while I'm brushing my teeth or watching a boring movie-the perfect comeback hits me. "Oh, I should've said, 'Learn to use your indicator before yelling at others!'" It's brilliant, but it's two days now and it's too late. In my head, I replay the argument with my new line, and he is stunned because of my stern reply, and after this incident he is a new guy who respects all traffic rules. But this all happens in my head, not in reality.

If I could give a stern reply in my head then why don't my brain help me reply in that exact situation. Maybe my brain was too shy to reply in public.

MIDNIGHT MUSINGS ON SCIENCE CLASS

I could remember those chemistry classes right after lunch? The teacher would start explaining laws of Thermodynamics, and my eyelids would start weighing a ton. No matter how hard I tried, sleep always won. It was like my brain decided, “Nope, we're done for the day.”

But here's the kicker: when I go to bed at night, trying to sleep but that same science class starts playing in my head like a movie. I feel bored to sleep and active to think about chemistry class at midnight. My mind was totally out of “My mind”. It doesn't co-operate with me at all. Suddenly, I feel I'm wide awake, thinking about “Laws of thermodynamics” and my sleep???? Nowhere to be found and the time is nearing 1.00 a.m.

I can't stay awake during boring lectures, but when it's bedtime, my brain turns into a cinema hall where all dreams and incidents are portrayed in a clear picture. Thoughts about life, embarrassing moments from years ago, random song lyrics—it's like my mind is throwing a party, and sleep wasn't invited.

Even better? My brain loves to bring up the most useless topics at night. Remember that one time in 5th grade when I slipped and fell down in front of the whole class? Yeah, let's reveal that in high definition at 2 a.m. Thanks, brain.

SHOWER DEBATES AND DRAMA

The shower is another hotspot for misplaced geniuses. There's just something about the warm water that turns my brain into a think tank. I replay old arguments, come up with brilliant retorts, and even imagine dramatic showdowns where I emerge victorious.

One time, I even solved an imaginary argument with my future boss. (Don't ask me why I was arguing with a boss I don't even have one at that period of time when I was in school—it's just how my brain works.). I simply dream of things about future or simply dream about my fantasy of becoming a hero among all. By

the end of the shower, I had a full speech prepared for my dream audience. Unfortunately, I forgot most of it by the time I dried off.

TRAFFIC JAM PHILOSOPHIES

Let's not forget the deep thoughts that come during traffic jams. Sitting in a sea of honking cars, I suddenly become a philosopher telling myself “What's the meaning of life? Why are we all rushing to nowhere?” and also thinking of something that doesn't have any contact with the present situation like “Should I have ordered pizza instead of biryani last night?”

And of course, as soon as the traffic clears, all these thoughts vanish. By the time I reach home, I can't even remember what I was pondering so intensely. It's like my brain only works when I'm stuck and frustrated.

WHY DOES THIS HAPPEN?

So why does our brain behave like this? Why do we get our best ideas at the worst times? I have a theory. Our brains are like toddlers—they refuse to cooperate when we need them to. But the moment we're relaxed or distracted, they decide to show off. When you sit down to focus, your brain is like, “Nope, not today.” But when you're least expecting it—in the middle of traffic, in the shower, or while eating—it's like, “Oh, you needed this idea? Here you go!” It's frustrating, but also kind of funny when you think about it.

EMBRACING THE CHAOS

At the end of the day, maybe this is just how life works. The best ideas don't come on schedule; they show up uninvited, like an overly enthusiastic neighbour. Sure, it is inconvenient, but it's also what makes life interesting.

So the next time when you're sitting in traffic, eating dinner, or just trying to sleep, and your brain starts firing off brilliant ideas, don't fight it. Embrace the chaos, listen and accept it and maybe keep a notebook handy in the bathroom. You never know when inspiration will strike!



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Humorous article

चौबे जी पानी में गए छपाक!



गौरव जोशी

वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन एवं विकास केन्द्र

खुदी को कर बुलंद इतना, चढ़ा वो जैसे तैसे।
खुदा ने बंदे से खुद पूछा कि मियां अब उतरोगे कैसे।

चौबे जी आजकल अपनी सेहत का खूब ख्याल रखते हैं, खाने पीने का जैसा भी हो पाए लेकिन कसरत नियम से रोज करने का प्रण ले लिया हैं चौबे जी ने। अभी कुछ एक हफ्ते ही हुए थे एक व्यायामशाला जाते हुए कि, वहाँ बने एक मित्र ने बताया कि रोज तैराकी करने से ज्यादा अच्छी कोई वर्जिश हो ही नहीं सकती, तो चौबे जी ने भी उनकी बातों में आकर तैराकी शुरू कर दी। शुरुआत में थोड़ी कठिनाई आई लेकिन दो महीने के निरंतर प्रयत्न से चौबे जी पूरे तरणताल का चक्कर लगाने लग गए और उनके कोच साहब ने भी तारीफ कर दी कि चौबे जी बहुत बढ़िया और बहुत अच्छी तैराकी करने लगे हो और ये ही तो चौबे जी सुनना चाह रहे थे कि वे किसी काम में बाकियों से अच्छे हैं। बस फिर क्या था, अगले दिन से दफ्तर जाकर सुबह शाम एक-एक घंटे चौबे जी अपनी डेस्क के पास छावनी लगा कर बैठते थे कि रोज तैराकी करना हालांकि आसान काम नहीं है, लेकिन अगर कर लो तो इससे अच्छी और कोई कसरत भी नहीं है। चूंकि तैराकी करने से काफी कैलोरी बर्न भी होती है, तो यह सुबह-शाम की छावनी में, दफ्तर से सटी दुकान की जलेबी और रबड़ी भी खूब चलती थी, फलस्वरूप चौबे जी के हृष्ट-पुष्ट स्वास्थ्य पर कोई खास फर्क पड़ा नहीं। एक दिन दफ्तर का ही एक लड़का चुहल करता सा बोला, "क्या ही तैराकी करते हैं आप, अभी भी वैसे ही ढुलमुल हैं जैसे पिछले साल थे।" और ये बात चौबे जी को चुभ गई, तो सबसे पहले तो उसका छावनी से निकाला हुआ, फिर चौबे जी पहुंचे उस ही मित्र के पास जिसने ये तैराकी शुरू करने का कीड़ा चौबे जी के दिमाग में घुसाया था। उस मित्र ने फुर्ती से जवाब दिया, "अरे गुरु, तरणताल तो बस सीखने के लिए अच्छा है, असली तैराकी तो

झील में होती है।"

अपनी साँस संभालते हुए चौबे जी ने पुष्टि करने हेतु पूछा, "झील में! झील में तो मछलियाँ तैरती हैं, हम कोई मछली थोड़ी हैं।"

इसपर उस मित्र ने हँसते हुए कहा, "अरे गुरु मछली तो रहती है, तैरते तो हम तुम हैं और तैरकर सेहत भी हमारी ही बनती है, मछली तो वैसी ढुलमुल ही रहती है, जैसे टहलने से हमारी कमर पतली नहीं होती वैसे ही तैरने से मछली की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ता।"

पता नहीं क्यों पर चौबे जी को ये बात जम गई और योजना बनी कि इस रविवार सुबह-सुबह झील में दोनों दोस्त गोते लगाएंगे और अच्छा लगा तो रोज भी जा सकते हैं।

रविवार आया और चौबे जी चल दिए अपना तैराकी का पूरा सामान अपने झोले में बांधकर। वहाँ पहुंचे तो उनके मित्र ऐसे ही किसी 15-20 साल के लड़के की तरह पूरे बेपरवाह अंदाज में खड़े थे, वे पिछले 10 साल से यहाँ लगभग रोज तैरने आते थे तो वे पूरी तरह से इसके अनुकूल थे, झोंप के कारण चौबे जी ने भी तैरने वाली कैप तक नहीं लगाई चूंकि वहाँ उपस्थित बाकी 9-10 लोग भी यूं ही तैर रहे थे और उनके दोस्त ने अपना कद बढ़ाने के लिए चौबे जी की तैराकी के लंबे-लंबे किस्से उन लोगों को सुना दिए, अब तो वे बाकी के 9-10 लोग भी चौबे जी को तैरता देखने के लिए उत्साहित हो गए और बेचारे चौबे जी, जो चुपचाप इस तमाशे को होने दे रहे थे, अपने इस दोस्त को कोने में ले जाकर बोले, "इतने किस्से सुना दिए हैं तुमने, अगर मैं डूबने लगा तो बचाने भी कोई नहीं आएगा।"

“अरे गुरु! कुछ नहीं होगा” उनके मित्र बोले, “इतनी गहराई नहीं है और कौन सा पूरी झील पार करनी है हमें, हम तो बस अपने दायरे में तैरेंगे और चलते बनेंगे। तुम बस मजे लो।”

मन में राम-राम करते हुए चौबे जी अपने मित्र के पीछे-पीछे धीरे से झील में उतरे। पानी बहुत गहरा तो नहीं था, धीरे-धीरे जब अंदर जाते गए तो चौबे जी को अंदाजा होना शुरू हुआ कि बहुत उथली भी नहीं है ये झील, गहराई तो है, कितनी है ये नहीं पता। लेकिन अब घाट से थोड़ी दूरी पर तैराकी करते-करते चौबे जी को मज़ा भी आ रहा था, ऊपर खुला आसमान, सुबह की हल्की-हल्की धूप और इस विशालकाय झील के गुनगुने पानी में पत्ते की तरह तैरते हुए चौबे जी को अलग ही मजा आ रहा था, बाकी के 9-10 लोग भी साथ में ही तैर रहे थे। धीरे-धीरे इस झुंड में एक अनकही प्रतिस्पर्धा सी हुई कि कौन तेजी से आगे निकल जाएगा। ना चाहते हुए चौबे जी भी इसका हिस्सा बन गए और पूरी कोशिश से आगे निकलने लगे। देखते ही देखते वे सबसे आगे थे और कह सकते हैं कि काफी ज्यादा आगे थे। कुछ देर बाद जब चौबे जी ने पीछे देखा तो बाकी के साथी, बहुत पीछे थे। चौबे जी मन ही मन बड़े खुश हुए, “ये लो, ये 10 साल से आ रहे हैं, एक ही दिन में हार गए।” लेकिन जब चौबे जी ने थोड़ी आँखें बड़ी करके देखा तो पाया कि वे सब उल्टे जा रहे हैं यानि की वापस जा रहे हैं, किनारे की ओर। एकदम से चौबे जी के पेट में पानी पड़ गया कि वे तो इतनी दूर आ गए हैं वापस कैसे जाएंगे। उनके दोस्त दूर से ही उनको वापस आने का इशारा कर रहे थे। लेकिन चौबे जी की तो तैर-तैर कर पहले ही हालत बुरी हो गई थी, अब ये झील चौबे जी को समंदर लग रही थी और यहाँ तो घबराहट के मारे चौबे जी के पैरों तले से धरती भी नहीं खिसक सकती थी। तभी जैसे चौबे जी को छेड़ती हुई सी एक मछली टप्प से पानी से निकलकर कूदी और वापस पानी में चली गई। चौबे जी को अगले दिन अखबार की खबर दिख रही थी कि ‘एक नौसिखिये ने अपनी बेवकूफी से अपनी जान गंवाई’ अब चौबे जी किसी बतख की तरह पानी में गोल गोल घूम रहे थे। रोना भी चाह रहे थे, मदद के लिए चिल्लाना भी चाह रहे थे, लेकिन अभी किसी चीज का कोई औचित्य नहीं था। फिर अचानक से अपनी पूरी हिम्मत भरकर चौबे जी ने अपने उस मित्र को आवाज दी, “थकान हो गई है, वापस

कैसे आये?” उस मित्र ने बिना किसी सकुचाहट के जवाब दिया, “दो ही रास्ते हैं गुरु, या तो इधर आओ या उधर जाओ।” उधर मतलब उस ओर, माने दूसरे किनारे पर। लेकिन दूसरे किनारे पर तो बाजार लगता है, चौबे जी ने सोचा और खुद को एक कुदरती तैराक दिखने के चक्कर में चौबे जी ने कॉस्च्यूम के नाम पर केवल और केवल अपना चश्मा लगाया था, इसके अलावा तो वे बाकी लोगों की तरह कपड़े उतार कर ऐसे ही झील में कूद पड़े थे, अपने धारीदार अंतः वस्त्र के साथ। अब चौबे जी असमंजस में थे कि जान बचाए या इज्जत। फिर चौबे जी को अपनी वास्तविकता का एहसास हुआ और वे बाजार वाले किनारे की ओर तैरने लगे। चूंकि वे काफी दूर तैरकर आ गए थे सो ये किनारा पास ही था। हांफते-हांफते चौबे जी उस ओर पहुंचे जहां भैंसे पानी पी रही थी और आगे एक छोटा सा बाजार भी लगा हुआ था। ठेलों पर अलग-अलग दुकानें सजी हुई थी और चौबे जी बेचारे भीगी बिल्ली से किनारे खड़े अपने मित्र के आने का इंतजार कर रहे थे। एक दरियादिल दुकानदार ने अपना स्टूल बैठने को दे दिया तो चौबे की थोड़ी जान में जान आई। धूप शरीर पर पड़ी तो तैरते-तैरते ठंडा हों चुका शरीर थोड़ा नीले से पीला हुआ, फिर चौबे जी ने अपने पेट की सुनते हुए उस दुकानदार से जलेबी लेकर खाना शुरू की और जब तक उनका मित्र कपड़े लेकर आया, चौबे जी वहाँ भी अपनी छावनी लगा चुके थे और जलेबी खाते हुए अपने किस्से उस मजमे को सुना रहे थे कि कैसे केवल यहाँ बन रही मिठाई की खुशबू उनको इधर खींच लाई नहीं तो इस झील के तो दस चक्कर लगा लेते वे।

जब मित्र आए, चौबे जी ने अपने शालीन वस्त्र धारण किये, दुकानदार को पैसे दिए और फिर से आने का वादा करके रफूचकर हो लिए। अब इस किनारे पर चौबे जी मशहूर हैं। दुकानदारों के लिए भीगी बिल्ली के नाम से लेकिन चौबे जी के मन में एक बहादुर तैराक के रूप में।

हाँ ये भी सच है कि उस दोस्त और उस झील की शक्ल चौबे जी ने फिर नहीं देखी और वे बुझादिल हैं या बहादुर, इससे उन्हें फर्क नहीं पड़ता। ज़िंदा हैं, मस्त हैं। रोज टहलने जाते हैं दूसरे जलाशयों पर जाकर मछली को दाना डालने।

Canara Aspire : The Beginning of Dreams

"Research and Development Section, Strategy & Data Analytics Vertical"



"It's not just a savings account, yaar. It's literally built for people like us."

That one sentence stayed with him.

Ankit walked into his nearest Canara Bank branch the very next day. What he found surprised him.

No minimum balance. A cool debit card with offers on Amazon, BookMyShow, Swiggy, Gaana... all the apps he already used. Free Coursera certification to upskill himself. Even a concession on education loans.

"You don't just save here," the bank officer smiled, "you grow, you explore, you aspire."

As months passed, Ankit realized his Canara Aspire account wasn't just about keeping money safe – it was his passport to a smarter life. He used his **Rupay Platinum Millennial debit card** to grab exclusive offers. He enrolled in a **free Coursera course** that helped him crack his first big project at work. He explored, he spent wisely, he saved smartly.

For the first time, banking didn't feel like a chore. It felt like it belonged to him. "When I opened this account, I didn't know I was opening doors too," Ankit now says with a grin.

"Doors to opportunities, to savings, to growth. Doors to my aspirations." Because **Canara Aspire isn't just a savings account. It's where ambitions find their first home.**

For Ankit, life was just beginning.

Fresh out of college, stepping into his first job, the world suddenly seemed full of choices, responsibilities, and the thrill of independence. But with that excitement came the small but significant question—where should he begin his financial journey?

That's when his friend told him about **Canara Aspire**.

Canara Aspire – Your journey begins here.

Board Strategy Meet 2025-26, Indore

MD & CEO's Secretariat, Head Office, Bengaluru

The Board Strategy Meet for 2025-2026 was held on 3rd and 4th April, 2025 at Indore, the cultural Capital of Madhya Pradesh. The meet opened with a reaffirmation of the Bank's legacy of empathy, integrity, and resilience. Bank Chairman Sri. Vijay Srirangan reiterated the Bank's renewed strategic vision, emphasizing a focus on customer-centricity, digital transformation, personal banking, and sustainable growth. Managing Director & CEO Sri. K Satyanarayana Raju outlined the ambitious financial goal of achieving ₹20,000 crore net profit over the next three years. While many key targets of our long term plan have been met ahead of schedule, challenges such as improving the CASA ratio and Net Interest Margins remain central to the strategic roadmap.

Experts from M/s BCG gave insights about major shifts happening in the banking landscape not only in India but across the world. From the traditional banking of accepting deposits and lending, Banks are moving towards long-term wealth creation among households, increased formalized credit to various sectors including MSME which will be the driving force for India's journey towards reaching a 5 trillion-dollar economy. They stressed the need for using latest advanced technologies in computational and artificial intelligence, meeting the expectations of customers and the rising costs in IT and HR. The need for greater productivity, proactive adoption of emerging technologies, and stronger cybersecurity were emphasized. The rising influence of digitally savvy Gen Z and women-led customer segments were identified, pointing to a growing demand for personalized, experience-driven financial products. India's emergence as a global financial innovation hub was seen as a key opportunity.

AI and digital integration were central themes, with Generative AI and predictive models expected to enhance credit evaluations, customer service, and operational efficiency. The Bank is transitioning from traditional branch-based banking to omnichannel and mobile-first models. Innovation hubs focusing on AI, cloud, and cybersecurity and upskilling of the workforce are being prioritized, to support this transformation.

Strategic group discussions generated several initiatives, like enhanced digital lending, AI-driven risk assessment in agriculture and the launch of innovative products like the

"Canara Green Housing Loan." Other proposals included digitized customer onboarding, improved CRM systems, predictive loan default models, and enhanced recovery mechanisms. The groups also emphasized engaging underserved segments such as farmers, SHGs, and gig workers through fintech partnerships and tailored offerings.

In the second day's session, MD & CEO Sri. K Satyanarayana Raju and Secretary, Department of Financial Services, Sri. M. Nagaraju emphasized the importance of accelerating rural and SME lending while balancing profitability with broader economic impact. India's economic outlook remains strong, but global risks and sectors like foreign education loans require cautious planning. The bank plans to expand into underpenetrated regions and specialized markets using digital channels, aiming to grow CASA deposits by ₹60,000 crore and improve the CASA ratio to 3% by FY28.

To facilitate this, the Bank will diversify the product offerings to cater to 20 distinct customer segments, implement gamified digital deposit tools and upgrade internal processes through digitization and automation. Partnerships with neo-banks, mobile-based account opening and initiatives like 'Bank on Wheels' will drive outreach. Robust governance, strong financials, and a continued focus on innovation will guide the Bank's strategy. Directors of the Board viz; Chairman Sri. Vijay Srirangan, MD & CEO Sri. Satyanarayana Raju, Executive Directors Sri. Debashish Mukherjee, Sri. Hardeep Singh Ahluwalia, Sri. Bhavendra Kumar, Sri. S K Majumdar, Directors Sri. Parshant Kumar Goyal, Sri. Rohit Das, Sri. Bimal Prasad Sharma, Smt. Abha Singh Yaduvanshi, proactively interacted with participants providing with innovative ideas, suggestions and directions to take the Bank to elevate performance standards and its placement among the Top financial institutions in the country. The various sessions of the meet were moderated by Mrs. Sreysha George of M/s BCG and Sri. V S Santosh, Board Secretary and General Manager of the Bank. The two-day event culminated in a renewed pledge of collective commitment and strategic alignment among stakeholders toward achieving the defined goals and exceeding targets.

वार्षिक बोर्ड कार्यनीति बैठक, इंदौर Annual Board Strategy meet, Indore



The TruEdge Advantage: A Story of Growth and Trust

"Research and Development Section, Strategy & Data Analytics Vertical"

Rajan Biswal had a dream—to transform his small educational trust into one of the finest institutions in his city. But as the trust grew, so did the challenges. Managing collections, payments, and everyday banking became increasingly complicated. Endless paperwork, multiple visits to the home branch, transaction fees, and cash handling charges started eating into his precious time and resources.

One day, during a local banking seminar, Rajan overheard a discussion about **Canara TruEdge** – a banking solution tailor-made for institutions like his. Curious, he visited his nearest Canara Bank branch the very next day.

The bank manager smiled and said,

"Mr. Biswal, TruEdge is not just an account; it's your partner in growth. You can open it with **zero initial deposit**, and whether you run a school, a trust, or a society, this

account evolves with you."

Rajan was intrigued. The manager explained how **unlimited free NEFT, RTGS and IMPS transactions** would save his trust valuable resources. Even **cash handling charges would reduce automatically** as his monthly balance grew.

"And that's not all," the manager continued. "You get **upto 3 free POS machines and 5 free BHIM QR soundboxes**, unlimited cheques, free demand drafts, and real-time SMS alerts on every transaction. Wherever you go, you can bank from any Canara Bank branch without worrying about home branch restrictions."

What really impressed Rajan was **Canara Easy Fee** – a **free, secure fee collection platform** designed just for educational institutions like his. No more manual registers, no more confusion. His trust could now collect fees swiftly, and parents could pay from anywhere.

The story didn't stop there. The manager added, "We also offer **discounted ERP solutions, API banking, payment gateways, and BBPS integration** to make your operations smarter. And for a limited period, your students and staff can access free Coursera courses to enhance their skills." Rajan's eyes lit up. Finally, a banking solution that actually understood his world.

As a cherry on top, the trust's office bearers were offered **complimentary premium debit cards** for their personal Canara Savings accounts, and a **dedicated Relationship Manager** was assigned to assist the trust at every step.

Rajan signed up for Canara TruEdge that very day.

Months later, as the trust expanded and his students thrived, Rajan often reflected on that decision. "Growth is easier when you have the right partner," he would say with a smile.

For Rajan, **Canara TruEdge wasn't just a bank account – it was the silent strength behind his success.**

Grow your institution with the edge you deserve. Canara TruEdge – where smart banking meets institutional excellence.

AHMEDABAD

Circle Office Ahmedabad conducted MSME Outreach programme on 28.04.2025. GM and MSME Vertical Head Sri. Sunil Kumar Yadav, Head office and Circle Head Sri. Ranjeet Kumar Jha attended the programme at Ahmedabad RO. Executives from Gandhinagar, Rajkot, Surat & Vadodara also attended the camp. The programme gained wide publicity and all the branches were sensitized for sourcing the MSME proposals on regular basis.



CHANDIGARH

Circle Office, Chandigarh organized an Eye Check-up Camp on 24.04.2025 at Circle Office, Chandigarh under the guidance and leadership of General Manager & Circle Head Sri Manoj Kumar Das. DGM's Sri. Ved Prakash, Sri Rajeev Kumar and Sri. B Ravi and other executives and staffs of Chandigarh Regional Office attended the event. The Camp was organized in collaboration with PRO SIGHT EYE HOSPITAL, CHANDIGARH and an eminent group of doctors and technicians. Around 100 staff had consulted and got their eyes checked.



BHUBANESWAR

Bhubaneswar Circle's overseeing Executive Director, Sri. Bhavendra Kumar, visited Bhubaneswar Circle Office on 19th April 2025. The meeting was chaired by Executive Director Sri Bhavendra Kumar, and Sri Jagdish Chander, Circle Head, Bhuvaneshwar CO. The Circle Head highlighted the ongoing campaigns and importance of low cost deposits and other liability products of our bank.



CHENNAI

Executive Director, Sri Bhavendra Kumar visited Chennai Circle on April 16th, 2025. This occasion was marked with a productive meeting with Circle Executives, where key initiatives and strategies were deliberated upon. The meeting was chaired by Executive Director, Sri Bhavendra Kumar, Smt. R.Anuradha, CGM, Retail Credit and General Administration Wing and Smt. K. A. Sindhu, CGM, Chennai Circle Head.



Branch manager's conference was held on 21.05.2025 at Vellore to review the performance of the branches under Vellore Regional Office. The meeting was chaired by Sri. Rajesh Kumar Verma, DGM, Chennai Circle Office and Sri. Raghavendra H S, AGM and Regional Head, Vellore Regional Office. The route map to achieve the major parameters of Bank and increasing business under CASA, RTD, NFO's, Recovery, Retail and MSME was discussed in detail.



DELHI

Mega MSME Outreach Program was conducted in all Regional Offices of the Circle on 09.05.2025 and was attended by the all the Executives of Circle Office. The program gained wide publicity and active participation. All branches were sensitized to source MSME proposals on regular basis and emphasized for month-on-month activation under MSME. The Outreach Program generated leads to the tune of ₹396.55 Crore.



MADURAI

Madurai Circle Office initiated an awareness program through Digital Mobile Van themed "Digital Banking Awareness" on 25.04.2025. The Mobile Van covered the entire Madurai City and nearby villages for a period of 5 days. The Digital Mobile Van was flagged off by General Manager Smt A K Bhooma, Madurai Circle Office. The Circle Executives and Staff actively participated in the event.



Madurai circle conducted the WALKATHON on the theme of "Digital Banking Awareness" on 19.04.2025 to create awareness among the General Public about the Digital Banking Services. The Walkathon was led by General Manager Smt A K Bhooma, Madurai Circle. Circle Executives and Circle Staff actively participated in the event.



MUMBAI

Circle Office Mumbai, organized a Walkathon to promote awareness about Digital Banking at BKC Mumbai. The event was led by CGM Sri Ranjeev Kumar, accompanied by DGMs Sri Saravanan P, Sri Rajnish Kumar, Sri Deepesh Devchand Dedhia, other senior officials and staff members. During the event, Circle Head Sri Ranjeev Kumar encouraged the adoption of digital channels for secure and convenient banking, while briefly addressing the importance of staying alert to digital frauds and appealed to the staff members to be aware of cyber frauds and spread awareness amongst the customers and public. The Canara ai1 app was highlighted as a one-stop solution for all digital banking needs. Staff members carried creative and informative banners during the Walkathon, including: "Your Bank in Your Hand - Use Canara ai1!" "prevent from Cyber-crime, Say Yes to Canara digital channels!" "This initiative of Digital Banking and Cyber Security reinforced Canara Bank's commitment to driving digital empowerment and enhancing customer awareness across all touch-points."



The renovated premises of the Holiday Home at Vile Parle Mumbai was formally inaugurated on 24.04.2025 by Executive Director Sri Santanu Kumar Majumdar in presence of Sri Ranjeev Kumar, Circle Head Mumbai and Chief General Manager and Sri N Sitarama Somayaji, General Manager Transaction Monitoring Vertical. The renovated premises is furnished and equipped with modern amenities and this initiative reflects bank's continued commitment

to enhance Employee welfare thereby enforcing healthy work-life balance.



Circle Office, Mumbai conducted a Mega MSME Outreach programme on 23.5.2025 at MSME Development & Facilitation Office, Sakinaka, Mumbai. The meet was graced by Sri Sunil Kumar Yadav GM, MSME Vertical Head, HO along with Sri Ranjeev Kumar CGM and Circle Head. Sri Milind Barapatre, Joint Director, MSME DFO Mumbai and Sri Praful Umbare, Asst Director, MSME DFO Mumbai addressed the gathering and appreciated the efforts of Canara Bank in reaching out to the needy customers through various MSME products. Customers from various parts of Mumbai attended the programme and the proposals were discussed one to one by the executives. Total 50 leads amounting to ₹163.77 Crores were generated during the programme. Sri Rajnish Kumar, DGM, RO Heads of the Circle and Executives from MSME Sulabh were present during the outreach programme.



PATNA

DMCH Darbhanga Branch was inaugurated by Sri Ajay Kumar, General Manager Patna Circle Office on 06.05.2025. Sri Shiv Shankar, AGM Muzaffarpur RO, Smt. Minu Kumari, Branch Manager and other officials were present during inauguration. GM Sri Ajay Kumar addressed the staff and customers and vouched for seamless banking experiences and efficient financial solutions.



Executive Director, Sri Bhavendra Kumar, visited Patna Circle on 12.5.2025 and reviewed the Circle and Regional Office Executives. The meeting was chaired by Sri Bhavendra Kumar, ED, Sri Sunil Kumar Yadav, GM MSME Vertical and Sri Ajay Kumar Circle Head, Patna CO. Sri Ajay Kumar presented an overview of the Circle's business performance and outlined future growth opportunities. Sri Sunil Kumar Yadav emphasized the strategic importance of the MSME sector in enhancing the Bank's profitability and societal impact. Sri Bhavendra Kumar delivered corporate address stressing upon the following key directives like - expanding market outreach, exploring new business avenues, focussing on boosting CASA,



Retail Deposits and RAM sector lending, enhancing customer experience by optimizing all branch touch-points to ensure customer delight and operational efficiency. He also explained the need of CASA and Low Cost Deposit for our Bank and emphasized the crucial role of CRO/CRM in this respect.

TIRUPATHI

Antakshari competition was organized at Circle Office, Tirupati on 3.05.2025 under the Chairmanship of Sri I. Panduranga Mithanthaya, GM and Circle Head. All the employees of Circle Office participated enthusiastically in the competition.



As per the directions of Reserve Bank of India (RBI), Digital Banking Awareness Campaign was organized at Circle Office, Tirupati on 29.04.2025 under the aegis of Sri I. Panduranga Mithanthaya, GM & Circle Head, Tirupathi. He flagged off the vehicle decorated with hoardings on digital awareness. A rally was organized on this occasion and officials of Circle Office, Tirupati participated enthusiastically.



VIJAYAWADA

Branch Managers Conference, was held on 19th May, 2025, at Vishakapatnam Regional Office to review the performance of the branches under Visakhapatnam Regional Office. The meeting was chaired by Sri. Shishir Kumar, DGM Circle Office, Vijayawada and Sri N. Madhusudhana Reddy, AGM and Regional Head Vishakapatnam.



अंचल समाचार

आगरा

वित्तीय वर्ष 2025-26 की पहली बैठक के रूप में समिति की 25वीं छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन दि.25.04.2025 को केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, आगरा के सम्मेलन कक्ष में किया गया। बैठक की अध्यक्षता समिति अध्यक्ष श्री पी.वी. हरि, उप महाप्रबंधक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, आगरा ने की। मंच संचालन का कार्य केनरा बैंक, अंचल कार्यालय-आगरा के राजभाषा अधिकारी श्री राजीव रमन के द्वारा किया गया। बैठक में सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख अपने राजभाषा अधिकारियों व हिंदी प्रतिनिधियों के साथ उपस्थित रहे। इस छमाही बैठक में मुख्य अतिथि व समीक्षाकर्ता के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) उपस्थित रहे।



अहमदाबाद

दिनांक 28.04.2025 को अंचल कार्यालय अहमदाबाद में एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन श्री रंजीव कुमार झा के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुनील कुमार यादव, महाप्रबंधक एवं एमएसएमई वर्टिकल, प्रधान कार्यालय ने किया। अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य अधिकारियों ने अन्य सभी केंद्रों यानी गांधीनगर, राजकोट, सूरत और वडोदरा में एक साथ शिविर में भाग लिया। कार्यक्रम का व्यापक प्रचार हुआ और सभी शाखाओं को नियमित आधार पर एमएसएमई प्रस्तावों की सोर्सिंग के लिए जागरूक किया गया।



गुवाहाटी

दिनांक 03.04.2025 को अंचल प्रमुख श्री एच टी बाविस्कर, महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय गुवाहाटी की अध्यक्षता में

अंचल कार्यालय गुवाहाटी द्वारा वित्तीय वर्ष 2024 – 2025 हेतु वार्षिक अधिवक्ता बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान, अंचल कार्यालय गुवाहाटी के उपमहाप्रबंधक श्री एन श्री निवास राव, गौरव बंसल सहायक महाप्रबंधक व अंचल के अन्य कार्यपालकगण भी उपस्थित रहे। उल्लेखित बैठक में डीआरटी मामलों और एलएसआर से निपटने वाले पैनल अधिवक्ताओं ने बैठक में भाग लिया। उप महाप्रबंधक श्री एन श्री निवास राव ने बैंक की नीति/दिशानिर्देशों और वर्ष में एक बार होने वाली अधिवक्ताओं की बैठक के महत्व से अवगत कराया, ताकि इसके द्वारा बैंक और अधिवक्ताओं के संबंधों को बढ़ावा दिया जा सके और दोनों पक्षों के मुद्दों को विचार – विमर्श से सुलझाया जा सके और शाखाओं को बैंकिंग परिदृश्य के संबंध में कानूनी क्षेत्र में वर्तमान विकास के बारे में भी जानकारी दी जा सके। उन्होंने अधिवक्ताओं से आग्रह किया कि वे एलएसआर जारी करते समय सभी मूल दस्तावेजों का सत्यापन सुनिश्चित करें तथा बैंक द्वारा अपनाई गई टीएटी अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द रिपोर्ट उपलब्ध कराएं। श्री गौरव बंसल, सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी ने अधिवक्ताओं की बैठक के लाभों के बारे में भी जानकारी दी, जिससे बैंक और अधिवक्ताओं के बीच संबंध मजबूत होते हैं, जो कि बैंक / ग्राहक द्वारा दायर किए गए मुकदमों, डिक्ली और डीआरटी मामलों के तहत वसूली सुनिश्चित करने में एक मजबूत व लंबा रास्ता तय करते हैं।



कोलकाता

श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक, ने 22 अप्रैल, 2025 को अंचल कार्यालय, कोलकाता का दौरा किया। बैठक में अंचल के सभी अनुभाग प्रमुखों के कार्यनिष्पादन की गहन समीक्षा की गई। दिन की शुरुआत हमारे संस्थापक श्री अम्मम्बाल सुब्बा राव पै को पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई। कोलकाता अंचल की उप महाप्रबंधक श्रीमती किरण एन एस ने श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक और बैठक में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया, कार्यपालक निदेशक ने विभिन्न कारोबार मापदंडों के तहत अंचल की व्यावसायिक स्थिति पर प्रकाश डाला। अपने मुख्य भाषण में वित्तीय वर्ष के इस महत्वपूर्ण चरण में देयता मापदंडों के तहत सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।



लखनऊ

दिनांक 26 अप्रैल 2025 को प्रातः 6:00 बजे अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा वॉकथॉन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्राहकों में बैंक के डिजिटल उत्पादों जैसे मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई, भीम ऐप, एटीएम व डेबिट कार्ड आदि के प्रति जागरूक करना था। इस वॉकथॉन में अंचल कार्यालय, लखनऊ के सभी विभागों, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ-I, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ-II एवं शाखाओं के कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भागीदारी की। वॉकथॉन की शुरुआत अंचल कार्यालय के परिसर से हुई और कर्मचारियों ने रास्ते भर डिजिटल बैंकिंग के लाभों को पोस्टर, बैनर व नारों के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाया।



पटना

दिनांक 12 मई 2025 को कार्यपालक निदेशक, श्री भवेन्द्र कुमार ने एलएनजेपी सुपरस्पेशलिटी अस्पताल, पटना में सीएसआर गतिविधि के सिलसिले में पटना अंचल का दौरा किया। समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी के अनुसार, अंचल कार्यालय पटना के द्वारा एलएनजेपी सुपरस्पेशलिटी अस्पताल, पटना में एक सीएसआर गतिविधि का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हमारे कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार ने किया और अन्य सदस्यों में एमएसएमई विभाग के महाप्रबंधक श्री सुनील कुमार यादव, पटना अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार, सहायक महाप्रबंधक श्री नीतीश कुमार, क्षेत्रीय कार्यालय पटना के कार्यालय प्रमुख श्री विकास भारती, पूर्व आईएस और आयुष्मान भारत के सीईओ श्री शशांक शेखर और एलएनजेपी अस्पताल के निदेशक सुभाष चंद्रा शामिल हुए। सीएसआर कार्यक्रम के माध्यम से अस्पताल में 25 लाख रुपये की लागत वाली 4 हजार आर्थोस्कोपी मशीन स्थापित की गई। इसके अलावा, कार्यपालन निदेशक की अध्यक्षता में, अंचल कार्यालय और क्षेत्रीय कार्यालय से उपस्थित अधिकारियों के साथ बैंक के संगठनात्मक विकास और उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने के लिए रणनीतिक विचार-विमर्श पर आधारित समीक्षा बैठक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता कार्यपालक निदेशक श्री भवेन्द्र कुमार जी के द्वारा की गई। कार्यपालक निदेशक महोदय का स्वागत अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार तथा अन्य अधिकारियों द्वारा किया गया। इस बैठक में एमएसएमई विभाग के महाप्रबंधक श्री सुनील कुमार यादव एवं अंचल कार्यालय पटना के महाप्रबंधक श्री अजय कुमार तथा अंचल कार्यालय के अन्य

वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारीगण इसमें शामिल हुए। श्री अजय कुमार, महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख ने अंचल के कारोबार प्रदर्शन का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया और भविष्य में विकास के गति की रूपरेखा प्रस्तुत की। श्री सुनील कुमार यादव, महाप्रबंधक, एमएसएमई विभाग ने बैंक की लाभप्रदता और सामाजिक प्रभाव को बढ़ाने में एमएसएमई क्षेत्र के रणनीतिक महत्व पर जोर दिया।



तिरुपति

श्री आई. पांडुरंग मिन्तन्ताया, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख तिरुपति के मार्गदर्शन एवं उपस्थिति में दिनांक -01 अप्रैल 2025 को अंचल कार्यालय, तिरुपति के स्थापना दिवस के अवसर पर कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) गतिविधि का आयोजन किया गया। जिसमें 50 परिवारों को खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इस अवसर पर श्री जी.एन. मूर्ति, श्री रवींद्र कुमार अग्रवाल, उप महाप्रबंधक, श्री आर.के. राठौर, श्रीमती कीर्ति विश्वनाथ वी.एस., सहायक महाप्रबंधक और अंचल कार्यालय, तिरुपति के सभी कार्यपालक, अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।





Shreyas Contest 2024
1st Prize
English Poetry

Little Acts, Big Impacts

Senthil Murugan K

Senior Manager,
Systems & Procedures Section
Integrated Treasury Wing Mumbai



In Arkalgud's serene embrace,
where the Western Ghats rise,
I began my journey, under unfamiliar skies.
A probationary officer, new to the scene,
Among farmers and locals,
where I had never been.

The language was foreign, the faces unclear,
Yet I stepped ahead, shedding my fear.
One day, Mr. Channaiah, frail and bent,
Came with a query, his gaze intent.

"What's my balance?" he seemed to say,
I wrote it on paper, as words fell away.
"Where are you from?" he asked with care,
I said, "Tamil Nadu," a connection rare.

When his stipend stopped,
Aadhaar Seeding the cause,
I helped him fix it, without a pause.
Each month thereafter, he came to greet,
A simple hello made our connection grow.

From passbooks to deposit receipts,
each visit he made,
Showed trust being built
through the way that I cared.
His faith in our branch grew steady and true,

As neighbours and friends
soon followed him too.

Then came my transfer, sudden and swift,
Off to Mumbai, like a seasonal drift.
One evening, a call brought me surprise,
A familiar voice, with tears in my eyes.

"An old man asks for you," the caller said,
"He speaks of your kindness and
how much you cared.
He tells the Branch Head
you're a gentleman rare,
And wonders how you are,
with genuine care."

Small acts of kindness,
unnoticed they seem,
Yet they echo through life,
like a timeless stream.
For every gesture, however slight,
Leaves a mark, like stars in the night.

In service to others, life's meaning we find,
Through bonds we nurture,
through hearts we bind.
Little acts, big impacts—a legacy stays,
Long after we've parted ways.



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Hindi Poetry

छोटा कार्य बड़ा प्रभाव – कैसे छोटा कार्य ग्राहक सेवा में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है।

मेरी नन्हीं सी दुनियां अचानक बड़ी सी हो गई,
जब से कैनबैंक में मेरी नौकरी लग गई।
शाखा के ग्राहकों से एक रिश्ता सा जुड़ गया,
काउंटर के उस पार सब अपना सा लगने लगा।

चाहे लेनदेन की बात हो या बैलेंस की पूछताछ,
मुझे तो बैंक का हर ग्राहक लगता है सरताजा।
बस 15 वर्षों का यह सफर यूँ ही पल में गुजर गया,
बैंक का हर ग्राहक जैसे सीधे दिल से जुड़ गया।

अपने ग्राहकों को जब हम बैंकिंग की बात समझाते हैं,
बचत व निवेश से उनके उज्ज्वल भविष्य की राह सुझाते हैं।
जब डिजिटल बैंकिंग की राह पर हम उन्हें लेकर आते हैं,
तो उन्हें सुरक्षित बैंकिंग का मार्ग भी दिखलाते हैं।

जब साइबर अपराध से बचने की आती है ग्राहकों की बारी,
तो जागरूकता के साथ शुरू होती है सुरक्षित बैंकिंग की तैयारी।
अपने ग्राहकों के साथ रिश्ता ही है अपना इतना गहरा,
उनके बचत निवेश पर हम सदैव रखते हैं सख्त पहरा।

चाहे युवा ग्राहकों की हो बात या बुजुर्ग ग्राहकों का साथ,
हम हर पीढ़ी को सिखाते हैं सुरक्षित बचत व निवेश की बात।
युवा पीढ़ी के साथ हम भी ai1 ऐप संग डिजिटल बन गए,
पेंशनधारक भी हमारी ग्राहक सेवा से प्रफुल्लित हो गए।

चाहे ऑनलाइन बैंकिंग की राह हो या डिजिटल ऋण की चाह,
ग्राहकों की हर मांग को हम पल भर में निपटाना सीख गए।
कैनबैंक में हम सबका यही है एक सपना,
सुंदर और सुरक्षित हो हर ग्राहक का घर अंगना।

अपने ग्राहक के हर छोटी से छोटी आकांक्षाओं को रहें तत्पर,
कैनबैंक में ग्राहक सेवा सदैव रहता है सबसे ऊपर।
हम ग्राहक के हर सुख – दुःख में हरपल साथ रहें,
हर ग्राहक के मन में कैनबैंक की एक अमिट पहचान रहे।



मोनालिसा पंवार

ग्राहक सेवा सहयोगी
जोधपुर पाल रोड
एलआईसी सीए शाखा



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
English Poetry

"My vision of Viksit Bharat"



Soumya Sucharita

CSA
Khandagiri Branch

In the heart of Bharat, a vision takes flight,
Viksit Bharat bathed in hopeful light.
A nation transformed, reaching new height.
Innovation blooms, technology's embrace.
Empowering dreams, a futuristic chase.
From mighty Himalayas to the seas so grand,
A vibrant, Viksit Bharat shall stand.

Women leading with courage and grace.
Every heart and mind finding its place.
Opportunities abound for every soul,
In this Viksit Bharat, achieving its goal.

From cities bustling with sustainable might.
To rural landscapes bathed in renewable light.
Social bonds strengthened, communities unite.
In the embrace of progress,
under the sun's bright.
Education's the beacon, enlightening minds.
Equality reigns, in diverse binds.

Economic prowess, a thriving trade.
Communities uplifted progress well-laid.
Cultures entwined, a mosaic so grand,
Unity prevailing, across the land.

Green fields stretch beyond the eye,
Eco-conscious choices soar high.
Healthcare for all, a resilient core,
Well-being a priority, forevermore.
Sustainability whispers through the air,
Green landscapes flourishing, beyond compare.
Harmony with nature, a pledge to keep,
Viksit Bharat, where the earth
and dreams meet.

Bridges connecting hearts, north to south
Progress resonates in every month.
As the clock ticks towards 2047's gate,
India strides forward, destiny and pride.

A future shaped where dreams coincide.
Governance sturdy, transparent and true,
Ethical pillars holding the nation's view.
In the corridors of power, a noble feat,
Viksit Bharat, where honesty and trust meet.

For every dream and vision, bright and true,
Together we'll build a Bharat anew.



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Hindi Poetry

छोटा कार्य, बड़ा प्रभाव – कैसे छोटा कार्य ग्राहक सेवा में दूरगामी प्रभाव डाल सकता है।



अभिषेक गर्ग
सेवानिवृत्त,
केनरा बैंक

बैंकिंग के इस प्रतिस्पर्धात्मक दौर में,
ग्राहक सेवा ही है मूलभूत आधार।
अपने ग्राहकों की त्वरित संतुष्टि से ही,
बढ़ता रहेगा अपना बैंकिंग कारोबार।

मिले ग्राहक जब भी हमारे परिसर में आकर,
बैठाकर कीजिये स्वागत सदैव मुस्कराकर।
लीजिये हाल-चाल व वर्तमान सेवा का फीडबैक,
ग्राहक होंगे संतुष्ट हमेशा ऐसा व्यवहार पाकर।

करके सेवा अवश्यकताओं की जानकारी,
शीघ्र अति शीघ्र करें निष्पादन की तैयारी।
समय पर समस्या का समाधान करना ही,
हर एक केनराइट्स की है ज़िम्मेदारी।

केनरा बैंक की समस्त सुविधाओं का हो ज्ञान
तभी होगा ग्राहक की ज़रूरत समझना आसान।
हमारे बैंक के उत्पादों का विस्तृत वर्णन करके,
करना चाहिये ग्राहकों के समस्त प्रश्नों का निदान।

चाहें ग्राहक हों बड़े बुजुर्ग या फिर हों महिलाएं,
उन सभी को सदैव ही प्राथमिकता से दें सेवाएं।
वित्तीय समावेशन का अधिकार सभी का है,
समाज के हर वर्ग के प्रति अपनापन दिखाएं ॥

शिकायतों के प्रति सदैव सजगता व सक्रियता दिखाएं,
सकारात्मक तरीके से समस्याओं को समय पर निपटाएं।
केनरा बैंक की हमारी जो है ये आधारभूत Tagline,
"Together we can" को सदैव व्यवहारिकता में लाएं।

छोटे-छोटे व्यवहारिक बदलाव है बड़ी सफलता की कुंजी
संतुष्ट ग्राहकों के फीडबैक के समान है न कोई साख दूजी।
लक्ष्य है ब्रांड केनरा बैंक को सदैव शीर्ष पर बनाये रखना,
ग्राहक सेवा व ग्राहकों की संतुष्टि ही है हमारी असल पूंजी।



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Colour Photography



Athira S Asokan
CSA
Ettumanoor



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Colour Photography



Vinu Anand S
Officer
Kochi Kaloor Market Branch



"Kudos to Our Champs!"

Shreyas Team wishes you continued success and Bright Future"

"LITTLE CHAMPS, BIG ACHIEVEMENTS"- EXCELLENCE UNLOCKED

Ms. S. Krishi Reddy, D/o Sri. S. Krishna Reddy, Officer, RAH M G Road, RO-Central, Bangalore Circle studying in Class 12th has been shortlisted under Top 100 for Vikram Sarabhai Science Foundation for outstanding scores in SPOT Senior (Science Promotion Orient Test) and having qualified National Spot Prelims, 2024-2025.



Ms. Pabbisetty Srinivitha, D/o Sri. Pabbisetty V. K. Niranjana, Divisional Manager, DBS Vertical, Head Office, has secured 98 % in CBSE 10th Board Exams emerging as a School Topper and securing 100/100 in Science and IT subjects.



Master. Abhinav Kumar Sah, S/o Sri. Ashok Kumar Sah, DGM, Hyderabad CO and Smt. Reshma Ashok Sah, AGM, Ernakulam RO, has secured 96.2% in 12th Board Exams.



Ms. Tanya Sharma, D/o Sri. Deepak Kumar Sharma, Officer, HRM section, Lucknow CO secured 92.60 % in the 10th grade CBSE Exam.



Ms. Sushmitha. S D/o Sri. R Suresh, CSA, Thyamagondlu Branch and Smt. M Umadevi, Office Assistant, Nelamangala branch, Karnataka has secured 90.34% in 2nd PUC exam in PCMB stream.

"Kudos to Our Champs!"

Shreyas Team wishes you continued success and Bright Future"



Ms. Dhulialla Dhruthi Saranya D/o Sri. V Durga Prasad D, CSA, MSME Sulabh Vijayawada secured 97.33 percentage in 10th Board Exams. She stood school second in Narayana EM School, Kanuru, Vijayawada.

Master. Kartik Amit Andraskar S/o Sri. Amit N Andraskar, DM, Integrated Treasury Vertical, Mumbai secured 91% in 10th grade CBSE Exam.



Master. Shaurya Ambasta S/o Sri. Anurag Shyam Ambasta, Divisional Manager, Resources Vertical, Head Office has secured 95.50% marks in 10th Grade CBSE exam.

Master. Mekala Gyan Kirit, S/o Sri. Mekala Babu Senior Manager, RAH Rangareddy has secured 486/500 (97.2%) in 10th CBSE board exams. He also won first prize in the International Social Studies Olympiad at school level and 17th rank at the Zonal level.



Ms. Reenu Anna Mathew, D/o. Smt. Ani Mathew Officer, Pidavoor Branch, Kollam Regional Office achieved her childhood dream by clearing UPSC with 81st Rank in Civil Service in the year 2025.

SU-DO-KU

To solve a su-do-ku puzzle, every digit from 1 to 9 must appear in each of the nine vertical columns, in each of the nine horizontal rows, and in each of the nine boxes.

2						6		
		4		2				1
1					3			8
8		2					9	4
3			9					
			7					
			6		5	4		
5	7	8	2	3		6		
						1	9	

FUN
CORNER

Spot the difference

FIND 5 DIFFERENCES



OOOOO

1. The center of the sunflower is lighter in the left image and darker in the right.
2. There are two birds in the left image, replaced by two pumpkins in the right image.
3. The barn has a window above the door in the left image, missing in the right image.
4. The cloud shapes differ slightly between the two images.
5. The fence behind the barn has an extra vertical post in the left image that's missing in the right image.

Spot the difference

4	3	6	2	8	7	1	9	5
5	7	8	3	1	9	4	6	2
9	2	1	6	4	5	3	8	7
6	1	9	7	3	8	2	5	4
3	4	7	9	5	2	8	1	6
8	5	2	1	6	4	9	7	3
1	9	5	4	9	3	7	2	8
7	6	4	8	2	6	5	3	1
2	8	3	5	7	1	6	4	9

SU-DO-KU

Answers to the SU-DO-KU and Spot the difference



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Travelogue

A Journey to the Mighty WHITE



Harsha K R

Manager (Official Language)
Regional Office Palakkad

Leh-Ladakh, the land of rugged terrains, clear skies, and the mighty Himalayas, is a dream destination for many travellers. For adventure enthusiasts, it is a place where road trips transcend the boundaries of mere travel, becoming an exploration of the spirit. My journey from Delhi to Leh-Ladakh by road was to experience the wild, untamed beauty of the region and to test my limits as a traveller. This travelogue captures the essence of our road trip, the challenges, the triumphs, the landscapes, and the unforgettable experiences that made Leh-Ladakh one of the most extraordinary regions on Earth.

On 19th Sept my husband Aswin, started our dream trip from “Kerala – Kashmir – Kerala”. He started his Solo journey in a 1997 model Maruti 800. He covered Kerala – Tamil nadu – Bengaluru – Mumbai – Gujarat – Rajasthan – Delhi and reached Delhi on 29th September. On 30th September, I joined him at Delhi. We halted at Delhi for the night and on 1st October we started our journey.

Delhi to Manali – A Long Start

The excitement of the road trip was palpable as we set out from Delhi, the bustling capital of India, early in the morning. We decided to take the iconic Manali – Leh Highway, which would take us through some of the highest passes in the world and across breath taking landscapes. Our first destination was Manali, which is approximately 550 kilometres from Delhi.

The journey began with the hum of the engine and the thrill of leaving the crowded streets of Delhi behind. We passed through Haryana and Punjab, where the landscape shifted from the flat plains to the foothills of the Himalayas. The drive was long, and the roads were often crowded with trucks and buses, but the anticipation of the journey ahead kept us going. We

stopped at various dhabas for some authentic North Indian food – parathas, dal, and chai – and began our acclimatization to the idea of long road trips. We took Diamox tablets to get acclimatised for travelling amidst the mountains but after a point of time, it didn't work for me.

As we neared Manali, the terrain became more rugged, and the air grew cooler. The first sight of the town of Manali, with its quaint cottages nestled in the hills, was a relief after hours of driving. We checked into a local guesthouse- Beas Regency, eager to rest before continuing our journey the next day.

Manali to Leh – The Adventure Begins

Manali is known for its cool weather and scenic landscapes, and it is also the gateway to some of the highest motorable passes in the world. We had a small drive at Manali, covering Hidimba temple and Jogini Falls. We moved through the awesome Atal Tunnel, a 9.02-kilometer-long highway tunnel that connects Manali and Lahaul in Himachal Pradesh. Next we were staring at Rohtang Pass, located at an altitude of 13,051 feet, which is the first major pass on the route to Leh. After a brief stop at the pass for some photographs and a hot cup of tea from a local stall, we descended toward Keylong, the first major town on the way to Leh. The road beyond Rohtang was less crowded, but it was still an exhilarating experience, with narrow, twisting roads hugging the mountain-side. Our night stay was at Padma Lodge, at Jispa. Lobzing, the owner of the Lodge was an amazing human, he arranged a Camp fire and gave an amazing hospitality.

We stopped at Baralacha La, a high mountain pass located at 16,040 feet. It is one of the highest points on the Manali-Leh Highway and is known for its

breathtaking views of snow-covered peaks and glaciers. A brief stop at Baralacha La allowed us to catch our breath and take in the surroundings before continuing our journey.

Our goal for the day was to drive to Pang but due to my health reasons (mountain sickness) we had to tent at Sarchu, desert plateau located at an altitude of 14,500 feet with -3 degree Celsius.



Sarchu to Leh – Crossing the Tanglang La Pass

Our next destination was Leh, the journey was filled with excitement and a bit of apprehension, as we were about to cross one of the most notorious passes on the route- The Nakeela Pass, however the road experience to this place turned out to be majestic and magical. We crossed Pang, the road was rough and barren, but the views were stunning.

The final leg of the journey was both exhilarating and challenging. Our destination for the day was Leh, but to reach it, we had to cross the formidable Tanglang La, one of the highest motorable passes in the world, standing at 17,480 feet. My hands turned blue due to lack of oxygen and low air pressure. (I had a sensation of throwing up but still managed) The challenge of reaching the top of the mountain was daunting, but with every twist and turn, the excitement grew. From Tanglang La, it was a descent into the Leh valley. As we made our way down, the first sight of Leh itself was a sight to behold. The town of Leh, with its Tibetan Buddhist monasteries, colorful markets, and welcoming people, offered a sense of peace and serenity.

Arrival in Leh: moving towards Nubra valley Through Khardhungla

After several days of challenging travel, we finally arrived in Leh. The town was perched at an altitude of 11,500 feet. We checked in at Hotel Shanti Palace. The pre-paid SIM doesn't work in Leh and we had to get ourselves a post-paid SIM for communication . We also got our Inner Line Permit (ILP) to travel from Leh. We spent the day exploring the town, visiting the Leh Palace, Shanti Stupa, Hall of Fame, Thiksey Monastery, Magnetic Hill and several monasteries that dot the landscape around Leh. Next day, we started our journey early in the morning from Leh to Nubra Valley through some of the most stunning landscapes in Ladakh. Our route was via the Khardung La Pass, one of the highest motorable roads in the world, located at an altitude of 5,359 meters (17,982 feet). After about 1.5 to 2 hours, we reached “Mighty Khardung La”, where we paused to take the awesome inspiring views, clicked some pictures, and braved the thin air at -6 degree celsius.



Descending from Khardung La, we entered the Nubra Valley, a beautiful oasis of lush green fields, sand dunes, and the famous Shyok River. Nubra Valley lies at an altitude of 3,000 meters (9,800 feet), a stark contrast to the higher altitudes of Leh. The valley is known for its unique combination of snow-capped mountains, sandy dunes, and orchards. On our way to Diskit we tried a Bungee jump at Ladakh Bungee (10200 ft above sea level).



We stayed overnight in Diskit, in one of the charming guesthouse. Tashi uncle, the owner of the guesthouse

welcomed us warmly and served the traditional Ladakhi dish, Skyu. Being with them it felt like home after my long trip.

Next day morning, we set out journey towards Hunder to fulfil one the items in my bucket list 'Riding the rare Bactrian camel'. Hunder, was filled with the famous Bactrian camels. These two-humped camels are an iconic symbol of the valley, and we took a short camel ride across the sand dunes. We tried the traditional Ladakhi dress and clicked pictures of us with mountains in the background.



Next, we visited the Diskit Monastery, the oldest and largest monastery in Nubra Valley. The monastery is perched on a hill, offering spectacular views of the valley below and the Ladakh Range. The highlight of the visit is the Giant Buddha statue, a 32-meter tall structure that stands majestically on the hilltop. After spending some time at the monastery, we tried a ATV ride in the sand dunes.

Nubra Valley to Pangong Lake (via Chang La)

After a refreshing stay in Diskit, it's was our time to head towards Pangong Lake. The route, approximately 240 km, takes you through a series of majestic mountain ranges, high-altitude passes, and dramatic landscapes.



Reaching the Chang La pass (17,590 feet), the third-highest motorable pass in the world is one of the most memorable parts of this journey. As you ascend, the

landscape changes dramatically, and the air gets thin, making it a thrilling experience with Chang La freezing at 12 degrees. After crossing Chang La, the road descends into the stunning Pangong Lake, situated at a height of 14,270ft above sea level and is said to be one of the highest brackish water lakes in the world. It is a transboundary lake which borders between India and China. The lake, famous for its crystal-clear waters that change colors from blue to green and even shades of red depending on the time of day, is a surreal sight to behold. It reminded me of the Bollywood movie '3 Idiots'. When we reached Pangong we experienced heavy chilly cold snow rain. We stayed at Tagste in a local Ladakhi House.

A Snowy Farewell

Next morning, after soaking in the beauty of Pangong Lake, we began our return journey to Leh, retracing the same route through Chang La. The journey back was the hardest one that we faced in the whole Trip. The temperature was -12 degree and the road was covered in a thick layer of snow due to heavy snowfall and the tourist vehicles got trapped in the slippery snow. Our 1997 model Maruti 800 was the only vehicle which was moving in the snow taking behind all other vehicle which were trapped in the snow. Some of the Local Ladakhi warned us not to travel in this weather, But I had a flight to catch from Delhi to return to Bangalore that evening. A Local Ladakhi person Mr. Mutup helped me to get a local Bolero vehicle which had chains in the tyre. We decided that my husband will stay back in Chang La and bring our Maruti 800 when the road is cleared and I will reach Leh Airport in the Local vehicle and board my flight. Though the situation was a bit tough we decided to go on with it. I reached around 4 pm at Leh airport and with god's grace I could catch my 3pm flight as it got rescheduled to 4.45pm. When the road was cleared by 'Border Road Organisation' My husband started his solo journey again from Leh-Jammu-Chandigarh-Delhi and finally Kerala.

Leh-ladakh isn't just a destination; it's an emotional journey that stays with you long after you've left its road. The travel has taught me lessons and experience which will last for a lifetime. As I flew over the mighty White, I promised Leh that I will return once again.



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Travelogue - Hindi

रामेश्वरम



अबदेश कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक
मुंबई अं.का.

यह 23 नवम्बर 2023 का दिन था। हमारी उड़ान सुबह के छह बजे, दिल्ली के इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से मदुरै के लिए थी और हम दिल्ली से चल दिये मदुरै के लिए। इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से हम हवाई जहाज से लगभग 08:45 पर मदुरै पहुँचे। वहाँ से हम टैक्सी के द्वारा 12:00 बजे रामेश्वरम पहुँच गए। इस यात्रा में हमारा पूरा दिन बीत गया। जब हम दिल्ली से चले थे, तब वहाँ के मौसम में गुलाबी ठंड का अहसास आ चुका था। दिल्ली में ठंड शुरू हो चुकी थी, क्योंकि महीना नवंबर का था। उत्तर भारत की ठंड दक्षिण भारत में भी महसूस हो रही थी। यहाँ मौसम बहुत ही खुशनुमा था। किन्तु हमारे मन में रामेश्वरम घूमने का उत्साह था।

रामेश्वरम अर्थात् प्रभु राम के ईश्वर अर्थात् शिवजी, प्रभु राम तथा भगवान शिव का स्थान। अगले दिन प्रातः ही हम मंदिर के लिए निकल पड़े। रामनाथन स्वामी मंदिर पहुँचते ही सर्वप्रथम हमें समुद्र के दर्शन हुए, समुद्र गहरा होने के साथ-साथ एकदम शांत भी था। पुस्तकों में पढ़ा था कि यहाँ के समुद्र का किनारा सदैव शांत रहता है और आज के शांत समुद्र दर्शन से प्रमाण भी प्राप्त हो गया। मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था कि यह शिव जी के प्रकोप से या प्रभु श्रीराम जी के भय से, परन्तु प्रभु की लीला प्रभु ही जाने। आगे की पगडंडी पर दोनों ओर प्रसाद, सीप और मोती से बनें सामान तथा पत्थर की मूर्तियों की दुकानें थी।

प्रसाद लिया और हमने मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर बहुत ही आकर्षक व भव्य-दिव्य था। प्राचीन वास्तुकला का अनूठा उदाहरण था। मंदिर में बाइस जल-कुंड थे, जिन्हें तीर्थ समान माना जाता है। इन जल कुंडों में स्नान का विधान है, परन्तु हमने केवल इनका आचमन किया। इसके पश्चात हमने शिवलिंग के दर्शनों के लिए प्रस्थान किया। गलियारे में दोनों

ओर स्तम्भ थे, जिनके ऊपर की ओर की दीवार पर रामायण के चित्र अंकित थे। मुख्य मंदिर काले पत्थरों का बना हुआ था। वहाँ की दीवारों में ऊपर की ओर झरोखे बने हुए थे, जिनसे समुद्र की ओर से मंद-मंद बयार तन को शीतलता प्रदान कर रही थी तथा समुद्र की शांत लहरों की कल-कल ध्वनि मन को ठंडक पहुँचा रही थी।

मंदिर हर हर महादेव व जय श्रीराम की ध्वनि से गूँज रहा था। दर्शकों की पंक्ति बहुत लम्बी थी, लेकिन मन प्रभु दर्शन को उत्सुक व अखियाँ हरि दर्शन को प्यासी थी। यहाँ पर दो शिवलिंग थे। प्रथम का प्रभु राम ने रेत से निर्माण किया जिसे राम लिंगम् कहते हैं। द्वितीय जिसे हनुमान जी ने काशी से लाकर स्थापित किया जिसे शिव लिंगम् कहते हैं। इसीलिए इस स्थान को दक्षिण का काशी भी कहते हैं तथा यहाँ पर भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों का वास है। अंततः



हमारी इच्छा और प्रतीक्षा पूर्ण हुई और प्रभु दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमने ईश के सम्मुख नतमस्तक होकर अपना जीवन धन्य किया। ऐसा कैसे संभव हो सकता है कि महादेव के साथ नंदी ना हो। वहाँ पर आगे नंदी महाराज विराजमान थे। काले पत्थर के बने हुए नंदी मंदिर की सुन्दर मूर्ति कला का साक्षात् प्रमाण थे। वहाँ पर अन्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ भी स्थापित थी। सभी मूर्तियाँ काले पत्थरों की ही बनी हुई थी।

हमारा मन हमें वर्षों पीछे ले गया। एक समय ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हम त्रेता युग में आ गए हो। हम सबके आगे शीश नवाते व उनके चरण स्पर्श करते हुए अब हम बाहर निकल आए और वापस उन्हीं पगडंडियों पर चल पड़े। वहाँ से हमने शिवलिंग खरीदा। वहाँ की यादगार के रूप में हम प्रभु को अपने साथ लेकर चल पड़े।

हमारा अगला पड़ाव था गंधमादन पर्वत। यहाँ के लिए प्रसिद्ध है कि यहाँ से हनुमान जी ने लंका के लिए छलाँग लगाई थी तथा प्रभु श्रीराम ने यहाँ पर विश्राम किया था। यह स्थान नाम के अनुसार ऊँचाई पर स्थित था। थोड़ा पैदल चलने तथा कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद जब हम ऊपर पहुँचे, तब आनंद आ गया तथा समझ में आया कि प्रभु श्रीराम ने विश्राम करने के लिए बहुत ही उत्तम व उचित स्थान का चयन किया था। यहाँ से रामेश्वरम के पूर्ण दर्शन हो रहे थे। चारों ओर हरियाली के बीच-बीच में ऊँचे-ऊँचे नारियल के वृक्ष थे। वहाँ की छटा अजब-ग़ज़ब निराली थी। हवा काफ़ी तेज़ और ठंडी थी। थोड़ा समय हमें भी प्रभु श्रीराम की तरह विश्राम का अवसर मिला।



अब हम वहाँ से नीचे उतरने लगे, क्योंकि हमें आगे की ओर प्रस्थान करना था।

हमारा अगला पड़ाव था धनुषकोडी। शहर की भीड़भाड़ व शोरगुल को छोड़कर हम आगे बढ़ें, तो दृश्य रोमांचक हो गया जिसे देखकर हम रोमांचित हो गए। बीच सड़क पर



हमारी कार दौड़ लगा रही थी और सड़क के दोनों तरफ समुद्र। हमारे एक ओर हिंद महासागर तथा दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी थी। इस गलियारे में हमारी कार काफ़ी दूर तक दौड़ती रही। इतना समय रोमांचकारी व अचम्भित करने वाला रहा।



इस स्थान का विशेष धार्मिक महत्त्व है। यहाँ से प्रभु श्रीराम ने राम सेतु का निर्माण किया था। यह स्थान शिवलिंग के आकार में था। इसीलिए हमने प्रथम अर्द्ध परिक्रमा की, फिर घूमकर आए और शेष अर्द्ध परिक्रमा पूर्ण की।

परिक्रमा के साथ-साथ हमने समुद्र दर्शन भी किया और दूर से ही राम सेतु को प्रणाम किया। शिवलिंग आकार के बीचों बीच हमारे देश भारत का राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तम्भ विराजमान था। जो इस स्थान को गौरवान्वित कर रहा था।

हमने समुद्र की लहरों से अठखेलियाँ की और रेत में क्रीड़ा करके हम वापस चल दिए। वहाँ से वापस आते समय, रास्ते में एक छोटा सा शांत मंदिर भी था। उस मंदिर की मान्यता यह थी कि यहाँ पर भगवान श्रीराम ने विभीषण का राज्याभिषेक करके लंका का राजा बनाया था।

धनुषकोडी के रेत का कण-कण, जल का छल-छल व हवा का सन-सन राम कथा का वर्णन करता है। आज हमने चार धामों में से एक धाम की यात्रा पूर्ण की। अब आगे की यात्रा के लिए दुगुना उत्साहवर्धन हो चुका था।

अब हम पहुँच चुके हैं आज के समय में विज्ञान के युग में और महान वैज्ञानिक, हमारे देश के राष्ट्रपति डॉ ए. पी. जे. कलाम हाउस, जिसे भारत सरकार ने संग्रहालय के रूप में निर्माण करवाया है। यह एक छोटा सा घर है, सीढ़ियाँ चढ़कर हम ऊपर पहुँचे। वहाँ का वातावरण बिल्कुल अलग था।



कलाम साहब की किताबें काँच की अलमारी में रखी हुई थीं। उनके उच्च विचार बड़े-बड़े शब्दों में तस्वीर के रूप में लगे हुए थे। उनकी सेना की वर्दी, वस्त्र, पेन व अन्य सामान प्रदर्शन के लिए रखा हुआ था। एक महान आत्मा की सादगी भरी जिंदगी की बहतरीन तरीके से प्रस्तुति।



वहाँ पर लिखे हुए कलाम साहब के शब्द मन को छू गए जिन्हें लिखे बिना मन ही नहीं मान रहा है। वे चंद पंक्तियाँ –

खोज

मैं चढ़ते-चढ़ते, हाँफ रहा हूँ, कहाँ है शिखर? हे मेरे ईश्वर!
मैं खोज रहा हूँ जहाँ – तहाँ,

ज्ञान का खजाना कहाँ है छिपा? हे परमपिता!

मैं दूर समंदर में खो रहा हूँ नैया

खोज रहा हूँ नया टापू

कहाँ है अमन? हे मेरे भगवान!

हे मेरे ईश्वर,

मेरे राष्ट्र को दो वरदान

मेहनत और ज्ञान का दान

जिससे खिल उठे खेत – खलिहान

आए हरियाली, चारों ओर खुशहाली।

इन शब्दों को पढ़कर सोच रहा था कि छोटे से घर में रहने वाला गरीब बच्चा इतना ज्ञानी और राष्ट्र के लिए समर्पित है। यही गुण उन्हें सबसे भिन्न बना रहा था। इसी गुण के कारण वह देश के सर्वोच्च वैज्ञानिक और देश के राष्ट्रपति बनें।

इसके बाद हम गए कलाम मेमोरियल। यह बहुत ही शानदार इमारत थी, जिसका निर्माण भारत सरकार के द्वारा किया गया था। यह स्मारक कलाम साहब को समर्पित थी। यहाँ पर भी कलाम साहब के सामान की प्रदर्शनी के साथ-साथ उनकी तस्वीरें, भाषण आदि थे।





हर स्थान का एक अलग महत्व होता है। इस स्थान का भी है। यहाँ कलाम साहब की कब्र है जो इस स्थान के महत्व को बढ़ा रही है। कलाम साहब आज भी हर भारतीय के दिल में बसते हैं।

आज का दिन बहुत ही विस्मयकारी रहा क्योंकि हमने त्रेतायुग और कलियुग दोनों के दर्शन किये, धार्मिक अनुष्ठान किये, तो कलाम साहब के विज्ञान को सलाम किया।

आज के विशेष दिन की बहुत सारी यादें लेकर हम वापस होटल आ गए।

Gen Z Literature

Gen Z lingo is constantly evolving, but here are a few popular terms with their meanings and examples:

1. No Cap / Cap

Meaning: "No cap" means "no lie," "for real," or "I'm telling the truth." "Cap" (used alone) means "lie" or "exaggeration."

Example: "He said he finished his homework, but that's cap."

2. Bet

Meaning: An affirmation or agreement, similar to "okay," "sure," or "definitely."

Example: "Want to grab coffee after work?" - "Bet!"

3. Rizz

Meaning: Short for "charisma," it refers to someone's ability to charm, flirt with, or impress another person.

Example: "He's got so much rizz, he can talk to anyone."

4. Vibe

Meaning: The overall atmosphere, feeling, or energy of a place, person, or situation.

Example "This cafe has such a chill vibe."



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Travelogue

Kaleidoscope of Kuala Lumpur - Where City Lights Meet Cultural Heights



Safin Ahmed S

Customer Service Associate
Trichy Rly. Junction

Having transited through the Malaysian airport for a couple of times, I had always been intrigued by what lays beyond the terminals. The urge to explore the country finally became irresistible, when Malaysia offered visa-free entry to Indians (now extended up to December 2026). The affordable flights and a comparatively lower cost of living, make it a budget-friendly destination for a quick getaway. In this travelogue, I aim to convey my experiences in the capital city of Kuala Lumpur and the historic city of Malacca, which offer an intriguing blend of hyper-modernity and rich cultural heritage.

Day 1: Arrival

My friend and I set off from Trichy International Airport, taking a short, 4-hour flight. Immigration was smooth and easy, requiring our pre-filled Malaysian Digital Arrival Card, passport, proof of stay, and return tickets. We arrived at Mingle Chinatown Hostel near **Petaling Street**, which was our stay for the first two days. The hostel had a colonial-style architecture with a vintage theme.

A Journey along KL's history

After a few hours of rest, we relaxed in the jacuzzi on the top floor, which offered a great view of **Merdeka 118**, the second tallest building in the world. In the afternoon, we ventured out to explore Petaling Street, a perfect spot to begin the journey. It is a bustling shopping area filled with unique goods, a lively atmosphere, and rich cultural heritage which is a blend of Malay, Chinese, and Indian.

Next, we took a stroll around Merdeka Square (**Dataran Merdeka**) which is a historical site where the Malaysian flag was first hoisted in 1957. Every

year, people gather here to celebrate the country's independence which is also the home to a 100-meter-tall flagpole, the tallest in the world. Across the square stands the **Sultan Abdul Samad Building**, another colonial structure, which now houses various government departments and has an iconic 41-meter-high clock tower. Nearby there are other attractions like **St. Mary's Cathedral** and the **National Textile Museum**. This is a vehicle-free zone, ideal for walking, with a pleasant breeze filling the air. As evening fell, we were treated to a golden sky at twilight, with the Merdeka 118 tower standing tall as a jewel against the horizon.



Merdeka 118



Sultan Abdul Samad Building

We then took a walk along the **River of Life**. Kuala Lumpur, which means “muddy confluence” in Malay, originally developed at the confluence of the **Klang** and **Gombak** rivers. The waterfront area has since been transformed into a key tourist attraction through the River of Life project, featuring walking trails that connect various landmarks. At night, the illuminated river trail, combined with artificial mist, creates a stunning visual experience.

Nightlife

After a brief rest at the hostel, we took a group tour, organised by the hostel to **Bukit Bintang**, known for its vibrant nightlife. It is Kuala Lumpur's shopping and entertainment hub, with the **Pavilion Mall** being a key highlight. We spent the evening café-hopping, enjoying dinner, and walked back to the hostel.

Day 2: Exploring Malacca - Colonial history

Today's destination on our itinerary was Malacca (or Melaka), a **UNESCO World Heritage site**. Malacca is situated in the southern part of the Malay Peninsula, along the **Strait of Malacca**. Its significance as an important trade hub historically has given a unique touch to the cultural heritage of Malacca, which is a blend of Malaysian, Chinese, Indian, Arab, and Colonial European influences. Malacca is about a two-hour bus ride from Kuala Lumpur. During our visit, we learned that Malacca was chosen as the venue for World Tourism Day 2025.

At the heart of the city, is the **Dutch Square** or **Red Square**, Malacca's iconic landmark, known for its Dutch colonial buildings, all painted in a distinct red hue. One of the prominent buildings is the **Christ Church Melaka**, a bright red Protestant church that remains in use even today. Nearby stands **The Stadthuys**, which was once the Dutch Governor's residence and is now a museum that displays the colonial history of Malacca. At the center of the square is a water fountain and a clock tower which was built by the British to commemorate Queen

Victoria's Diamond Jubilee. After soaking in the historical sights, we set off to explore the city on foot.

Local life

As we explored the city, we encountered numerous street arts scattered throughout. These murals primarily depict the history, lifestyle, and culture of the immediate neighborhood. Discovering these murals



Red Square



one after another felt like embarking on a treasure hunt. As we explored the street art, we arrived at **Jonker Street**, the soul of Malacca, bustling with heritage buildings, Peranakan goods, Nyonya cuisines,

modern cafés, boutiques, and local shops, where we enjoyed a leisurely stroll. Peranakan is a blend of Malay and Chinese cultures, originating from Chinese immigrants, and Nyonya refers to the women of this culture. Amidst the busy market area was the **Cheng Hoon Teng Temple**, the oldest Chinese temple in Malaysia. We paid our respects to the Goddess of Mercy, Kuan Yin, and grabbed some water.

Floating Mosque

From Jonker Street, we headed to **Masjid Selat Melaka**, located



on an island off the coast. This '**floating mosque**' is built on a foundation over the sea, which creates an illusion of floating during high tides. The mosque, blending Middle Eastern and Malaysian architecture, features a golden dome, intricate arches decorated with Islamic calligraphy, and color-stained glass windows that cast vibrant hues inside. Beside the mosque stands a functional minaret doubling as a lighthouse. The mosque offers a serene ambience. Watching the sunset over the waters and the mosque's illuminated silhouette was a breathtaking and tranquil experience.



Malacca Straits Mosque

Night market

Around seven in the evening, we returned to Jonker Street to experience the famous **Jonker night market**, which operates only on weekends. This is our reason to visit Malacca specifically today (Sunday). The street we had walked through in the afternoon had transformed into a vibrant area, with stalls selling street foods like satay meats marinated in rich peanut sauce, fried noodles, Peranakan cookies, coconut-flavored desserts, and shops selling local souvenirs. We tried some of the food, bought a small souvenir, and rushed to Melaka Sentral to catch a bus back to Kuala Lumpur.

Day 3: Batu Caves

We checked out of our hostel and moved to our next stay in Kuala Lumpur city center. After checking in, we proceeded to Batu caves. **Batu Caves** is one of Malaysia's most iconic landmarks and an important pilgrimage site for Hindus, outside of India. It is dedicated to **Lord Murugan**. It consists of a series of

limestone caves situated on a hill that has both natural and cultural significance. At the entrance to the cave stands the majestic 140-foot-high golden statue of Lord Murugan welcoming the devotees. It is the **tallest statue of Lord Murugan** and the



Batu caves - Murugan temple

second tallest statue of any Hindu deity in the world. Adjacent to the statue are 272 colorful steps to reach the temple. As we climbed the steps, we were treated to magnificent views of Kuala Lumpur's evening sky. The temple cave above is vast and has good natural illumination. We paid our respects to the deities and made our way back down. By the time we reached the entrance, the sun had completely set, offering us the night view of the space. The statue glowed with artificial lighting, and the temple space was subtly illuminated, giving the atmosphere a divine feel.

Heart of KLCC



We then returned to our hotel and headed straight to the rooftop to catch a glimpse of the illuminated twin towers glowing magnificently. Watching the Petronas Twin Towers from a rooftop infinity pool was our bucket-list moment, we checked off that day.

It was a surreal experience, seeing the towers up close, surrounded by a host of other skyscrapers, all enhancing Kuala Lumpur's skyline. Reluctant to leave the scene, we ordered takeaway and spent a couple more hours soaking in the view before ending the day.

Day 4: Asia's longest Go karting circuit

After a rejuvenating morning swim, we set off for our next activity – go-karting at the **LYL International Karting Circuit**. It is the longest karting circuit in Asia, featuring a 1.5 km race track with 15 thrilling corners, 6 high-speed straights, and one gravity-defying flyover. We drove a 270cc diesel-powered kart. The session is designed as a typical race, where laps and times are recorded and ranked at the end. Not only tourists, but also many regulars visit here for the adrenaline-rushing experience.

Twin Towers Tour

Next we proceeded off to KL to tour the iconic **Petronas twin towers**. As we reached earlier than our reserved slot, we decided to wander in the **Suria KLCC** mall at the base of the towers and grab a quick snack there. The towers with a height of 452m, were once the tallest buildings in the world and are now the **tallest twin towers globally**. The towers were envisioned as a symbol of the nation to diversify from agriculture to an industrial and technological economy and emerge as a modern nation on the global stage. First we were taken to the skybridge. It is a 58m long bridge that connects the two towers and is 170m above the ground. It is not permanently fixed, but is mounted on bearings that allow it to slide in and out horizontally, allowing the towers to

sway in strong winds and during an event of earthquake. Then we moved on to the observatory deck located on the 86th floor, 370m above the ground. The deck has large glass panels to give uninterrupted panoramic views of the city. The tower is illuminated by LED lights at night, placed strategically on the stainless steel and glass exterior which makes the tower shine like a jewel in the sky. After the twin towers tour, we decided to explore KLCC on foot, since it's our last night in the city. The tower shining in its white facade lighting is clearly visible from the many photogenic parts around the city where one must not miss clicking a picture with it. As we explored the city on foot, we got lucky to witness the Twin Towers transitioning their colors from the usual white lighting to blue, green, and red as part of the rehearsal for light display during Diwali, which is just around the corner.

Day 5: Take off

This is the last day of our trip. Our flight departs in the afternoon, so we began the day with a relaxing swim in the rooftop infinity pool, enjoying the dynamic morning skyline of Kuala Lumpur. Afterward, we visited nearby malls such as Suria KLCC, Pavilion, and Aeon to pick up some souvenirs before taking a cab to the airport.

Expenses (Cost per person)

I have summarized the expenses per person to give a fair idea. **Flights** : Round trip from Trichy ₹18,000; **Accommodation** : **Budget stay**: Mingle Chinatown Hostel (2 Nights) ₹3,725, **Luxury Stay**: Ascott Star KLCC (2 Nights) ₹12,000; **Transport** : Grab rides, buses, metro ₹3,000; **Food** : ₹6,000; **Activities** : Petronas Twin Towers Tour ₹1,900, LYL karting Circuit Racing ₹1,700; **E-sim** : ₹1,100; **Total Approximately per person ₹52,000**.

Conclusion

Malaysia, true to its tagline 'Truly Asia', reflects the cultural richness, natural diversity and historical heritage that defines Asia. From modern urban landscapes, ancient temples and diverse cuisines, it offers a unique blend of experiences. A journey through Malaysia is a window to explore the multifaceted essence of Asia itself.





Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Travelogue - Hindi

‘कैरी के महादेव’ की रोमांचक यात्रा



पुष्कर पांडे

प्रबंधक

भोपाल एयरपोर्ट रोड शाखा

भोपाल में हमारी क्षेत्रीय कार्यालय पोस्टिंग के दौरान, हम कुछ सहकर्मियों ने जो मेरे जैसे ही यात्रा, शोध और ऐतिहासिक तथ्यों में रुचि रखते थे, तो हम सब ने मिल कर एक घूमंतू समूह बना लिया था। हम अपनी छुट्टियों का उपयोग मुख्यतः भोपाल और आसपास के अज्ञात, अनछुए ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों की खोज करने में करते थे। यह हमारा एक पार्ट-टाइम शौक था, जिसने हमारे जीवन में एक नया रोमांच भर दिया था। एक बार, फ़रवरी के महीने में, मैं और क्षेत्रीय कार्यालय के एक अधिकारी, श्री अंशुमान और उनके छोटे भाई रिकी हम तीनों अपनी कार से भोपाल से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित एक ऐसी जगह की खोज पर निकले जो अभी तक लोगों से अनजान थी, लोगों की पहुँच से दूर एक अद्भुत और अनोखी जगह थी।

हमारी रोमांचक यात्रा सुबह 5:30 बजे रातापानी वन अभयारण्य के झिरी गेट से शुरू हुई। रातापानी जंगल, जो अब एक टाइगर रिजर्व है, भोपाल के आसपास की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। यहाँ का शांत वातावरण और प्रकृति का निकटता का एहसास आपको मुग्ध कर देता है। पहाड़, जंगल और झरने मन को मोह लेते हैं और यहाँ पहुँचने का रास्ता भी बेहद खूबसूरत है, मनोरम दृश्यों से भरा हुआ है।

यहाँ पर मैं आपको ‘रातापानी वन अभयारण्य’ के बारे में बताता चलूँ जिसको अभी 2 दिसंबर 2024 को, केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से सैद्धांतिक मंजूरी मिलने के बाद रातापानी वन्यजीव अभयारण्य को भारत का 57वाँ बाघ अभयारण्य घोषित किया गया है। रातापानी बाघ अभयारण्य रायसेन जिले में स्थित है, जो भोपाल के निकट है। यह अपने सुंदर सागौन वनों के लिए जाना जाता है और विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों का घर है। यहाँ बाघों के अलावा, भारतीय तेंदुआ, सोनकुत्ता, स्लोथ भालू, धारीदार

लकड़बग्घा, गीदड़, लोमड़ी, चीतल, सांभर, नीलगाय, चिंकारा, चौसिंगा, हनुमान लंगूर, रीसस बंदर और भारतीय शैल अजगर जैसे जीव पाए जाते हैं। कुछ दशक पहले यहाँ बारहसिंघा भी पाया जाता था। प्रसिद्ध भीमबेटका शैलचित्र भी इसी अभयारण्य के पास स्थित हैं जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं।

लगभग 823.84 वर्ग किलोमीटर में फैला यह अभयारण्य 1976 में स्थापित किया गया था। इस रिजर्व का भू-भाग पहाड़ियों, पठारों, घाटियों और मैदानों से बना है। कई मौसमी नदियाँ मानसून में इस क्षेत्र को सिंचित करती हैं, और कुछ तालाबों में गर्मियों में भी पानी रहता है। बरना जलाशय और रातापानी बांध (बैरुसोट झील) प्रमुख जल निकाय हैं। यहाँ के जंगल शुष्क और नम पर्णपाती प्रकार के हैं, जिसमें सागौन मुख्य वृक्ष प्रजाति है। लगभग 55% क्षेत्र सागौन से आच्छादित है, शेष मिश्रित वन हैं। पहले वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र के रूप में जाना जाने वाला यह क्षेत्र, बाघों की बढ़ती संख्या और उनके संरक्षण की आवश्यकता को देखते हुए बाघ अभयारण्य घोषित किया गया। "रातापानी" नाम यहाँ बहने वाली 'राता' नदी के नाम पर रखा गया है। इसका भूगोल पहाड़ियों, घाटियों, नदियों और झीलों से समृद्ध है, जिसमें राता नदी अभयारण्य की जीवनदायिनी है। यहाँ की उष्णकटिबंधीय जलवायु गर्मी में काफी गर्म और सर्दियों में ठंडी रहती है, जबकि मानसून में भारी वर्षा होती है। रातापानी की वनस्पति में सागौन, साल, बांस, तेंदू और महुआ जैसे पेड़ प्रमुख हैं। यहाँ बाघों के अलावा तेंदुआ, चीतल, सांभर, नीलगाय, जंगली सूअर, भालू और कई प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। यह विविधता इसे वन्यजीव प्रेमियों, हमारे जैसे घूमंतू पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बनाती है।

लेकिन हमारी यात्रा का असली उद्देश्य रातापानी के जंगलों के

बीच स्थित कैरी या केरी महादेव का मंदिर था। यह एक अत्यंत रमणीय पर्यटन स्थल है, जो यहाँ स्थित कोलार डैम के रास्ते से या फिर रातापानी अभयारण्य के झिरी गेट से पहुँचा जा सकता है। वन विभाग द्वारा विकसित मार्ग से केरी जाने के लिए शुल्क देना होता है। यह सफ़र रोमांच से भरा है; जंगल का अद्भुत नज़ारा, नीला आसमान, रंग-बिरंगे पेड़ और खुशबूदार हवा आपको मदहोश कर देती है। आपको कई जंगली जानवर भी दिख सकते हैं, इसलिए सावधानी बरतनी चाहिए। रास्ते में कई मचान भी बने हुए हैं जहाँ वनरक्षक तैनात रहते हैं। लगभग 10 किलोमीटर का यह सफ़र एक खुले मैदान में खत्म होता है जहाँ केरी पिकनिक स्पॉट/पर्यटन केंद्र है। यहाँ से सीढ़ियाँ उतरकर आप केरी महादेव जी के मंदिर पहुँच सकते हैं।



केरी महादेव पिकनिक स्पॉट पर पहुँचने पर आपको पार्किंग और बैठने के लिए एक शेड मिलेगा। यहाँ सुरक्षा के लिए वनरक्षक तैनात रहते हैं। पार्किंग स्थल के पास हनुमान जी का एक छोटा मंदिर भी है। यह स्थान बहुत ही आकर्षक है; एक तरफ खड़ी चट्टानों और दूसरी तरफ हरी-भरी घाटी और कोलार



नदी। चट्टानों से गिरता पानी और मंदिर की घंटियों की आवाज़ आपको मंत्रमुग्ध कर देती है। यहाँ एक बुजुर्ग पुजारी भी रहते हैं। यह स्थान अभयारण्य के अंदर है, इसलिए यहाँ लोगों की पहुंच बहुत कम है इसलिए अभी भी यह एक दिव्य और अछूता स्थान है। इसका ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व भी है, और यहाँ की बारिश आपको एक अलग ही अनुभव देती है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता अद्भुत है, जो आपको एक अलग ही एहसास दिलाती है। कहा जाता है कि यहाँ महादेव प्रकट हुए थे और अपने भक्तों को वरदान दिया था।



मंदिर तक पहुँचने के लिए पहाड़ से लगभग 200 पत्थर की सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं, जो बेहद पुरानी लगती हैं। सीढ़ियाँ उतरते हुए, आप प्रकृति के अद्भुत दृश्य देखते हैं – हरियाली, जंगल और एक शांत वातावरण जो आपकी आत्मा को शांति प्रदान करता है। मंदिर में एक छोटा सा शिवलिंग है, जिस पर पहाड़ी से एक झरना लगातार बहता रहता है, 12 महीने, 24 घंटे शिवलिंग का जलाभिषेक करता है। यह दृश्य बेहद दिव्य और मनमोहक है।

बरसात के मौसम में यहाँ पहुँचना लगभग असंभव हो जाता

है। स्थानीय लोग बताते हैं कि उस समय जंगली जानवर भी यहाँ की गुफाओं में शरण लेते हैं। पहाड़ी के नीचे एक नदी भी बहती है, जिसकी आवाज़ आपको सांत्वना देती है। यहाँ का शांत वातावरण और सुगंधित हवा आपको अपनी ओर खींच लेती है। बरसात के दिनों में कुछ साधु-संत यहाँ निवास करते हैं और महादेव की सेवा करते हैं।



यह जगह वास्तव में अद्वितीय है। यहाँ का मनोरम दृश्य आपको जीवन में कभी नहीं भूलेगा। रातापानी टाइगर रिजर्व के कारण अब यहाँ पहुँचना और भी मुश्किल हो गया है, पर वन विभाग से अनुमति लेकर आप यहाँ जा सकते हैं। यदि आप भोपाल या आसपास रहते हैं, तो एक दिन की छुट्टी में आप आसानी से यहाँ पहुँच सकते हैं। लेकिन याद रखें, हमेशा समूह में जाएँ और पूरी सुरक्षा के साथ।

केरी महादेव के पास स्थित हनुमान जी का मंदिर रातापानी वन अभयारण्य के भीतर एक और दर्शनीय स्थल है। कोलार रोड पर स्थित यह स्थान घने जंगलों में है और 12 महीने लगातार जलधारा बहती रहती है। यहाँ स्थापित हनुमान जी की प्रतिमा आसपास के ग्रामीणों के आकर्षण का केंद्र है और साल में



एक बार यहाँ मेला भी लगता है। भोपाल से इसकी दूरी लगभग 30 किलोमीटर है। हाल के वर्षों में, इसकी प्रसिद्धि बढ़ी है और यह पिकनिक स्पॉट में बदल रहा है।

यहाँ आस-पास के जंगल में स्थित गुफाओं में कई और प्राचीन मूर्तियाँ हैं, जहाँ सैलानी पूजा-अर्चना करते हैं। भोपाल, सीहोर और रायसेन से लोग यहाँ आते हैं। सैलानियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, इसे पुरातत्व विभाग में शामिल करने और व्यवस्था सुधारने की माँग उठ रही है। बारिश के मौसम में यहाँ का वातावरण हरा-भरा हो जाता है क्योंकि ये स्थान बेतवा नदी के उद्गम से मात्र 12 किलोमीटर जंगल में है।

संक्षेप में, रातापानी टाइगर रिजर्व और इसके आसपास के क्षेत्र – महादेव जीरी और केरी महादेव – प्रकृति प्रेमियों और ऐतिहासिक स्थलों के शौकीनों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करते हैं। यह यात्रा हमें प्रकृति की शक्ति और दिव्यता से रूबरू कराती है और हमारे जीवन में एक अमूल्य स्मृति जोड़ती है। लेकिन सुरक्षा का ध्यान रखना और स्थानीय नियमों का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ मैं आपको बता दूँ कि यदि आप यहाँ परिवार के साथ आ रहे हैं तो आपको थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि यहाँ आपका सामना जंगली जानवरों से हो सकता है और यहाँ कोई दुकान नहीं है इसलिए खाने-पीने का सामान घर से लेकर निकले और मोबाइल नेटवर्क भी यहाँ नहीं आता है, इसलिए यहाँ का आनंद लेने के लिए थोड़ी तैयारी और सावधानी की आवश्यकता अपेक्षित है।

Can you please check
who the BENAMI for
my account is?

Benami?



Shreyas Contest 2024
1st Prize
Cartoon

Sankernath S

CSA
Kunnumpuram



Yes sir, to whom my
funds will be transferred
after my death...

Oh Sir! that is
Nominee!



Shreyas Contest 2024
2nd Prize
Cartoon

Anoop B

Officer
Kairady



I AM WITH
YOU....





Canara Bank's Cricket Team of Chandigarh Circle Office, won the Inter Bank T-20 premier league Cricket tournament by defeating Central Bank of India by 97 runs in the final match held at Tau Devi Lal Stadium on 20.04.2025. Canara Bank scored mammoth total of 205/4. Total eight teams participated in the tournament. The tournament showcased some intense cricketing action, with Canara Bank's team standing out as the most

dominant force throughout the tournament. They cruised through all the league stages and knockout stages without suffering a single defeat and their commanding performance in the final match was a perfect culmination to their flawless campaign. Canara Bank also swept all major individual awards of the tournament.

Sri Sugourav Goswami (82445) Senior Manager, ZI Unit, SAS, Head Office participated & completed the 24 Hours - 100 Kms Ultra Marathon Championship held at Bangalore on 30.03.2025 & 31.03.2025. He completed 565 Laps covering a distance of 226 Kms and secured 3rd place. He has been selected to represent Indian team for the 24 hour IAU World championship to be held at Albi, France during October 2025.

CONGRATS!
24HRS-MALE WINNERS

WEB Sports
NON-STOP ENTERTAINMENT BUSINESS

ENERGY
24Hour Stadium Run
30-31 MARCH 2025 • BENGALURU

VELU P LAPS: 583 DISTANCE: 233.2 1 ST RUNNER UP	GEENO ANTONY LAPS: 597 DISTANCE: 238.8 WINNER	SUGOURAV GOSWAMI LAPS: 565 DISTANCE: 226.0 2 ND RUNNER UP
--	---	--

30&31 MAR2025

SREE KANTEERAVA STADIUM, BENGALURU

MOVE WITH MYSAMMY FAST RELIEF VSH



Smt Ajita Uday Wadadekar (67991) Officer, Murbad Road Branch, Mumbai Circle was the Coach of the Maharashtra Women's team in the IDCA Women's T-10 National Cricket Championship held at Lucknow during 05.04.2025 to 09.04.2025. The Maharashtra team Won the Championship.

Canara Bank's Hockey Team, won the All India Public Sector Hockey Tournament for the year 2024-2025 held at Kolkata.





Embracing Tranquility and Productivity: Yoga Day for the Modern Banker

International Yoga Day, celebrated annually on June 21st, serves as a global reminder of the profound impact this ancient practice can have on our lives. For professionals across all sectors, and particularly for those navigating the demanding and often high-pressure world of banking, Yoga Day is more than just a date on the calendar; it's an invitation to cultivate a sustainable path to well-being, enhanced productivity, and a more balanced life.

Banking, by its very nature, is a profession that demands intense focus, meticulous attention to detail, and the ability to make critical decisions under pressure. Long hours and tight deadlines can lead to significant stress, physical discomfort, and mental fatigue. This is precisely where the timeless wisdom of yoga offers a powerful antidote.

The Banker's Advantage: Unlocking the Benefits of Yoga

Integrating even a short yoga practice into your daily or weekly routine can yield remarkable benefits for bankers, directly addressing many of the unique challenges of the profession:

Stress Reduction & Emotional Regulation: Yoga, through its emphasis on breath work (pranayama) and mindfulness, directly activates the parasympathetic nervous system, helping to calm the "fight or flight" response. This leads to a reduction in cortisol levels, lower blood pressure, and a greater ability to remain composed and make rational decisions even during turbulent market conditions or difficult client interactions.

Enhanced Focus & Concentration: In a profession where a single missed decimal point can have significant repercussions, sustained focus is paramount. Yoga hones concentration through holding poses and directing attention to the breath. This improved mental clarity translates directly into sharper analytical skills, better problem-solving abilities, and fewer errors in complex financial tasks.

Improved Physical Well-being & Posture: Bankers spend a significant portion of their day seated, often hunched over computers. This sedentary lifestyle can lead to chronic back pain, neck stiffness, carpal tunnel syndrome, and poor

circulation. Yoga asanas (postures) are designed to improve spinal flexibility, strengthen core muscles, and open up the chest and shoulders, counteracting the effects of prolonged sitting and promoting better posture. This not only alleviates physical discomfort but also projects an image of confidence and professionalism.

Boosted Energy Levels & Reduced Fatigue: Despite working long hours, bankers need sustained energy. While often counterintuitive, regular yoga practice can actually increase energy levels. By improving circulation, enhancing oxygen intake, and releasing muscular tension, yoga combats fatigue and helps maintain stamina throughout the workday, reducing the reliance on caffeine or other stimulants.

Better Sleep Quality: The constant mental churn associated with banking can often interfere with restful sleep. Yoga's calming effects, particularly when practiced before bed, can significantly improve sleep quality. Deep relaxation techniques help quiet the mind, allowing bankers to wake up feeling refreshed and ready to tackle the day's challenges with renewed vigor.

Cultivating Resilience: Yoga fosters mental and emotional resilience by teaching individuals to remain present and adaptable. This translates to a greater ability to bounce back from setbacks, navigate uncertainty, and maintain a positive outlook even in challenging times.

Making Yoga Part of Your Banking Life

You don't need hours to reap the benefits. Even 15-20 minutes of yoga daily or a few longer sessions weekly can make a significant difference. Many resources are available, from online tutorials and apps to local studios, offering classes tailored for beginners.

This Yoga Day, consider embracing this ancient practice as a strategic investment in your personal and professional capital. By prioritizing your well-being through yoga, you're not just improving your health; you're enhancing your capacity to excel in the demanding world of banking, fostering greater tranquility, productivity, and a more fulfilling career.

A Tale of Two Tailors



In the bustling heart of Bengaluru, amidst the vibrant silks and the rhythmic hum of sewing machines, lived two tailors named Rohan and Vikram. Both were skilled, their needles dancing with precision, but their approaches to their craft differed as starkly as black and white thread.

Rohan believed in impeccable quality and fair dealings. He sourced the finest fabrics, even if they cost a little more, and his stitches were always perfect, a testament to his dedication. He quoted honest prices, explaining the value of his materials and his time. His small shop, though not the flashiest, had a steady stream of loyal customers who appreciated his integrity.

Vikram, on the other hand, was driven by the allure of quick profit. He used cheaper, often inferior fabrics, passing them off as premium to unsuspecting clients. His stitches, though seemingly neat at first glance, often frayed and came undone. He was a master of persuasive talk, charming his way into new customers with low initial quotes, only to add hidden charges later. His shop was grander, located in a more prominent area, and initially, it bustled with new clients drawn by the seemingly attractive prices.

One season, a prestigious textile merchant announced a competition to create the finest garment using their newly launched silk. The prize was a lucrative contract to be their exclusive tailoring partner. Both Rohan and Vikram decided to participate.

Rohan meticulously planned his design, choosing a classic silhouette that would showcase the silk's natural drape and sheen. He spent hours hand-stitching intricate details, ensuring every seam was flawless. His price for the final garment, when presented to the merchant, reflected the quality of the silk and the hours of painstaking work.

Vikram, seeing an opportunity to impress, created a flamboyant design with excessive embellishments, hoping to distract from the less-than-perfect stitching beneath. He quoted a significantly lower price, banking on winning the contract through sheer affordability.

When the merchant examined the garments, he ran his experienced fingers over Rohan's creation, admiring the even stitches and the way the silk flowed. He then looked at Vikram's garment. The embellishments were indeed eye-catching, but upon closer inspection, he noticed the uneven hemline and the loose threads.

In his feedback, the merchant praised Rohan's commitment to quality and his transparent pricing. He acknowledged Vikram's creative flair but emphasized the importance of lasting quality and ethical dealings in building a sustainable partnership. Rohan won the contract. Over time, Vikram's initial success dwindled. Customers, realizing the poor quality of his work and feeling cheated by his hidden charges, gradually drifted away. His grand shop eventually stood with fewer and fewer patrons. Rohan's business, built on trust and quality, continued to flourish, his reputation for ethical workmanship spreading throughout the city.

Moral of the story: In the world of work, just like in tailoring, the allure of quick gains through unethical practices is often short-lived. True and lasting success is woven with the threads of integrity, quality, and fair dealings. Ethics are not just a virtue; they are the strong seams that hold together a reputable and sustainable career.

Personal Responsibility and Professional Ethics



Kanchan Gupta

Assistant General Manager
Learning and Development Centre
Bhopal

INTRODUCTION:

In a bank where daily tasks often blur the lines between efficiency and the risk of overlooking crucial details, making ethical choices often presents a significant dilemma. **Ethics serves as the guiding light in all decisions.**

After fifteen years of hard work, dedication, and a strong commitment to integrity, Jaya became the Branch head of one of the Bank's Very Large Branch at Madras. This was her first experience in a leadership role, and she was eager to make a lasting impact. Despite the moderate staffing of just one second line manager, two officers, and three clerks, her ability to connect with the customers, ensured that the branch operated efficiently.

JAYA AND CUSTOMER SERVICE:

In order to improve business, Ms Jaya organized a special HNI customer meet, designed to strengthen relationships and explore new opportunities with high-net-worth individuals. During the event, she met one of the branch's valued HNI customer Mr. Ramesh and had a conversation. Jaya observed, during their conversations that Mr. Ramesh, a small business owner, had established a decent local clientele. She saw an opportunity to modernize his operations and take his business to the next level. Jaya took time to understand the daily operations of Mr. Ramesh's business and its financial workflows. She knew that his business processed a fair amount of daily transactions and realized that a Point of Sale (POS) machine could be an excellent tool for him. Not only would it streamline payment processing, but it would also help him offer his customers more

payment options, including credit and debit cards. She understood that Mr. Ramesh could be a good source of new business for the branch.

Jaya's polite and persuasive nature, combined with Mr. Ramesh's openness to improving his business operations, led him to agree to the purchase. Jaya ensured smooth installation of POS machine helping Ramesh to handle transactions more effectively.

It was the month of February when Mr. Ramesh returned to the branch with a new request that stemmed from his recent decision to relocate to another state. As part of the move, he needed to surrender the machine associated with his service. Upon arriving at the branch, the customer explained his situation and Ms Jaya assured him that she would take care of everything. True to her commitment to customer satisfaction, Jaya promptly took action. She personally collected the machine from him and assured him that the surrender process would be handled smoothly, with no additional charges applied to his account.

LAPSE IN FOLLOW-UP:

After receiving the machine, Ms. Jaya promptly handed it over to the second line manager Joy, providing clear instructions to ensure that it was returned to the relevant section. She emphasized the importance of processing the surrender efficiently and made it a point to remind him that no further charges should be applied to the customer's account. Joy, acknowledging Jaya's instructions, assured her that he would handle the matter

without delay. He understood the significance of maintaining excellent customer service and was determined to follow through on her directives. Confident in the officer's ability and the commitment, Jaya trusted that the issue would be resolved promptly.

After a week, curious about the status of the machine, the customer approached the Branch Manager. Sensing his concern, Jaya promptly asked Joy for an update. Joy had not yet surrendered the machine, but to protect himself from the mounting pressure, he falsely claimed that he had already initiated the process with the Regional Office and assured the Branch Manager that the surrender would be completed soon. Sensing Jaya's growing frustration, he reiterated that the matter was being handled and confidently stated that the machine would be surrendered to the vendor that very day.

Jaya, though still wary, hoped that Joy's assurances would prove true. She wanted to believe that the officer was genuinely committed to resolving the issue, but the repeated delays had left her feeling uncertain. Still, she decided to give him one more chance, trusting that he would follow through on his promise. Reaffirming her commitment to customer service, Jaya turned to Ramesh and assured him that the process would be completed that very day. Simultaneously, she instructed Joy to follow through on the surrender without fail, making it clear that this was more than just a transaction.

With renewed determination, Joy set to work, understanding the importance of this task. He coordinated with the vendor and the section, ensuring that everything was in place for a seamless surrender. Jaya watched with confidence, knowing that Joy's efforts would not only resolve the issue but also reinforce the bank's commitment to providing exceptional service to its valued clients.

However, In the month of April, Jaya's tenure at the Madras branch eventually came to an end, and she

received a routine transfer to another state. She bid farewell to her team, handed over her responsibilities, and prepared for her new role. Everything seemed to be going well until one day, she received a phone call. The call was from the customer, and he sounded agitated, his voice tinged with exasperation. *"This is Ramesh,"* he began, clearly frustrated. *"I need to talk to you about a serious issue. Despite surrendering my POS machine months ago, my account has still been debited for service charges. When I visited the office to resolve this, the staff had no record of my surrender request. And to make matter worse, the POS machine is missing! And they asked me to call you."*

OWNERSHIP AND ETHICS:

Jaya was stunned. She vividly remembered the day Mr. Ramesh had handed over the machine, and her repeated instructions to the Manager Joy to ensure that it was returned. Now, more than a year had passed since she left the branch, yet the machine remained there. Joy's neglect of the customer had become a persistent frustration for her. Though she felt a surge of anger and disbelief, she chose not to voice a complaint. Instead, she listened to the customer patiently, offered a sincere apology, and reassured him again that she would ensure the wrongly debited amount would be corrected soon and the issue will be resolved.

Determined to uphold Bank's reputation for customer service and ethical conduct, Jaya contacted the Madras branch. What she learned left her in disbelief. The POS machine was still sitting in the former officer's desk drawer. The officer, who had been responsible for processing the surrender, had been transferred without completing the task, and no one at the branch seemed aware of the situation. As a result, the machine had never been returned, and the customer's account had been accruing charges for months.

Jaya was disturbed by the attitude of the XYZ branch

officers. The branch not only refused to take ownership and responsibility for the oversight but also told the customer to speak with the previous branch head. When Jaya enquired, they said they didn't know what to do next. The customer was threatening to go to the Ombudsman if the issue wasn't resolved quickly.

ETHICAL DILEMMA:

Jaya thought that the immediate task facing the bank was to reimburse the charges that had been wrongly debited due to staff negligence and to promptly surrender the machine to prevent further deductions. For reimbursement to occur, the branch needed to proactively engage with the appropriate section according to the established procedure. The section would then investigate the issue, identify the fault, and hold the responsible staff accountable. However, this process would be time-consuming. Ultimately, due to the severity of the loss, all staff involved would face penalties. This decision, while necessary, could create unrest among employees. Despite these measures, the bank would still face **reputational risk**.

She found herself at a crossroads, facing an ethical dilemma-whether she should intervene personally to resolve the customer's issue or leave it to the organization's formal processes. It would have been easy to deflect responsibility to the branch or blame the previous officer; she knew that such actions would not solve the problem. The promise she had made to the customer echoed in her mind, and she empathized deeply with his growing frustration. She also understood that the longer the issue remained unresolved, the higher the penalties would be, and if the customer lodged a formal complaint, the organization's reputation would be at risk.

On one hand, stepping in could ensure a quick resolution, restore the customer's trust, and prevent further damage to the bank's reputation. On the other hand, bypassing formal procedures

might undermine accountability within the team and set a precedent for handling such cases outside of established protocols. Weighing these options, she wondered if personal intervention would lead to a better outcome or trusting the process was the right path, despite its potential for delays and complications.

ETHICAL DECISION:

As she pondered the issue, she realized that if this matter wasn't resolved swiftly, it would result in a lose-lose situation for both the customer and the Bank. While pondering over the issue, her eyes fell on a quote by Gandhiji: *"A customer is the most important visitor on our premises. He is not dependent on us. We are dependent on him. We are not doing him a favor by serving him. He is doing us a favor by giving us an opportunity to do so."* This perspective reinforced her determination to act decisively and prioritize the customer's needs.

She contacted the Madras branch again and instructed them to immediately surrender the POS machine to the relevant department. She ensured that all necessary procedures were followed this time and confirmed that no further charges would be applied to Mr. Ramesh's account.

LESSON LEARNT:

Jaya's journey as a branch head in Madras had been filled with challenges. This experience with Mr. Ramesh's POS machine reminded her of the critical importance of follow-up and execution in the banking sector. It also reinforced her belief in the need for strong leadership, not just in making decisions but in ensuring those decisions are carried through. Through her actions, Jaya proved that **true leadership is about more than just managing a team-it is about setting an example, taking ownership, responsibility and always acting in the best interest of the customer.**

Mango Saffron Kheer

By HML team



With summer here, Mango, the king of fruits takes the spotlight. The pulpy, juicy, sweet and nutritious tropical fruit is rich in vitamins A, C, Potassium, and Fibre making it a healthy choice to feast on. Mango's creamy taste can turn any simple dish into something lavish with its refreshing touch.

Add a burst of joyous sunshine with this yummy and delicious dessert --thanks to the "King of Fruits".

Ingredients (Serves 4–5):

- ¼ cup Seeraga Samba/ Jeera Rice
- 1 litre full cream milk
- ½ cup condensed milk
- ½ cup pulp of ripe Alphonso or Badami mango (pureed)
- 2–3 tbsp sugar (adjust to taste)
- A pinch of saffron strands, soaked in 2 tbsp warm milk
- ½ tsp cardamom powder (optional)
- 6–8 cashew nuts
- 6–8 almond slivers
- A few raisins
- 1 tbsp ghee

Method:

1. Wash the Seeraga Samba/jeera rice and soak it in water for 30 minutes. Drain and lightly crush the grains with your fingers.
2. In a thick-bottomed pan, bring milk to a boil. Add the rice and cook on low heat, stirring occasionally, until the rice is soft and the milk is reduced (around 35–40 minutes).
3. Add sugar, condensed milk, cardamom powder, and saffron milk. Simmer for another 5–7 minutes.
4. In a small pan, heat ghee and sauté the cashews, almonds, and raisins until golden. Add them to the kheer, saving a few for garnish.
5. Allow the kheer cool completely, then gently fold in the mango puree (never cook after adding mango to preserve its freshness and color).
6. Refrigerate for an hour and serve chilled. Garnish with saffron strands, chopped nuts, and a swirl of mango puree.

**Shreyas, in homage to Canbank's departed souls,
 pray that they rest in bliss, in eternal peace.**

**Death, said Milton, is the golden key
 that opens the palace of eternity.**

Name	Staff No	Designation	Branch	Expired on
GONE VEERESH	93176	H K CUM OFF ASST	KESHAMPET	15-01-2025
SUNIL KUMAR	92940	H K CUM OFF ASST	PONNANI	06-02-2025
MADAN SINGH	62165	C S A	DEHRADUN CLEMENT TOWN	07-02-2025
SOMESH CHANDRA	109185	MANAGER	NAGRI	18-02-2025
RATHEESH T	692018	C S A	TRIVANDRUM EDAGRAMOM	19-02-2025
NARESH KUMAR	519133	OFFICE ASSISTANT	MEERUT PARTAPUR	20-02-2025
SUNIL DHAR	692409	H K CUM OFF ASST	AMTOLA	21-02-2025
RAJVEER	53928	SR OFF ASSISTANT	DELHI MALAVIYA NAGAR	22-02-2025
NITYANAND SINHA	67597	SENIOR MANAGER	MUMBAI SEWREE (WEST) CUR CHEST	25-02-2025
BANALA ANJALI	682952	C S A	TIRUPATHI AKKARAMPALLI	27-02-2025
OM PRAKASH	549868	OFFICE ASSISTANT	DOIWALA	02-03-2025
SAHEB RAM MURMU	499185	C S A	SERAIDHELA	13-03-2025
ROSHAN LAL	67503	C S A	JALANDHAR DR.B.R.AMBEDKAR NIT	18-03-2025
SUNNY	606912	OFFICE ASSISTANT	MAUKHAS	18-03-2025
SWATI RAHUL KADAM	89693	MANAGER	KIDGAON	20-03-2025
ABHILASH SUDHAKAR MOON	91407	MANAGER	CHIKLA	20-03-2025
A GANESHAN	74867	H K CUM OFF ASST	BENGALURU SANJAYANAGAR SSB	24-03-2025
NAGIN RAMANBHAI SOLANKI	65590	SR OFF ASSISTANT	VADODARA ALKAPURI	26-03-2025
REKHA SHYAM KUMAR	88610	MANAGER	KEMMANNU	08-04-2025
PRADEEP A KAMALAPURE	692720	OFFICE ASSISTANT	BIDAR	09-04-2025
SHEO NATH ROUT	62206	SR OFF ASSISTANT	PATNA REGIONAL OFFICE	28-04-2025
RAMAWADHESH RAI	54851	H K CUM OFF ASST	JAMUAON	28-04-2025

Atomic Habits

— James Clear

James Clear's "Atomic Habits" has become a cornerstone in the realm of self-improvement, offering a practical and actionable framework for building good habits and breaking bad ones. Rather than focusing on monumental changes, Clear champions the power of small, incremental improvements - the "atomic habits" - that compound over time to yield remarkable results.

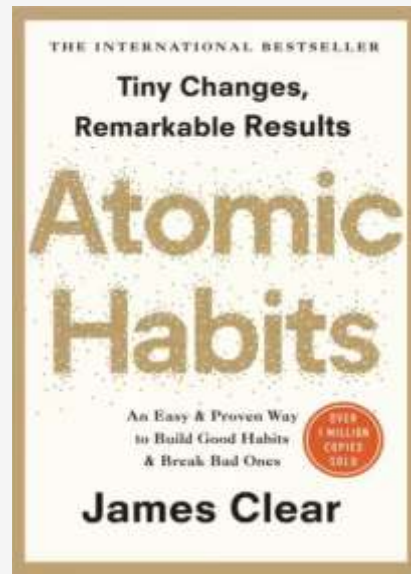
The central ideology of "Atomic Habits" revolves around the idea that significant change doesn't require radical overhauls. Instead, consistent, small improvements of just 1% each day can lead to exponential growth in the long run. Clear illustrates this with compelling examples and emphasizes that habits are the compound interest of self-improvement. He argues that focusing on the system - the processes and routines - is far more effective than fixating solely on goals.

The author structures his methodology around four fundamental "Laws of Behavior Change," providing a clear and easy-to-understand framework for habit formation. **Make it Obvious (The Cue), Make it Attractive (The Craving), Make it Easy (The Response) and Make it Satisfying (The Reward).**

A significant contribution of "Atomic Habits" is its emphasis on identity. Clear argues that true, long-lasting behavioural change stems from shifting your identity - the beliefs you hold about yourself. Instead of focusing on what you want to achieve, focus on who you want to become. Habits, then, become a way of embodying that desired identity. Every action you take is a vote for the type of person you wish to be. Throughout the book, Clear provides numerous practical strategies and real-world examples to illustrate his principles.

"Atomic Habits" has resonated with millions of readers worldwide due to its practical, evidence-based approach to habit formation. It empowers individuals to take control of their behavior by focusing on small, manageable changes that accumulate into significant improvements over time. The emphasis on identity makes the process more meaningful and sustainable, fostering a mindset of continuous growth and self-improvement.

The book is a highly recommended read for anyone looking to build better habits, break bad ones, and ultimately transform their life. James Clear offers a clear, concise, and actionable roadmap grounded in scientific principles, making the often-daunting task of habit change feel accessible and empowering. Its focus on small, consistent actions and the importance of identity makes it a valuable resource for long-term personal growth and success.



MRP: ₹497 | Pages: 320
Language: English | Genre: Self-Help

By **Priyadarshini R**
Sr Manager, HM&L Section.





दिनांक 09.05.2025 को कार्यपालक निदेशक, श्री भवेंद्र कुमार ने हमारे म्यूचुअल फंड पार्टनर, केनरा रोबेको एएमसी का एनएफओ लॉन्च किया। श्रीमती अनुराधा, मुख्य महाप्रबंधक, खुदरा साख और सामान्य प्रशासन विभाग, श्री चंद्र शेखर, मुख्य महाप्रबंधक सामरिक, संसाधन और सरकारी सेवा विभाग और अन्य कार्यपालकगण तस्वीर में दिखाई दे रहे हैं।

ED, Sri. Bhavendra Kumar launched the NFO of our Mutual Fund partner, Canara Robeco AMC on 09.05.2025. Smt. Anuradha, CGM, Retail Credit and General Administration Wing, Sri. Chandra Sekhara, CGM Strategy, Resources & Government Services Wing and other Executives are seen in the picture.



दिनांक 21.05.2025 को श्री एस.के. मजुमदार, कार्यपालक निदेशक ने केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान (सी.आई.बी.एम.), मणिपाल का दौरा किया। चित्र में सीआईबीएम के महाप्रबंधक एवं मुख्य शिक्षण अधिकारी, श्री श्रीनाथ एच. जोशी तथा सीआईबीएम के अन्य कार्यपालक एवं कर्मचारीगण दिखाई दे रहे हैं।

ED, Sri SK Mujumdar visited Canara Institute of Bank Management (CIBM), Manipal on 12.05.2025. Sri. Shreenath H Joshi, General Manager and Chief Learning Officer, CIBM and other Executives and staff of CIBM are seen in the picture.



केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking



Together We Can

Empower your
institution with

Canara
TRUEDGE

Savings & Current Account



The Ultimate Banking Solution for Institutions



**GROW WITH TRUST,
LEAD WITH EDGE**

TARGET AUDIENCE



Schools



Hospitals



Religious
Institutions



Societies



Clubs & NGOs

Features

- Zero Balance Account
- Unlimited Free Transactions (NEFT, RTGS, IMPS, UPI)
- Cash Handling Charge Wavier (up to ₹1 Crore/month)
- POS | QR | Soundbox Solutions
- ERP Solutions for Institutions
- Free Coursera Courses for Students
- Relationship Manager for Premium Support
- Any Branch Banking Facility

Open
Your
TruEDGE
Account
Today!

Visit your nearest Canara Bank branch or log on to Website

T&C apply
रजिस्ट्रेशन सं./Registration No. 36699/83



1 Bank
Number

1800 1030



www.canarabank.com